य एषु सुप्तेषु जागर्ति | वर्ष 19 | अंक 312 | पृष्ठ 12 | मूल्य 5.00 | **नई दिल्ली, बुधवार, 05 जून, 2024** | ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी, संवत् 2081

दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल से प्रकाशित

राजस्थान पत्रिका

धन्यवाद! भारत

आप आइए...

नई दिल्ली. लोकसभा चुनाव के परिणाम घोषित होने के बाद मंगलवार को भाजपा मुख्यालय पर लोगों का अभिवादन करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। **वहीं प्रेस कॉन्फ्रेंस** के दौरान राहुल गांधी को कुर्सी पर बैठने का इशारा करते कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और साथ में मौजूद सोनिया गांधी।

जनता का अद्भुत जनादेश : नीतीश-चंद्रबाबू के सहारे ही बन पाएगी नई एनडीए सरकार

भाजपा को जीत का 'हार', कांग्रेस को 'हार में जीत'

एनडीए	भाजपा	टीडीपी	जेडीयू	शिवसेना (शिंदे)	अन्य
292	240 -63	16 +13	12 -4	07 +07	17 -16

इंडिया	कांग्रेस	टीएमसी	सपा	डीएमके	अन्य	अन्य
233	99 +47	29 +6	37 +32	22 -02	46 +46	18

दोनों गठबंधनों के घटक दलों पर एक-दूसरे की निगाह

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. अठारहवीं लोकसभा के लिए हुए आम चुनाव में जनता ने अपना अद्भुत फैसला सुनाया है। भाजपा जीत कर भी हारने जैसी अवस्था में है क्योंकि यह बहुमत से दूर है और इसका ग्राफ पिछले चुनाव से गिरा है। दूसरी तरफ बहुमत से दूर रहकर भी कांग्रेस को जीत जैसी खुशी मिली है। जनता ने विपक्ष के रूप में कांग्रेस को मजबूती दी है। भाजपा के नेतृत्व में एनडीए को बहुमत का जादुई अंक तो हासिल हो गया है लेकिन, 400 पार सीट का नारा जनता को रास नहीं आया। किसी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं देने के जनादेश से साफ है कि वर्ष 2014 के चुनाव के बाद देश में एक बार फिर गठबंधन सरकार की राजनीति वापस लौट रही है जिसमें एनडीए के घटक दलों तेलुगू देशम पार्टी, जनता दल यू और शिव सेना जैसे क्षेत्रीय दल महत्त्वपूर्ण भूमिका में होंगे। मतगणना के रुझानों से कहा जा सकता है कि अब नई सरकार में चंद्रबाबू नायडु और नीतीश कुमार निर्णायक भूमिका निभाएंगे।

जनता के फैसले ने कांग्रेस को राख से फिर खड़ा होने का मौका भी दे दिया हैं। पिछली बार से लगभग दोगुनी सीटें जीतने से उत्साहित कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि भाजपा नैतिक रूप से हार गई है और जनादेश मोदी के खिलाफ है। शेष@पेज08

पुराने गढ़ों में भाजपा को तगड़ा झटका

- भाजपा को उत्तर प्रदेश , राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे अपने पुराने गढ़ों में तगड़ा झटका लगा है। **पार्टी ओडिशा में ऐतिहासिक सफलता हासिल** करते हुए लोकसभा की अधिकांश सीटें जीत गई।
- भाजपा ने केरल में पहली बार एक सीट के साथ अपना खाता खोला है और **नवगठित तेलंगाना में वह सत्तारूढ़ कांग्रेस को कांटे की टक्कर** देते हुए बराबर की सीट जीतती नजर आ रही है।
- पिछले चुनाव में यूपी की **80 में से 62 सीट जीतने वाली भाजपा इस बार 33 सीट पर सिमटती नजर आई।** कांग्रेस राज्य में परंपरागत सीटों रायबरेली और अमेठी सहित छह सीटें जीती।
- **गुजरात, मध्य प्रदेश , छत्तीसगढ, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और उत्तराखंड भाजपा के भरोसे के राज्य बने हुए हैं।** इनमें अधिकांश सीटों पर कब्जा बरकरार।
- केरल **में कांग्रेसनीत यूडीएफ ने सत्तारूढ़ एलडीएफ को फिर हराया।**
- **कांग्रेस नेता राहुल गांधी वायनाड सीट पर अपना कब्जा बरकरार रखने में कामयाब** रहे।

शेष@पेज08

पीएम ने कार्यकर्ताओं में भरा जोश

विरोधी मिलकर भी उतनी सीट नहीं जीत पाए, जितनी अकेली भाजपा : मोदी

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

नई दिल्ली. एनडीए के लगातार तीसरी बार बहुमत से सत्ता में आने के बाद भाजपा मुख्यालय पर देर शाम जश्न मना। प्रधानमंत्री मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और बीजेपी अध्यक्ष नड्डा भी कार्यकर्ताओं के साथ जश्न में शामिल हुए। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने संबोधन कर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमारे विरोधी मिलकर भी इतनी सीट नहीं जीत पाए जितना अकेले बीजेपी जीती हैं, तीसरे कार्यकाल में हमारा देश बड़े फैसलों का एक नया अध्याय लिखेगा, और ये मोदी की गारंटी है। तीसरे कार्यकाल में एनडीए सरकार का बहुत ज्यादा जोर हर तरह के भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंकने का होगा।

मोदी ने कहा, 'अगर आप 10 घंटे काम करेंगे तो मोदी 18 घंटे काम करेगा, आप 2 कदम चलेंगे तो मोदी 4 कदम चलेगा। हम भारतीय मिलकर चलेंगे और देश को आगे बढ़ाएंगे। तीसरे कार्यकाल में देश बड़े फैसलों का एक नया अध्याय लिखेगा और यह मोदी की गारंटी है।' मोदी ने कहा कि भाजपा ओडिशा में सरकार बनाने जा रही हैं। शेष@पेज08

भाजपा मुख्यालय पर जीत का जश्न मनाते भाजपा कार्यकर्ता।

सत्ता से दूर, फिर भी कांग्रेस ने मनाया जश्न

नई दिल्ली. लोकसभा चुनाव में महज 99 सीट जीत के करीब होने के बावजूद कांग्रेस में जश्न का माहौल है। कांग्रेस मुख्यालय में दिनभर जश्न मनाया गया। लोकसभा चुनाव के नतीजों के लिए कांग्रेस मुख्यालय में मंगलवार सुबह से ही कार्यकर्ताओं का जुटना शुरू हो गया। जैसे-जैसे रूझान आए, वैसे-वैसे नेताओं का मुख्यालय पहुंचना शुरू हो गया। कहीं से मतगणना के धीमी होने की शिकायत आई तो तत्काल चुनाव आयोग से संपर्क किया। मुख्यालय परिसर में ढोल की थापों पर कार्यकर्ता झूमते रहे। लंबे समय बाद कांग्रेस मुख्यालय में ऐसी भीड़ दिखी।

इंदौर में बना दोहरा रेकॉर्ड

सबसे बड़ी जीत, नोटा को हराया

इंदौर @ पत्रिका. लोकसभा चुनाव में इंदौर ने दोहरा रेकॉर्ड बनाया। भाजपा प्रत्याशी शंकर लालवानी ने 12.27 लाख वोट हासिल कर 11,75,092 वोट से जीत हासिल की। लोकसभा चुनाव में जीत का यह सबसे बड़ा अंतर है। दिलचस्प यह है कि लालवानी के बाद सबसे ज्यादा 218674 वोट 'नोटा' को मिले। नोटा को इतने वोट मिलने का भी यह रेकॉर्ड है। कांग्रेस प्रत्याशी अक्षय कांति बम के नाम वापस लेकर भाजपा में शामिल होने से कांग्रेस ने नोटा को वोट का अभियान चलाया था।

बड़े चेहरे हारे

- **स्मृति ईरानी,** अमेठी, भाजपा (167196 वोट से)
- **मेनका गांधी,** सुल्तानपुर, भाजपा (43174 वोट से)
- **नवनीत राणा,** अमरावती, भाजपा (19731 वोट से)
- **अजय टेनी,** लखीमपुर, भाजपा (19731 वोट से)
- **माधवी लता,** हैदराबाद, भाजपा (19731 वोट से)
- **कन्हैया कुमार,** नॉर्थ ईस्ट दिल्ली-कांग्रेस (19731 वोट से)

बड़े चेहरे जीते

- **कंगना रनौत,** मंडी भाजपा (74755 वोट से)
- **नितिन गडकरी,** नागपुर-भाजपा (136868 वोट से)
- **अखिलेश यादव,** कन्नौज-सपा (170076 वोट से)
- **किशोरी लाल,** अमेठी-कांग्रेस (167196 वोट से)
- **शशि थरूर,** तिरुवनंतपुरम -कांग्रेस (16077 वोट से)

तैयारी : चिराग ने बिना शर्त दिया समर्थन

भाजपा ने किया सरकार बनाने पर मंथन, सहयोगियों को बुलावा

नई दिल्ली. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, बीजेपी के शीर्ष नेताओं गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की देर रात हुई बैठक में सरकार गठन के फॉर्मूले पर मंथन हुआ। सूत्रों के मुताबिक एनडीए सहयोगियों को फोन कर दिल्ली बुलाया गया। बिहार में एनडीए सहयोगी जीतन राम मांझी ने पटना से दिल्ली आने पुष्टि की। नतीजों के बाद एलजेपी मुखिया चिराग पासवान ने मोदी सरकार में बिना किसी शर्त के अपना समर्थन जारी रखने की घोषणा की हैं।

मोदी चुने जाएंगे नेता

एनडीए घटक दलों की बुधवार को बैठक में नरेंद्र मोदी को नेता चुना जाएगा। सभी दल मोदी को समर्थन-पत्र देंगे। भाजपा संसदीय दल की बैठक में भी उनके नाम पर मुहर लगेगी। बीजेपी का अकेले बहुमत न आने से नीतीश कुमार, चंद्र बाबू नायडू, चिराग पासवान, एकनाथ शिंदे, जयंत चौधरी आदि सहयोगी दलों के नेताओं की प्रेशर पॉलिटिक्स से इंकार नहीं किया जा सकता। एनडीए के सहयोगी रेल, कृषि सहित कुछ बड़े मंत्रालय हासिल करने के लिए दबाव बढ़ा सकते हैं। हालांकि बीजेपी टॉप चार गृह मंत्रालय, रक्षा और विदेश और वित्त मंत्रालय अपने पास ही रखेगी।

इंडिया गठबंधन

कांग्रेस ने किया आंध्र प्रदेश को स्पेशल स्टेटस देने का वादा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. नतीजों के बीच ही कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने संकेत दिए हैं कि टीडीपी को साथ लेने में इंडिया को कोई हर्ज नहीं है। इसके लिए आंध्र प्रदेश को स्पेशल स्टेटस देने का वादा भी कर दिया है। सूत्रों ने बताया कि पर्दे के पीछे से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से बातचीत के रास्ते खोले जा रहे हैं। इसमें राजस्थान के एक नेता को आगे किया गया हैं। वहीं टीडीपी प्रमुख चंद्र बाबू नायडू से बातचीत के लिए कर्नाटक व केरल के एक-एक नेता को जिम्मेदारी दी जा रही है।

टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू ने 2018 में आंध्र को विशेष दर्जा देने की मांग करते हुए एनडीए से करीब बीस साल पुराना रिश्ता तोड़ लिया था। शेष@पेज08

बदलाव : 24 साल बाद नवीन का किला ढहा

दो राज्यों में नई सरकार...

ओडिशा में भाजपा, आंध्र में एनडीए

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

भुवनेश्वर/हैदराबाद. ओडिशा और आंध्र प्रदेश में नई सरकार बनने जा रही हैं। ओडिशा में चुनाव परिणामों के मुताबिक 24 साल बाद सीएम नवीन पटनायक के हाथ से सत्ता जाती दिखाई दे रहा हैं। पटनायक कांटाबांजी सीट से भाजपा के उम्मीदवार लक्ष्मण बाग से चुनाव हार गए हैं। वहीं दूसरी सीट हिंजिली से जीत मिली हैं। विधानसभा की 147 सीटों में भाजपा 78 सीट जीतने में कामयाब रही। बीजद को मात्र 51 सीट मिली। कांग्रेस को म14 और अन्य को 4 सीट से संतोष करना पड़ा। ओडिशा में पहली बार भाजपा सरकार बनाने जा रही है। नवीन पटनायक 2000 से मुख्यमंत्री हैं।

आंध्र प्रदेश में भी बड़ा उलटफेर हुआ हैं। प्रदेश में 175 सीटों वाली विधानसभा में एनडीए (तेलुगुदेशम पार्टी, भाजपा और जनसेना पार्टी) 164 सीटों के साथ सरकार बनाने जा रहा है। चंद्रबाबू नायडू की तेलुगुदेशम पार्टी को 135 सीटों पर जीत मिली हैं। सत्तारूढ़ जगन मोहन रेड्डी की वाईएसआरसीपी पार्टी मात्र 11 सीटों पर सिमट गई। नायडू नौ जून को नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ले सकते हैं।

किसको कितनी सीटें

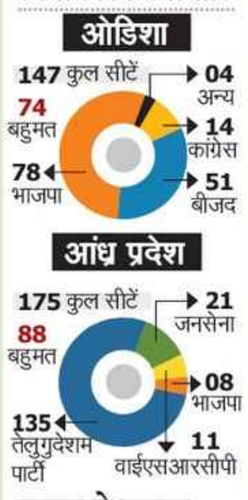

नायडू ने कसम खाई थी, सीएम बनकर ही लौटूंगा

चंद्रबाबू नायडू ने 19 नवंबर, 2021 को मीडियाकर्मियों के सामने रोते हुए कसम खाई थी कि वह सीएम बनकर ही विधानसभा में लौटेंगे। उन्होंने कहा था, मैं विधानसभा में अपनी पत्नी पर की गई टिप्पणियों से आहत हूं। मैंने ढाई साल अपमान सहे, लेकिन सत्तारूढ़ पार्टी ने सारी हदें पार कर दीं।

देश पर भाजपा का सियासी रंग

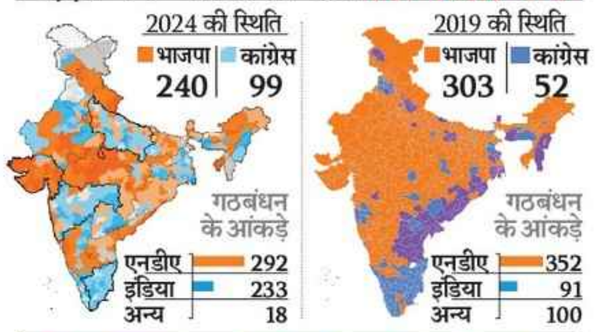

नतीजों का विश्लेषण

गलत एग्जिट पोल...निवेशकों के ₹31 लाख करोड़ डूबे @बिजनेस

7 विशेष पेज अंदर पढ़ें

शिवराज जीते, 6 पूर्व सीएम हारे

नई दिल्ली @ पत्रिका. चुनाव में देश के 18 पूर्व मुख्यमंत्रियों ने भाग्य आजमाया। इनमें से 12 ने जीत हासिल की वहीं 6 को हार का मुंह देखना पड़ा। मध्यप्रदेश के पूर्व सीएम शिवराजसिंह ने विदिशा सीट पर 8.21 लाख से ज्यादा वोट से बड़ी जीत हासिल की।

ये पूर्व मुख्यमंत्री जीते... अखिलेश यादव, शिवराज सिंह चौहान , मनोहरलाल खट्टर, जगदीश शेट्टार, बसवराज बोम्मई, सर्बानंद सोनोवाल, चरणजीतसिंह चन्नी, बिप्लब देव, एचडी कुमारस्वामी, नारायण राणे, त्रिवेंद्रसिंह रावत जीतनराम मांझी।

इनको मिली पराजय

दिग्विजय सिंह, उमर अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती, भूपेश बघेल, नाबाम तुकी, अर्जुन मुंडा।

देवगौड़ा का पोता हारा, बेटा और दामाद जीते

नई दिल्ली @ पत्रिका. लोकसभा चुनाव में अनेक नेताओं के बेटे-बेटी या रिश्तेदार का मिश्रित भाग्य रहा। कर्नाटक में पूर्व पीएम एचडी देवगौड़ा के बेटे, पोते व दामाद मैदान में उतरे लेकिन पोते को हार का सामना करना पड़ा। बेटा पूर्व सीएम एचडी कुमारस्वामी मंड्या से व दामाद डा. सीएम मंजूनाथ बेंगलूरु ग्रामीण से चुनाव जीत गए। शेष@पेज08

जनादेश | दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के सबसे बड़े चुनाव में जनता ने फिर चौंकाया

गठबंधन का दौर लौटा, क्षेत्रीय दल फिर उभरे....परिणाम ने सियासी दलों को सिखाए 11 सबक

1 *घटक दलों पर निर्भरता बढ़ेगी...* मतगणना के रुझानों में भाजपा बहुमत के जादुई आंकड़े से दूर रह गई। ऐसे में एनडीए की सरकार बनेगी तो भाजपा को अपने सहयोगियों पर निर्भर रहना होगा। पिछली बार भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिला था।

2 *भाजपा के घटे, कांग्रेस के वोट बढ़े...* भाजपा के वोट शेयर पिछले चुनाव के मुकाबले कम हुआ है। 2019 में इसे 37.36% वोट मिले थे, इस बार यह कम होकर 36.56 हो गया है। यानी 0.80% कम। कांग्रेस के वोट शेयर 19.49% से बढ़कर 21.19% हो गया।

3 *क्षेत्रीय दलों का फिर उभार...* यह चुनाव क्षेत्रीय दलों के फिर से उभार के लिए भी जाना जाएगा। बिहार में जेडीयू, झारखंड में जेएमएम, महाराष्ट्र में एनसीपी और शिवसेना और यूपी में सपा को जनता का भरोसा मिला है।

4 *हिंदी पट्टी में भाजपा को झटका...* इस बार हिंदी पट्टी के राज्यों में भाजपा को नुकसान हुआ। बिहार व झारखंड में भी भाजपा को झटका लगा है। हालांकि उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और हिमाचल प्रदेश में भाजपा ने अपना प्रदर्शन बेहतर किया है।

5 *भारत नहीं होगा कांग्रेस मुक्त...* देश को कांग्रेस मुक्त करने के सत्तापक्ष का लक्ष्य फिलहाल पूरा होता नहीं दिख रहा है। कांग्रेस ने इस बार अच्छा प्रदर्शन किया है। 2019 की 52 सीट के मुकाबले इस बार कांग्रेस 99 सीट पर आगे चल रही है। कांग्रेस ने यह उपलब्धि तब हासिल की है जब गठबंधन दलों के कारण कम सीटों पर चुनाव लड़ा।

6 *राममंदिर का कोई खास असर नहीं...* चुनाव परिणामों में अयोध्या में ऐतिहासिक राममंदिर बनाने के वादे को पूरा करने का सीधे तौर फायदा नहीं दिख रहा है। फैजाबाद सीट पर भाजपा चुनाव हार गई है, जिसके अंदर अयोध्या आती है। यहां सपा प्रत्याशी ने जीत हासिल की।

7 *राहुल को यात्राओं का मिला फायदा...* देश की जड़ों से जुड़ने की कोशिश के तहत कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा व न्याय यात्रा की। राहुल को इन यात्राओं का फायदा मिला। जिन राज्यों में राहुल की यात्राएं हुई है, वहां कांग्रेस को फायदा हुआ।

8 *बसपा ने सब कुछ गंवाया...* यूपी में मायावती की बसपा का खाता भी खुलता नहीं दिख रहा है। पिछले चुनाव बसपा को 10 सीटें मिली थीं और इस बार वोट प्रतिशत 19.43 फीसदी से घटकर इस बार करीब 9.37 फीसदी रह गया है।

9 *कांग्रेस को मुस्लिम वोटों का लाभ नहीं...* 2019 में 103 मुस्लिम बहुल सीटों में भाजपा ने 45 जीती थी। तब कांग्रेस को 11 और अन्य को 45 सीट मिली थी। इस बार इन सीटों में 34 पर भाजपा, 12 पर कांग्रेस और 55 सीट पर अन्य आगे हैं।

10 *मुक्त की रेवड़ियां हमेशा काम नहीं आतीं...* लोकलुभावन घोषणाएं हमेशा काम नहीं आते। मुफ्त में चीजें देकर केसीआर जनता को लुभाने में कामयाब नहीं हुए। आंध्र प्रदेश में भी जगनमोहन रेड्डी को निराशा ही हाथ लगी।

11 *विधानसभा चुनावों पर डालेंगे असर...* आम चुनाव के नतीजों का आने वाले विधानसभा चुनावों पर भी असर देखने को मिलेगा। महाराष्ट्र, झारखंड और हरियाणा में चुनाव होना है। जम्मू-कश्मीर भी कतार में है। हरियाणा और झारखंड में भाजपा पहले से ही परेशानी में चल रही है।

8 राज्य, 38 संस्करण | अजमेर ■ अलवर ■ अहमदाबाद ■ इंदौर ■ उज्जैन ■ उदयपुर ■ कोटा ■ कोलकाता ■ खंडवा ■ ग्वालियर ■ चेन्नई ■ छिंदवाड़ा ■ जगदलपुर ■ जबलपुर ■ जयपुर ■ जोधपुर ■ झुंझुनूं ■ दिल्ली ■ नागौर ■ नर्मदापुरम ■ पाली ■ बाड़मेर ■ बांसवाड़ा ■ बिलासपुर ■ बीकानेर ■ बेंगलूरु ■ भरतपुर ■ भिलाई ■ भीलवाड़ा ■ भोपाल ■ रतलाम ■ रायपुर ■ सतना ■ सागर ■ सीकर ■ सूरत ■ शहडोल ■ श्रीगंगानगर

राजस्थान पत्रिका

नई दिल्ली, बुधवार, 05 जून, 2024

अच्छे काम जारी रहेंगे

लोगों ने लगातार तीसरी बार एनडीए पर अपना भरोसा जताया है। यह भारत के इतिहास में एक अभूतपूर्व पल है। मैं जनता जनार्दन को विश्वास दिलाता हूं कि हम लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पिछले दशक में किए गए अच्छे कामों को जारी रखेंगे।

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

देश का संविधान बचाया

संविधान बचाने का काम देश के सबसे कमजोर वर्ग ने किया है। मजदूरों, किसानों, दलितों, आदिवासियों और पिछड़ों ने संविधान बचाया है। कांग्रेस ने देश को एक नया गरीब-हितैषी दृष्टिकोण दिया। 'इंडिया' जहां भी लड़ा, एक होकर लड़ा।

राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष

4 बड़े राज्यों में एनडीए: 36 यूपी-80 | 18 महाराष्ट्र-48 | 12 बंगाल-42 | 30 बिहार-40

(नतीजों और रुझानों के मुताबिक 10:00 बजे तक)

वाराणसी सीट से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी **1,52,513** वोट से जीते

पत्रिका लोकतंत्र का उत्सव — जनादेश का विश्लेषण

decoding mandate

राहुल गांधी रायबरेली से 3.90 लाख और वायनाड से 3.64 लाख मतों से जीते

4 बड़े राज्यों में 'इंडिया': 43 यूपी-80 | 29 महाराष्ट्र-48 | 30 बंगाल-42 | 09 बिहार-40

(नतीजों और रुझानों के मुताबिक 10:00 बजे तक)

देश के दो सबसे बड़े राज्यों में पूरी तरह खिल नहीं पाया कमल...

ठाकरे का तीर, अखिलेश की साइकिल चली

देश के दो सबसे बड़े राज्यों में क्षेत्रीय दलों ने इसबार कमाल दिखाया। उत्तरप्रदेश में जहां दो लड़कों की जोड़ी ने भाजपा के मंसूबों पर पानी फेर दिया, वहीं महाराष्ट्र में असली-नकली की लड़ाई में उद्धव ठाकरे और शरद पवार पास हो गए। दोनों राज्यों में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। इन दोनों जगह भाजपा के अनेक दिग्गजों को हार का सामना करना पड़ा। यूपी में जहां भाजपा आधी संख्या पर पहुंच गई। वहीं महाराष्ट्र में भी उसे बड़े नुकसान का सामना करना पड़ा। यूपी में अखिलेश की साइकिल चली तो महाराष्ट्र में उद्धव का तीर...

महाराष्ट्र

'तोड़फोड़' के खिलाफ महाराष्ट्र का फैसला

- भाजपा ने अपने को मजबूत करने के लिए जितने भी दांव चले सारे उलटे पड़ गए

दौलत सिंह चौहान
patrika.com

महाराष्ट्र के चुनाव परिणाम ने यह ऐलान कर दिया है कि मराठी मानुष को अस्मिता के साथ कोई खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। फिर चाहे वह दिल्ली का दरबार ही क्यों न हो? इसके साथ ही यह भी बता दिया है कि उन्हें अपनी अस्मिता से उपजी पार्टी शिवसेना और एनसीपी की किसी प्रकार की तोड़फोड़ नाकाबिले बर्दाश्त है।

भाजपा ने महा विकास अघाड़ी की सरकार को गिरा कर सरकार बनाने के लिए जो कुछ किया और उसके बाद बहुमत होते हुए भी एनसीपी तोड़ कर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों से घिरे अजित पवार को सरकार में शामिल किया। यह जनता को न समझ आया न ही पसंद। लोकसभा चुनाव के नतीजों से स्पष्ट है कि भाजपा ने अपने को मजबूत करने के लिए जितने भी दांव महाराष्ट्र में चले वे सारे के सारे उलटे पड़ गए और भाजपा मजबूत होने की बजाय कमजोर हो गई। यानी चौबेजी छब्बेजी बनने चले थे पर दुबेजी रह गए।

राज्य में मुख्यमंत्री रह चुके भाजपा के दिग्गज नेता देवेंद्र फड़णवीस का शिवसेना तोड़ कर आए एकनाथ शिंदे के अधीन उप मुख्यमंत्री का पद स्वीकार कर लेना भी जनता के गले नहीं उतरा और इससे भाजपा की छवि को नुकसान पहुंचा। राज्य सरकार बनने के बाद उप मुख्यमंत्री होते हुए भी देवेंद्र फड़णवीस की सीएम एकनाथ शिंदे को डोमिनेट करना भी भाजपा को अंदर ही अंदर नुकसान कर रहा था। चाचा शरद पवार के साथ धोखा करके आए भतीजे के गंभीर आरोपों से घिरे अजित पवार के मामले में बिल्कुल स्पष्ट रूप से सामने आ गया कि उन्हें केंद्रीय जांच एजेंसियों के दबाव में सरकार में लाया गया। इससे भी अहम बात यह थी कि अजित पवार के आने से सीएम शिंदे और उनकी पार्टी कतई खुश नहीं थे। इससे भाजपा और शिवसेना शिंदे के संबंधों में खटास आई। यह खटास लोकसभा चुनावों के लिए सीटों के बंटवारे में सामने भी आई। उस समय मतभेद के बिंदुओं का समाधान निकालने की बजाय मामले को दबा दिया गया, लेकिन लोकसभा के नतीजों ने सारी पोल खोल कर रख दी।

कांग्रेस बनी महाराष्ट्र में सबसे बड़ी पार्टी

2019 के चुनावों में पूरे महाराष्ट्र में कांग्रेस को सिर्फ एक सीट मिली थी। इस बार का सूरत-ए-हाल यह है कि भाजपा को मात्र 10 सीटें जा रही हैं वहीं राज्य सरकार में उसकी साझेदार शिवसेना शिंदे की बमुश्किल 6 सीटें आती दिख रही हैं, जबकि एनसीपी पवार की 1 सीट यानी कुल 16-17 सीटें महायुति की आ रही हैं। कांग्रेस बड़ा उलटफेर करते हुए 13 सीटों पर जीत हासिल कर सबसे बड़ी पार्टी बन रही है। कुल मिलाकर आंकड़ा महायुति का जहां 18 पर अटका है, वहीं महा विकास अघाड़ी 27 सीटों पर जा रही है। एक सीट अन्य ने जीती है।

महाराष्ट्र के इन नतीजों से भाजपा को जहां केंद्र में लगातार तीसरी बार बहुमत हासिल करने की दौड़ में मात खानी पड़ गई। महाराष्ट्र में बनी महायुति में भाजपा के साथी शिवसेना शिंदे और एनसीपी (अजित) को महाराष्ट्र की जनता ने नकारते हुए शिवसेना उद्धव को और एनसीपी शरद पवार को असली के रूप में मान्यता दी है।

विधानसभा का बिगड़ जाएगा गणित

इस चुनाव में महा विकास अघाड़ी को 48 में से 27 और महायुति को 18 सीटें मिली। अंत में, इन नतीजों का महाराष्ट्र की मौजूदा और इसी साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनावों की राजनीति पर बड़ा असर पड़ने वाला है।

इस विफलता के बाद महायुति में शामिल शिवसेना शिंदे और अजीत पवार के प्रति भाजपा का रवैया सख्त हो सकता है। राज्य में नेतृत्व परिवर्तन भी संभव है। विधानसभा चुनाव को लेकर भाजपा नया साथी साधने की कोशिश कर सकती है।

उद्धव ठाकरे जश्न मनाते हुए

उत्तर प्रदेश सपा ने तोड़ा चक्रव्यूह तो बसपा नहीं बचा पाई जमीन

भाजपा समझ नहीं पाई, यूपी के दिल में क्या है? हितों की राजनीति में उलझ गई 'रामायण'

- 'शहजादों की जोड़ी' ने किया कमाल

अनंत मिश्रा
patrika.com

देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में भाजपा चारों खाने चित हो गई। ना राम काम आए और ना योगी आदित्यनाथ का करिश्मा। वो कहावत सौ फीसदी सच साबित हो गई कि दिल्ली का रास्ता यूपी से होकर गुजरता है। यूपी में ना तो कमल पूरी तरह से खिल पाया और ना भाजपा को पूर्ण बहुमत ही मिल पाया। दावा था कि अबकी बार 370 पार, लेकिन 270 पार करने में भी लाले पड़ गए।

अयोध्या में राम मंदिर बनवाया, लेकिन अयोध्या की सीट पर ही भाजपा हार गई। उम्मीद थी कि इस बार यूपी 70 पार करेगी लेकिन सीटें आधी ही रह गईं। यही लोकतंत्र की ताकत है कि ना यहां वादे काम आते हैं और ना ही दावे। सबसे बड़ा सवाल अब यह है कि 2019 में 64 सीटें जीतने वाली भाजपा 33 पर कैसे आ गई और पांच सीटों वाली समाजवादी पार्टी 37 तक कैसे पहुंच गई? जो करिश्मा मुलायम सिंह नहीं कर पाए वो

> *'जो भारतीय है, वह गंभीर है, जीवन से जुड़ा है। वह मीडिया और नेताओं के भाषणों पर चिन्तन नहीं करता, जितना कि पिछले पांच साल के जीवन को केन्द्र में रखता है। वह चुनाव से महिनों पहले तय कर चुका होता है कि उसे क्या करना है।'*
> *(पत्रिका समूह के प्रधान संपादक **गुलाब कोठारी** की **जन-गण-मन यात्रा** के दौरान उत्तरप्रदेश के प्रवास के बाद 'उत्तर-निरुत्तर ' शीर्षक अग्रलेख में 12 मई 2024)*

अखिलेश यादव ने कैसे कर दिखाया? सवाल जितना सरल है जवाब उतना ही पेचीदा। पूरे प्रचार अभियान में मोदी, शाह और योगी की तिकड़ी राहुल और अखिलेश को शहजादों की जोड़ी बता रही थी। इसी जोड़ी ने भाजपा को ये बता दिया कि लोकतंत्र में कुछ भी संभव है। मुमकिन सिर्फ मोदी के नाम से ही नहीं हो सकता।

अब कई सवालों में से एक सवाल और निकलता है कि यूपी के मतदाताओं ने भाजपा को हराया क्यों? क्या उनका मोदी–योगी से मोह भंग हो गया है? या फिर रणनीतिक रूप से पार्टी विफल हो गई? या फिर संघ ने साथ नहीं दिया? या उम्मीदवारों के चयन में चूक हो गई? जैसे जीत के कई कारण होते हैं वैसे ही हार के भी अनेक पहलू होते हैं। जाहिर है अगर मोदी ब्रांड नहीं चला होता तो शायद भाजपा 240 के आसपास भी नहीं पहुंच पाती। तो फिर ऐसी क्या रणनीतिक चूक हुई, जिससे दिल के अरमां आंसुओं में बह गए।

पहली चूक तो अबकी बार 400 पार नारे को लेकर नीचे तक गए संदेश के कारण हुई। शीर्ष नेतृत्व ने नारा दिया, लेकिन क्षेत्रीय नेताओं ने कहना शुरू कर दिया कि अबकी बार सरकार आई तो बड़े फैसले होंगे। स्वयं मोदी ने भी बड़े फैसलों की बात कही। विपक्ष ने इस बात को इस तरह से वायरल किया कि अबकी बार 400 पर मतलब भाजपा एससी एसटी आरक्षण समाप्त कर देगी। बात जब अपने हितों को चोट पहुंचाती है तो दर्द कुछ ज्यादा ही होता है। यूपी के नतीजे बताते हैं कि आरक्षण का मुद्दा नीचे तक फैल गया, लेकिन भाजपा हेलीकॉप्टर से नीचे ही नहीं उतर पाई। प्रत्याशियों को लेकर उपजी नाराजगी को भी भाजपा ने बहुत हल्के में लिया। रही सही कसर मोदी की गारंटी ने पूरी कर दी।

> *'चुनाव का केन्द्रीकरण हो गया-मोदी को लाना है अथवा मोदी को हराना है। भाजपा भी खुद के लिए चुनाव नहीं लड़ रही। मोदी और 'केवल मोदी' के लिए लड़ रही है। सभी होर्डिंग्स पर मोदी के चित्र हैं। उत्तर प्रदेश में भी योगी के चित्र नहीं थे। इस बहुस्तरीय चुनाव में जहां प्रत्येक मतदाता खोया-खोया है- लोकतंत्र का एक नया स्वरूप दिखा रहा है।'*
> *(पत्रिका समूह के प्रधान संपादक **गुलाब कोठारी** की **जन-गण-मन** यात्रा में महाराष्ट्र के प्रवास के बाद 'चुनाव अथवा महासमर ' शीर्षक अग्रलेख में 22 मई 2024)*

शायद यह पहला मौका है जब संघ यहां खुलकर मैदान में नहीं उतरा। उसकी कसक भी थी कि गारंटी मोदी की जगह भाजपा की क्यों नहीं? संघ का समर्थन विचारधारा के लिए है ना कि किसी व्यक्ति के लिए। यही कारण है कि अमेठी में केंद्रीय मंत्री स्मृति रानी भी हारीं और आठ बार की सांसद मेनका गांधी भी सुल्तानपुर से हारीं। इसके अलावा अनेक दिग्गज धराशायी हो गए। ना फ्री अनाज काम आया और ना ही योगी का सुरक्षा कवच? जनधन खाते भी खुले, लेकिन मतदाताओं के वोटों के बटन से कमल पूरी तरह से नहीं खिल पाया। दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी सबसे बड़े राज्य के मतदाताओं के मिजाज को समझ नहीं पाई।

भाजपा के मुकाबले सीमित साधनों के सहारे अखिलेश ने जो जीत हासिल की है, उसकी कहानी लंबे समय तक यूपी और यूपी के बाहर भी चर्चा और शोध का विषय रहेगी। नतीजे आ गए हैं। अब देखना दिलचस्प होगा कि गंगा, यमुना और सरस्वती वाला किस डगर जाएगा? भाजपा को गहराई से चिंतन करना होगा कि वो यूपी के मतदाताओं के मिजाज को अखिर पढ़ क्यों नहीं पाई?

लखनऊ में जीत का जश्न मनाते सपा कार्यकर्ता

फिर चला मां, माटी और मानुष का नारा...

बंगाल में कमाल, बिहार में सवाल

पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी का जादू एक बार फिर सिर चढ़कर बोला। तमाम कयासबाजी को धता बताते हुए ममता ने 29 सीटें हासिल कीं। भाजपा को कड़ी शिकस्त मिली। ममता पार्टी की जीत के आंकड़ें को 22 से बढ़ाकर 29 तक ले गईं तो भाजपा 18 से लुढ़क कर 12 पर आ गई। वहीं, बिहार में नीतीश कुमार की पार्टी जदयू ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए एनडीए को बहुमत के पार ले जाने में मदद की। अब सवाल ये है कि नीतीश एनडीए के साथ रहेंगे या फिर एक बार पलटी मारेंगे? नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नीतीश के 12 और चिराग पासवान के पांच सांसदों की बड़ी भूमिका रहने वाली है।

प. बंगाल कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष अधीर रंजन भी नहीं बचा सके सीट

ममता दीदी के करिश्मे ने भाजपा को दिया झटका, पिछले चुनाव में खोई सीटें कर लीं हासिल

- धरे रहे एग्जिट पोल, रणनीतिकार चौंके
- क्रिकेटर युसूफ पठान भी जीते

कानाराम मुण्डियार
patrika.com

देश के लोकसभा चुनाव के नतीजों में पश्चिम बंगाल के जनादेश ने सभी को चौंका दिया। चुनाव का घमासान तो राजनीतिक दलों के बीच मचा था, लेकिन जनता खामोश थी और जनता ने जनादेश देखकर ऐसा करिश्मा दिखाया कि न केवल एग्जिट पोल अनुमान धरे रह गए बल्कि कई रणनीतिकार भी चौंक गए। तृणमूल कांग्रेस ने कुछ ऐसी सीटों पर भी जीत दर्ज कर ली, जहां संभावना कम थी।

> पश्चिम बंगाल में पहले कांग्रेस से वामदलों ने सत्ता छीनी थी और अब भाजपा के सामने सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस है। यहां वामदल और कांग्रेस दोनों ही हाशिए पर चले गए हैं। देश भर में महागठबंधन में शामिल कांग्रेस और वामदल, पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव नहीं लड़ रहे। हालत यह है कि प्रदेश में कांग्रेस का मतदाता है लेकिन संगठन कमजोर है। वामदलों के पास संगठन है लेकिन उसके मतदाता तृणमूल कांग्रेस के साथ चले गए। अतः मुकाबला मुख्य तौर पर तृणमूल कांग्रेस और भाजपा के बीच ही होना है।'
> (पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी की जन-गण-मन यात्रा में प. बंगाल व असम के प्रवास के बाद 'बंगाल का जादू' शीर्षक अग्रलेख में 10 अप्रेल 2024)

यानी टीएमसी ने असंभव को संभव कर दिया। टीएमसी की इस रेकॉर्ड जीत को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का 'खेला' या करिश्मा कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं।

देशभर में पीएम मोदी का नाम और भाजपा का धुआंधार प्रचार पश्चिम बंगाल में बेअसर हो गया। भाजपा ने ऐसी 6 सीटें खो दीं, जो पिछले चुनाव में भाजपा ने तृणमूल व कांग्रेस से छीन ली थीं। अब तृणमूल ने न केवल पुराना हिसाब चुकता कर दिया, बल्कि बंगाल में भाजपा के पैर पसारने के सपनों पर एक तरह से ब्रेक लगा दिया है। इसके अलावा जनादेश ने एक और संदेश भी दिया कि बंगाल में वो ही होगा, जो ममता दीदी चाहेगी।

कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी भी टीएससी के लिए चुनौती बन रहे थे। उन्हें भी टीएमसी ने उनके गढ़ बहरामपुर सीट के चुनाव में ऐसा उलझाया कि पांच बार की सांसदी को ढेर कर दिया। टीएमसी के टिकट पर चुनाव लड़े पूर्व क्रिकेटर युसूफ पठान ने उन्हें हरा दिया। राज्य में कांग्रेस एक सीट पर सिमट कर रह गई।

पश्चिम बंगाल के कई क्षेत्रों में अलग-अलग चरण के मतदान के दौरान मैं कई लोगों से मिला और उनसे चुनाव के बारे में जानने की कोशिश की। लोगों से चर्चा की तो पता चला कि अन्य राज्यों की तुलना में बंगाल का चुनावी मिजाज कुछ अलग है। कई क्षेत्रों में लोगों की नब्ज टटोलने पर भी यह समझना मुश्किल रहा कि आखिर उनके मन में क्या चल रहा है। लोग किस दल के साथ हैं, किसे जिताएंगे। लोगों की खामोशी के चलते यहां के चुनाव में कई तरह के कयास लगाए जा रहे थे, लेकिन टीएमसी ने अपनी रणनीति से चुनावी कैंम्पेन पर फोकस रखा।

चुनाव प्रचार की दृष्टि से पूरे बंगाल में टीएमसी का दबदबा दिखा, लेकिन क्षेत्र में बेरोजगारी, उद्योग-धंधों की कमी, संदेशखाली क्षेत्र में महिला उत्पीड़न, शिक्षक भर्ती घोटाला जैसी घटनाओं के बाद लग रहा था कि यह माहौल राज्य सरकार के खिलाफ हो सकता है। भाजपा ने भी ऐसे मुद्दों को लेकर टीएमसी को घेरने में कोई कसर नहीं छोड़ी, पर चुनाव में चुप्पी रखने वाली जनता ने सभी मुद्दों को नकार दिया।

पिछले चुनाव का हिसाब लिया

जनता ने इस चुनाव में टीएमसी की झोली में पिछले चुनाव-2019 में जीती 22 के साथ खोई हुई 7 सीट समेत 29 सीटों पर बढ़त देकर सबको चौंका दिया। यहां गौर करने वाला पहलू यह रहा कि चुनाव कैम्पेन के दौरान टीएमसी ने पिछले चुनाव में भाजपा की जीती सीटों पर विशेष फोकस किए रखा। टीएमसी को पुराना हिसाब याद रहा कि वर्ष 2014 में दो सीट जीतने वाली भाजपा ने वर्ष 2019 में 18 सीटें जीत ली थीं। तब टीएमसी के लिए यह बड़ा झटका था। इस चुनाव में टीएमसी ने भाजपा को झटका देकर न केवल पुराना हिसाब चुकता किया, बल्कि अतिरिक्त सीटों पर भी सेंधमारी की।हालांकि इस चुनाव में भाजपा ने 12 सीटों पर बढ़त बनाई।

बंगाल में जनादेश 'दीदी' के पक्ष में

बिहार

बस, अब कहीं फिर से न पलट जाएं 'पलटू चाचा'

- मतदाताओं ने नकारा जात-पात को
- पहले बातें हुई, अब फोकस विकास पर

राजेश शर्मा
patrika.com

बिहार का चुनावी माहौल जानने के दौरान इस बार पता लगा कि वहां पर एनडीए के खिलाफ दल कोई भी हो, प्रत्याशियों की सोशल इंजीनियरिंग की बिसात पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने बिछाई तो बार-बार बदलने के कारण पलटू चाचा का खिताब पा चुके मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिना कोई प्रतिक्रिया जताए शांति के साथ लालू की शतरंजी चालों का जवाब देने की तैयारी करते रहे। नीतीश का एनडीए के साथ जाने का कदम पूरी पार्टी को बचा गया। नीतीश ने भाजपा से उन कुछ सीटों को भी हासिल किया, जिन पर पहले भाजपा लड़ी थी और जीती भी थी। मतदाताओं ने बिहार में जात-पात को एकदम से नकार दिया है और

> *'जन-गण-मन यात्रा में मेरे पटना दौरे में भी यही स्पष्ट हुआ कि लालू यादव को राजद की चिन्ता नहीं है, अपने परिवार के आगे। मानो राजद का गठन परिवार के लिए ही किया था। लालू ने परिवार के लिए वोट मांगे, राजद के लिए नहीं। वे समझ चुके हैं कि परिणाम क्या होंगे।'*
> *(पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी की जन-गण-मन यात्रा के समापन के बाद 'परिवारों में फंसे क्षत्रप' शीर्षक अग्रलेख में 2 जून 2024)*

अब वे विकास और देश का भला किस में है, इस पर ज्यादा फोकस कर रहे हैं। यह मेरे पन्द्रह साल पहले के देखे बिहार से एकदम उलट था।

पटना साहिब लोकसभा क्षेत्र से लेकर चंपारण तक महिलाओं और युवाओं के बीच राहुल गांधी और लालूप्रसाद यादव के प्रति नापसंदगी जगजाहिर थी। खासतौर से बिहार के मतदाता बिहार के उस पुराने दौर को याद भी नहीं करना चाहते, जब अपराधियों, गिरोहों और निजी जातीय सेनाओं का बोलबाला था। आज सुरक्षा, विकास और रोजगार के अवसर बिहार में ही जुटाने की बात हो रही है।

बिहार के मतदाता जानते हैं कि नीतीश कुमार जनता दल यूनाइटेड को बचाने के लिए भारतीय जनता पार्टी के साथ गए हैं। जदयू को नीतीश कुमार के इस कदम का फायदा भी मिलता दिख रहा था। आरंभ में भाजपा के कार्यकर्ता जदयू के प्रत्याशियों के पक्ष में काम नहीं कर रहे थे। गृहमंत्री अमित शाह ने दो बार बिहार में रात्रि विश्राम कर कार्यकर्ताओं को कड़ा संदेश दिया कि मोदी सरकार को लाना है तो जदयू के प्रत्याशियों को जिताना होगा। पांचवें चरण से भाजपा कार्यकर्ताओं ने जदयू के लिए जुटना आरंभ किया लेकिन जदयू वाले भाजपा के पक्ष में उतने नहीं लगे। लोजपा के चिराग पासवान से तो जदयू ने दूरी ही बनाए रखी। बिहार के मतदाता बातचीत में कह रहे थे कि नीतीश कुमार के बार-बार कभी एनडीए में तो कभी 'इंडिया' में जाने से छवि खराब हो रही है। अब इन्हें नहीं बदलना चाहिए अन्यथा अन्य दलों का इन पर से विश्वास उठ जाएगा। लालू प्रसाद यादव का पूरा परिवार अन्य सीटों को छोड़कर अपनी दोनों बेटियों को जिताने के लिए प्राणप्रण से जुटा रहा। पटना के मतदाता कह रहे थे कि इस बार तो मीसा और रोहिणी के लिए लालू और राबड़ी घर-घर जा रहे हैं। मीसा दो बार पहले भी हार चुकी थीं। यादव ही नहीं, बल्कि अन्य लोगों में भी खासतौर से महिलाओं में मीसा के प्रति सहानुभूति थी, लेकिन लोग तंज कसते थे कि 'लालू ने विधानसभा में बेटों को सैट कर दिया और बेटियों को लोकसभा भेजना चाहते हैं। राजद का बाकी कार्यकर्ता क्या दरी बिछाने के लिए ही है क्या?' लालू को लेकर एक बात बिहार में तेजी से फैल रही है कि लालू लोकसभा के लिए नहीं बल्कि आगामी विधानसभा चुनाव में तेजस्वी को मुख्यमंत्री बनाने की योजना को लेकर काम कर रहे हैं।

मोदी और नीतीश

राजस्थान अपनों से हारी भाजपा, कांग्रेस एकजुटता से जीती

राज्य की 25 में से भाजपा 14, कांग्रेस 8 और गठबंधन की 3 सीटों पर जीत

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

राज्य में लगातार दो बार क्लीन स्वीप करने वाली भाजपा इस बार अपनों से हार गई। लोकसभा चुनाव में जीत के प्रति अतिआत्मविश्वास भाजपा के लिए नुकसानदायक रहा। केन्द्रीय नेतृत्व मान बैठा कि तीसरी बार राज्य में एकतरफा जीत होगी। यही अतिआत्मविश्वास बड़े नेताओं की नाराजगी का कारण बन बैठा।

राज्य के बड़े नेताओं ने चुनाव से कन्नी काट ली। पूरा चुनाव मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नए कंधों पर आकर टिक गया। अब भाजपा के कुछ दिग्गज विधायकों का खेल शुरू हुआ। बस एक ही मकसद अपने लोग जीतें बाकी प्रत्याशियों के साथ भितरघात। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार धौलपुर-करौली, भरतपुर, सीकर, झुंझुनूं, चूरू, नागौर, टोंक-सवाई माधोपुर, दौसा, बाड़मेर, बांसवाड़ा पर अपने तमाम वजीरों को भाजपा प्रत्याशियों के खिलाफ ही सक्रिय कर दिया गया। यह भितरघात भाजपा के लिए पुराना प्रदर्शन दोहराने में बाधा बन गया।

कांग्रेस इस मामले में कुछ हद तक भाजपा से बेहतर रही। हालांकि भाजपा से ज्यादा गुटबाजी और भितरघात कांग्रेस के बड़े नेताओं में कायम रहा लेकिन लोकसभा चुनाव में उसका ज्यादा असर नहीं पड़ा। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पूरे चुनाव के दौरान अपने बेटे वैभव गहलोत को जिताने के प्रयास में जालौर से ज्यादा बाहर नहीं निकल सके। गहलोत ने राज्य में कुल 53 चुनावी सभा कीं। इनमें से अकेले जालौर में 22 सभाएं। ऐसे में सचिन पायलट और गोविंद सिंह डोटासरा ने चुनाव की कमान संभाली। कांग्रेस का अन्य दलों से गठबंधन के साथ एकजुटता से लड़ने का फार्मूला भी सफल रहा। राज्य की 25 सीटों में से भाजपा ने 14 सीट जीतीं। कांग्रेस ने आठ और उसके सहयोगी दलों ने तीन। कांग्रेस का उत्तरी राजस्थान के शेखावाटी और पूर्वी राजस्थान में शानदार प्रदर्शन रहा। लंबे समय बाद भाजपा-कांग्रेस के अलावा अन्य दलों ने 3 सीटें जीती। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला फिर जीतने के साथ संसद पहुंच गए हैं। लंबे समय बाद कोई अध्यक्ष पुनः चुनाव जीतकर संसद पहुंचा है। वहीं चार केंद्रीय मंत्रियों में से एक हरीश चौधरी को हार मिली। वैभव गहलोत दूसरी बार भी हार गए। पूर्व सीएम वसुंधरा राजे के पुत्र दुष्यंत सिंह ने लगातार पांचवी बार जीते। चुनाव में 7 विधायकों ने भी किस्मत आजमाई। जीत 5 को ही मिली।

पायलट-डोटासरा के सिर सेहरा: एक दशक बाद कांग्रेस की वापसी का सेहरा प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा और सचिन पायलट के सिर बंधा। उनके आक्रामक प्रचार की बदौलत कांग्रेस दोनों चरण में प्रभावी नजर आई। शेखावाटी में सीपीएम से गठबंधन और भाजपा के बागी राहुल कस्वां को टिकट दिलाने में डोटासरा ने अहम भूमिका निभाई। इससे शेखावटी से भाजपा का सूपड़ा साफ हुआ। पायलट ने बृजेन्द्र ओला, मुरारीलाल मीना, हरीश मीना, संजना जाटव और कुलदीप इंदौरा को न केवल टिकट दिलाए बल्कि उनकी जीत में भी अहम भूमिका निभाई।

ओडिशा 24 साल के सफर पर भी लगा विराम

पटनायक को दी ऐतिहासिक पटखनी, बदल डाला ओडिशा का राजनीतिक इतिहास

ओडिशा लोकसभा के नतीजों को देखकर सहसा विश्वास नहीं होता, लेकिन सच्चाई यही है। पिछले लोकसभा चुनाव में एक सीट जीतने वाली भाजपा ने इस बार 21 में से 19 सीटें हथियाकर राजनीति के पंडितों को भी चौंका दिया। पिछले 24 साल से ओडिशा के नायक रहे नवीन पटनायक की करारी हार विश्लेषण का विषय है। पटनायक के सामने कोई चेहरा नहीं था, फिर भी जगन्नाथ भगवान का आशीर्वाद मिलना भाजपा के लिए बड़ी जीत है।

भाजपा को यह जीत अपने परिश्रम से मिली या फिर नवीन बाबू की नाकामियों से, ये सवाल अनेक लोगों के मन में उठ रहा है। राजनीतिक टकराव और दिल्ली की लुटियन जोन से दूरी बनाए रखने वाले सौम्य स्वभाव वाले पटनायक की हार के पीछे कारण अधिक नहीं हैं। बढ़ती उम्र का बोझ व अपनों के मुकाबले परायों को प्राथमिकता देने की सजा शायद नवीन बाबू को उठानी पड़ी है। ढाई दशक तक जिन सहयोगियों ने नवीन बाबू को सत्ता के शिखर पर पहुंचाया आखिरी दौर में उनसे दूरी बनाना उन्हें भारी पड़ गया।

तमिलनाडु कैडर के आइएएस अधिकारी वीके पांडियन जबसे पटनायक के खास बने तब से अपने मंत्रियों से भी कटने लगे। भुवनेश्वर के राजनीतिक गलियारों की कानाफूसी पर विश्वास किया जाए तो पांडियन पटनायक की ताकत कम और कमजोरी अधिक बन गए। राजकाज का काम हो या टिकट का वितरण पांडियन की मर्जी बगैर पत्ता भी नहीं हिलता था। यही कारण रहा कि भाजपा ने उनकी सत्ता ही उखाड़ दी।

बात यहीं तक सीमित नहीं रहीं। लोकसभा के साथ विधानसभा चुनाव जीतने का 24 साल के सफर पर भी विराम लग गया। विधानसभा में भी भाजपा का अपने दम पर बहुमत लाना भाजपा की जीत से बड़ी पटनायक की हार मानी जाएगी। बीजू जनता दल के वरिष्ठ नेता नवीन बाबू को पांडियन से दूरी बनाने की सलाह देते थे मगर...।

नवीन पटनायक

आंध्र प्रदेश गठबंधन की आक्रामक रणनीति से मिली सफलता

टीडीपी सबसे बड़े सहयोगी दल के रूप में उभरा, 16 सीटों पर बढ़त

जग्गोसिंह धाकड़
patrika.com

देश के लोकसभा चुनाव में इस बार भाजपा को अपने दम पर बहुमत नहीं मिल पाया है, लेकिन सहयोगी दलों को मिली सीटों को मिलाकर आंकड़ा बहुमत के अंक को पार कर गया है। आंध्रप्रदेश में तेलुगु देशम पार्टी सबसे बड़े सहयोगी दल के रूप में सामने आई है। आंध्रप्रदेश में 25 लोकसभा सीटें हैं। टीडीपी ने अकेले 16 सीटों पर निर्णायक बढ़त ली है। भाजपा को 3 और जनसेना को 2 सीटों पर बढ़त मिली है। वाइएसआरसीपी 4 सीटों पर ही सिमट गई।

इसी तरह विधानसभा चुनाव में भी यहां सत्तारूढ़ दल वाइएसआरसीपी का सूपड़ा साफ हो गया है। विधानसभा की 175 सीटों में से टीडीपी को 135 सीटों पर निर्णायक बढ़त मिली है। सहयोगी दल जनसेना को 21 और भाजपा को 8 सीटों पर निर्णायक बढ़त मिली है। वाइएसआरसीपी केवल 11 सीटों पर सिमट गई है। कांग्रेस का यहां खाता ही नहीं खुल पाया है। आंध्रप्रदेश में लोकसभा के साथ विधानसभा के भी चुनाव हुए हैं। ऐसे में टीडीपी के सामने लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने के साथ ही राज्य में सत्ता में वापसी की चुनौती थी। एनडीए को भी आंध्रप्रदेश में सहयोगी दल की जरूरत थी, क्योंकि पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा का आंध्रप्रदेश में खाता ही नहीं खुल पाया था। ऐसे में भाजपा ने इस बार यहां टीडीपी और जनसेना के साथ गठबंधन के लिए हाथ आगे बढ़ाया। तीनों दलों के बीच सीट शेयरिंग की बात तय होने के बाद गठबंधन हो गया। गठबंधन होने के तत्काल बाद ही यहां तीनों दलों ने मिलकर आक्रामक प्रचार अभियान शुरू किया था। भाजपा-टीडीपी-जनसेना गठबंधन ने जगनमोहन सरकार की विफलताओं को मुद्दा बनाया। इन तीनों दलों ने मिलकर राज्य सरकार के विरोध में चल रही लहर को तेजी से फैलाया। जगनमोहन रेड्डी और उनकी बहन वाइएस शर्मिला के बीच चल रहे विवाद को भी अपने पक्ष में भुनाने में भाजपा-टीडीपी-जनसेना गठबंधन ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

जनता का समर्थन चंद्रबाबू नायडू को

मध्यप्रदेश संगठन और सत्ता दोनों मोर्चों पर बेहतरीन तालमेल की मिसाल

भाजपा की आक्रामक रणनीति व राष्ट्रीय मुद्दों को उठाने में कांग्रेस की नाकामी का नतीजा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

भाजपा ने 'मौके को लपक लिया' और कांग्रेस 'मौका चूक गई'। यही हुआ है, मध्यप्रदेश में। सभी 29 सीटों पर जीत हासिल करके भाजपा ने 29/0 से नया इतिहास बना दिया है। इससे पहले रेकॉर्ड 28/1 भी भाजपा के नाम ही था। पार्टी ने आक्रामक रणनीति के जरिए यह सफलता हासिल की। चुनाव के दौरान एक-एक कर कांग्रेस के तीन विधायकों को तोड़ना और हर दिन किसी न किसी नेता को पार्टी में शामिल करवाने का सिलसिला भाजपा ने आखिरी दिन तक कायम रखा। पार्टी ने उन मुद्दों को भी नहीं छोड़ा, जिन पर भाजपा देशभर में चुनाव अभियान छेड़ चुकी थी। वहीं, कांग्रेस रणनीतिक तौर पर बेहद कमजोर साबित हुई। प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के सामने सुनहरा अवसर था, मगर दोनों आपस में ही गुत्थम-गुत्था होते रहे। पटवारी पूरे प्रदेश में प्रचार में दिखे जरूर, पर उनकी कोशिशें हवा-हवाई ही थीं। एक बड़ी चूक कांग्रेस ने यह भी की कि राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी जिन विषयों और मुद्दों को उठा रही थी, उन्हें प्रदेश स्तर पर छुआ तक नहीं गया। प्रदेश सरकार की खामियों, वादाखिलाफी को ही मुद्दा बनाना गलत दांव साबित हुआ।

वहीं, भाजपा ने संगठन और सत्ता दोनों ही मोर्चों पर बेहतरीन तालमेल का उदाहरण पेश किया। सीएम डॉ. मोहन यादव और प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा दोनों की अगुवाई में बगैर किसी चूक के प्रचार अभियान चला। कई सीटों पर कमजोर उम्मीदवार होने के बाद भी पार्टी ने कार्यकर्ताओं का मनोबल गिरने नहीं दिया। यह चुनाव दो पूर्व मुख्यमंत्रियों के सियासी सफर को समाप्त कर गए। पहले कमलनाथ। बेटे को सांसद बनाए रखने की उनकी तमाम कोशिशें नाकामयाब रहीं और एक कमजोर उम्मीदवार से नकुलनाथ हार गए। दूसरे नेता हैं दिग्विजय सिंह। वे अनमने ढंग से राजगढ़ सीट पर उतरे और चुनाव को बेहतर तरीके से लड़े, पर हार गए। अब उनके पास राज्यसभा का अल्पकाल शेष है।

तीसरे पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान बीस वर्ष बाद अपनी परंपरागत सीट विदिशा में जीतकर संसद पहुंच रहे हैं। देखना दिलचस्प होगा कि उन्हें पार्टी किस भूमिका में देखती है। प्रदेश की खजुराहो और इंदौर सीटों की चर्चा करना भी आवश्यक है। इन दोनों सीटों पर कांग्रेस की ओर से भाजपा को वॉकओवर दिया गया। इंदौर में पार्टी का उम्मीदवार टिकट लौटाकर भाजपा में चला गया और नतीजा यह रहा कि इंदौर ने वोट और नोटा का नया कीर्तिमान रच दिया। देश की सबसे बड़ी जीत शंकर लालवानी की हुई है। दूसरी ओर, खजुराहो में गठबंधन की ओर से सपा की उम्मीदवार का फॉर्म रिजेक्ट हो गया और सीट सीधे भाजपा की झोली में चली गई। असल में ये चुनाव परिणाम भाजपा की जीत से अधिक कांग्रेस की खामियों के कारण याद रखे जाएंगे। कांग्रेस को हमेशा मलाल रहेगा कि थोड़ी मेहनत कर लेते तो कुछ सीटों पर परचम फहरा देते।

किसको कितने मिले वोट...

भाजपा	1,61,65,859
कांग्रेस	1,24,45,396
अन्य	42,24,082

पिछले लोकसभा(लोस) और विधानसभा(विस) चुनाव से कितने आगे-पीछे हुए वोट

5 साल और फिर 6 माह में वोट गणित के हिसाब से अंतर

	लोस 2019	विस 2023	लोस 2024
भाजपा	59.07%	42.10%	49.24%
कांग्रेस	34.59%	39.96%	37.91%
अन्य दल	5.26%	10.46%	6.59%
निर्दलीय	1.08%	7.48%	5.26%

राजस्थान सरकार की कैबिनेट के 5 मंत्रियों के क्षेत्र में पिछड़ी भाजपा

प्रदेश में सबसे बड़ी जीत

महिमा कुमारी (मेवाड़)	
वोट मिले	7,81,203
जीत का अंतर	3,92,223

निकटतम प्रतिद्वंद्वी
दामोदर गुर्जर
वोट मिले 3,88,980

छोटी हार

अनिल चौपड़ा (जयपुर ग्रामीण)	
वोट मिले	6,16,262
हार का अंतर	1,615

निकटतम प्रतिद्वंद्वी
राव राजेन्द्र सिंह
वोट मिले 6.17,877

युवा सांसद

संजना जाटव (भरतपुर)	
वोट मिले	5,79,890
उम्र	26 वर्ष

निकटतम प्रतिद्वंद्वी
रामस्वरूप कोली

बुजुर्ग सांसद

बृजेन्द्र ओला (झुंझुनूं)	
वोट मिले	5,53,168
उम्र	71 वर्ष

निकटतम प्रतिद्वंद्वी
शुभकरण चौधरी

नोटा की कहानी...

2,77,216

वोटर ने नोटा बटन दबाया वोटरों ने राजस्थान की 25 लोकसभा सीटों पर नोटा का बटन दबाया। नोटा मतदान का 0.84 फीसदी है।

तानाशाही पर विजय...

लोकसभा चुनाव का परिणाम तानाशाही पर लोकतंत्र की जीत का परिणाम है। इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों के पक्ष में जनता ने मतदान किया, चुनाव में जिस तरह की भाषा का प्रयोग प्रधानमंत्री मोदी और उनके नेता कर रहे थे, जनता सब देख रही थी। जनता ने इन्हें सबक सिखाया है।

टीकाराम जूली, नेता प्रतिपक्ष

सीएम भजनलाल की सीट पर भाजपा 1 लाख वोटों से जीती, गहलोत की सीट पर कांग्रेस हारी

जयपुर @ पत्रिका. लोकसभा चुनाव में भाजपा के मंत्रियों, बडे नेता, पूर्व मुख्यमंत्रियों और कांग्रेस के बड़े नेताओं की प्रतिष्ठा भी दांव पर रही। प्रदेश सरकार में मंत्री किरोड़ीलाल मीना, मंजू बाघमार, सुमित गोदारा, जवाहर सिंह बेढम और केके विश्नोई के विधानसभा क्षेत्र में भाजपा को हार का सामना करना पड़ा। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की विधानसभा सीट सांगानेर पर भाजपा प्रत्याशी को बड़ी बढ़त मिली। उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा की विधानसभा सीट पर भी भाजपा ने बढ़त हासिल की। हालांकि, अधिकांश मंत्रियों की विधानसभा सीट पर खुद के मुकाबले कम वोट मिले। वहीं, पूर्व सीएम अशोक गहलोत के विधानसभा क्षेत्र सरदारपुरा में कांग्रेस नहीं जीत पाई। यहां भाजपा प्रत्याशी को 15181 वोट से जीत मिली।

जोधपुर @ गजेन्द्र सिंह

सीकर @ अमराराम

उप मुख्यमंत्री और 4 मंत्रियों की सीट पर लीड हुई कम

भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री: सीएम भजनलाल शर्मा सांगानेर विस सीट से 48081 वोटों से जीते थे। अब भाजपा को प्रतिद्वंद्वी से 108006 वोट ज्यादा दिलाने में कामयाब हुए।

दिया कुमारी, उप मुख्यमंत्री: विद्याधर नगर सीट से 71368 वोट से जीतीं, अब इस सीट से 98510 वोट से लीड मिली। दिया कुमारी सक्रियता भी काम आई।

प्रेमचंद बैरवा, उपमुख्यमंत्री: दूदू विस. सीट से 35743 वोट अंतर से जीत हासिल की, यहां से भाजपा को 26916 वोट से लीड मिली।

हीरालाल नागर, ऊर्जा राज्य मंत्री : विधानसभा सीट सांगोद से प्रतिद्वंद्वी से 25586 ज्यादा वोट हासिल किए, लेकिन लोकसभा चुनाव में 20265 वोट कम मिले।

किरोड़ीलाल मीना, कृषि मंत्री: सवाईमाधोपुर सीट से 22510 वोट से जीते, जबकि सांसद प्रत्याशी को 28771 वोट कम मिल सके। सभाओं में भीड़ खूब उमड़ी, लेकिन अपेक्षित वोट में तब्दील नहीं हो पाई।

गजेन्द्र सिंह खींवसर, चिकित्सा मंत्री: लोहावट सीट से 10549 मत से जीत हासिल की, लेकिन अब भाजपा प्रत्याशी को मिले वोट का अंतर 4193 कम हो गया।

22- जवाहर सिंह बेढम, राज्य मंत्री: मंत्री की नगर विस. सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी 16566 वोट ज्यादा मिले।

बड़े नेताओं की विधानसभा सीटों पर रही स्थिति

वसुंधरा राजे, पूर्व मुख्यमंत्री व विधायक: झालरापाटन विस सीट 53193 वोट से जीती थी। लोकसभा चुनाव में बेटे दुष्यंत को 72160 वोट ज्यादा मिले।

अशोक गहलोत, पूर्व सीएम: गहलोत ने सरदारपुरा सीट से 26396 वोट से जीती थी। लोकसभा में उलटा हुआ, भाजपा उम्मीदवार को 15181 वोट ज्यादा मिले। विस क्षेत्र में सभाएं की, लेकिन ज्यादा समय बेटे की सीट जालोर पर बीता।

सचिन पायलट, विधायक: टोंक वि.स. क्षेत्र से 29475 वोट से जीते, लेकिन कांग्रेसी सांसद प्रत्याशी को 4524 वोट की ही लीड़ दिला पाए।

गोविन्द सिंह डोटासरा, कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष: लक्ष्मणगढ़ विधानसभा सीट को 18970 वोट से जीती और गंठबंधन में दी गई सीट पर प्रत्याशी को 13165 वोट ज्यादा मिले।

मदन दिलावर, शिक्षा मंत्री: विधानसभा चुनाव में रामगंज मंडी सीट से खुद ने प्रतिद्वंद्वी से 18422 वोट ज्यादा हासिल किए, लेकिन लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी को प्रतिद्वंद्वी से 8470 वोट ही ज्यादा दिला पाए।

संजय शर्मा, वन मंत्री: अलवर शहर सीट से केवल 9087 वोट से जीते, जबकि भाजपा के सांसद प्रत्याशी ने इसी विधानसभा सीट से प्रतिद्वंद्वी से 52523 वोट हासिल किए।

जोगाराम पटेल, विधि एवं न्याय मंत्री: लूणी विस सीट से 24678 वोट से जीते। लोकसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी को 34875 प्रतिद्वंद्वी से ज्यादा वोट मिले।

हेमंत मीना, राजस्व मंत्री: प्रतापगढ़ विस क्षेत्र से मंत्री 25109 वोट से जीते थे और सांसद प्रत्याशी को यहां प्रतिद्वंद्वी से 51158 ज्यादा वोट मिले।

गौतम दक, सहकारिता मंत्री: बड़ीसादड़ी विस. क्षेत्र से 11832 वोट से जीते और इसी सीट से सांसद प्रत्याशी को 52540 वोट की बड़ी लीड़ मिली है।

कन्हैयालाल चौधरी, जलदाय मंत्री: मालपुरा सीट 16189 मत से जीती थी और यहीं से सांसद प्रत्याशी को प्रतिद्वंद्वी से 33343 ज्यादा वोट मिले।

बाबूलाल खराड़ी, मंत्री: झाड़ोल विधानसभा में 6488 वोट से सीट जीती और भाजपा सांसद प्रत्याशी ने 4790 ज्यादा वोट लिए।

झाबर सिंह खर्रा, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री: श्रीमाधोपुर विस. सीट 14459 से जीती और यहीं से भाजपा प्रत्याशी ने 14276 ज्यादा वोट हासिल किए।

राज्यवर्धन सिंह राठौड़, उद्योग मंत्री: झोटवाड़ा विस. सीट को 50167 वोट से जीती और भाजपा प्रत्याशी को यहीं से 80684 वोट ज्यादा मिले।

मंजू बाघमार, मंत्री: जायल विस. सीट केवल 1565 वोट से जीतीं। यहीं से प्रतिद्वन्दी पार्टी के सांसद प्रत्याशी 10484 ज्यादा वोट हासिल करने में कामयाब हुए।

विजय सिंह चौधरी, मंत्री: नावां विधानसभा सीट 23948 मत से जीती, यहीं से भाजपा प्रत्याशी को 22625 वोट की लीड मिली।

सुरेश रावत, जल संसाधन मंत्री: पुष्कर विस. सीट से 13869 वोट से जीत मिली। इसी सीट से भाजपा प्रत्याशी को 43536 वोट से लीड मिली।

जोराराम कुमावत, मंत्री: सुमेरपुर विस. सीट को 27382 से जीती, यहां से भाजपा सांसद प्रत्याशी को 43663 वोट से लीड मिली।

ओटाराम देवासी, मंत्री: सिरोही विस. सीट को 35805 मत से जीता और यहीं से भाजपा प्रत्याशी को 38191 ज्यादा वोट मिले।

सुमित गोदारा, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री: लूणकरनसर विस. सीट पर 8869 वोट से जीत हासिल की, लेकिन यहीं से कांग्रेस प्रत्याशी को 2456 वोट ज्यादा मिले।

जश्न में डूबे कार्यकर्ता, विजयी प्रत्याशियों का स्वागत

कोटा @ ओम बिरला

बाड़मेर @ उम्मेदाराम

पार्टी कार्यालय लाइव

कांग्रेस: उत्साह, मिठाई खिलाई

जयपुर . जयपुर लोकसभा चुनाव के परिणाम को लेकर कांग्रेस मुख्यालय में कार्यकर्ताओं में जोश और उत्साह नजर आया। सुबह 8 बजे से ही कांग्रेस कार्यकर्ता और नेताओं का पीसीसी पहुंचना शुरू हो गया था। जैसे ही चुनाव परिणाम के रुझान बढ़ते गए कांग्रेस कार्यकर्ताओं का जोश भी बढ़ता गया। कभी कांग्रेस जिंदाबाद के लग रहे थे तो कभी मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी के नारे लगे।

भाजपा : न लड्डू बंटे, न ढोल बजे

जयपुर. मतणगना शुरू होने के साथ ही भाजपा कार्यालय में खुशी का माहौल बना रहा। नेता-कार्यकर्ता पहुंचे तो एक-दूसरे को बधाई देते हुए आगे बढ़ते रहे। जैसे-जैसे रुझान परिणाम में बदलते गए, वैसे -वैसे भाजपा प्रदेश कार्यालय में कार्यकर्ताओं में मायूसी छाती रही। एलईडी स्क्रीन पर चुनाव परिणाम देखने वालों की संख्या इक्का-दुक्का रह गई। ढोल-नगाड़े टेबल की ही शोभा बनाते रहे।

दल-बदल वाले दो नेताओं को भाजपा ने टिकट दिया पर जीते नहीं

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जयपुर . प्रदेश में लोकसभा चुनाव से पहले हुए दल-बदल से भाजपा को बहुत अधिक फायदा नहीं मिला है, वहीं कांग्रेस को फायदा पहुंचा। भाजपा ने कांग्रेस से आए दो नेताओं को सांसद का टिकट दिया, लेकिन दोनों हार गए। वहीं, कांग्रेस ने भाजपा के एक सांसद को, एक पूर्व विधायक को अपने साथ लिया और उन्हें टिकट दिया। कांग्रेस की रणनीति कुछ हद तक कामयाब रही। एक सीट पर दल-बदल का कांग्रेस को फायदा मिला।

चुनावों से पहले कांग्रेस से भाजपा में आए ज्योति मिर्धा को नागौर और महेन्द्रजीत सिंह मालवीया को बांसवाड़ा-डूंगरपुर से भाजपा ने टिकट दिया था। दोनों ही चुनाव हार गए। ज्योति मिर्धा विस चुनाव से पहले भाजपा में आई थीं। उन्हें विस चुनाव में भी टिकट दिया गया था, लेकिन वे चुनाव हार गईं। लोकसभा चुनाव में फिर से उन्हें मौका दिया गया, लेकिन इस बार भी वे चुनाव हार गईं। प्रदेश में अपने पक्ष में माहौल बनाने के लिए भाजपा ने चुनाव से ठीक पहले अभियान चलाकर कई पूर्व मंत्रियों और पूर्व विधायकों सहित हजारों की संख्या में नेताओं को को पार्टी में शामिल किया था, लेकिन इसका बहुत अधिक फायदा पार्टी को नहीं मिला।

वहीं, कांग्रेस में भाजपा के मुकाबले कम नेता आए। भाजपा सांसद के रूप में राहुल कस्वां का टिकट काट दिया गया। राहुल कस्वां ने भाजपा छोड़ दी और कांग्रेस में शामिल हो गए। कस्वां को कांग्रेस ने चूरू से टिकट दिया और कस्वां चुनाव जीत गए। कोटा सीट पर कांग्रेस ने भाजपा छोड़ कर आए प्रहलाद गुंजल को टिकट दिया, लेकिन वे चुनाव हार गए।

भविष्य में सियासी नुकसान की भी आशंका

प्रदेश की तीन लोकसभा सीटों पर गठबंधन की जीत

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. प्रदेश की 25 लोकसभा सीटों पर मंगलवार को आए चुनाव परिणाम की सबसे बड़ी बात यह है कि कांग्रेस गठबंधन को भी यहां पर फायदा मिला हैं। सीकर, नागौर और डूंगरपुर-बांसवाड़ा सीट पर इंडिया गठबंधन ने जीत दर्ज की हैं। डूंगरपुर-बांसवाड़ा से गठबंधन प्रत्याशी राजकुमार रौत, नागौर से हनुमान बेनीवाल और सीकर से अमराराम चुनाव जीते हैं। सियासी जानकारों का कहना है कि मौजूदा परिस्थितियों में भले ही कांग्रेस को गठबंधन के जरिए इन सीटों पर फायदा मिला हो लेकिन भविष्य में सियासी नुकसान की भी आशंका है। क्योंकि गठबंधन प्रत्याशियों की जीत से छोटे-छोटे दलों के नेताओं के भी अब हौसले बुलंद हैं। ऐसे में भविष्य में गठबंधन को लेकर दबाव और ज्यादा बढ़ेगा। डूंगरपुर-बांसवाड़ा सीट पर गठबंधन प्रत्याशी के तौर पर चुनाव जीते राजकुमार रौत चौरासी से बीएपी के विधायक भी हैं। वहीं नागौर से चुनाव जीते हनुमान बेनीवाल खींवसर से रालोपा विधायक हैं। उनके सांसद चुने जाने के बाद अब इन दोनों सीटों पर भी उपचुनाव होंगे। ऐसे में अब चर्चा यह है कि क्या विधानसभा उपचुनाव में भी कांग्रेस गठबंधन धर्म का पालन करके करते हुए ये सीटें गठबंधन के तहत बीएपी और रालोपा के लिए छोड़ेगी या फिर अपने प्रत्याशियों को चुनाव मैदान में उतारेगी।

इधर टिकट वितरण के दौरान राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी, भारत आदिवासी पार्टी और सीपीआईएम से गठबंधन को लेकर पार्टी में ही अंदर खाने विरोध के स्वर तेज हो गए थे। पार्टी के धड़े ने हाईकमान के यहां भी प्रदेश में गठबंधन नहीं करने और कांग्रेस प्रत्याशियों को ही चुनाव मैदान में उतरने की बात कही थी लेकिन विरोध को दरकिनार करते हुए गठबंधन किया गया।

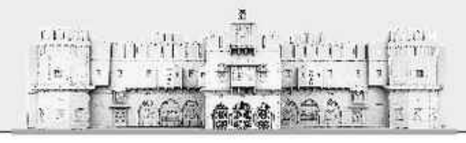

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। **–वाल्तेयर**

राजस्थान पत्रिका
संस्थापक
कर्पूर चन्द्र कुलिश

राजनीतिक दलों के लिए आत्मचिंतन का समय

अठारहवीं लोकसभा चुनाव के परिणाम जिस तरह सामने आए हैं, उससे सभी तरह के पूर्वानुमान धरे रह गए हैं। देखा जाए तो सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के लिए ही ये परिणाम अप्रत्याशित कहे जाएंगे। सत्ता पक्ष के लिए तो इसलिए क्योंकि उसका अबकी बार, चार सौ पार का नारा जनता ने साकार नहीं किया। यह आंकड़ा छूना तो दूर भाजपा अपने पांच साल पहले के प्रदर्शन को भी बरकरार नहीं रख पाई। वहीं विपक्षी दलों के गठबंधन 'इंडिया' के लिए ये नतीजे इसलिए अप्रत्याशित माने जा रहे हैं क्योंकि समुचित एकजुटता नहीं दिखाने के बावजूद वह एनडीए को टक्कर देता दिखाई दिया। वह और ताकत लगाता तो शायद परिणाम उसकी उम्मीदों के अनुरूप होते।

बहरहाल, चुनावी नतीजों के विश्लेषण और हार-जीत के कारणों के पोस्टमार्टम का दौर भी सभी दल करने वाले हैं। राजनीतिक दल इसे आत्मचिंतन या मंथन का नाम देते हैं। यह मंथन निश्चित ही दोनों पक्षों की तरफ से अपने-अपने तरीकों से होगा। भाजपा के लिए यह जानना जरूरी होगा कि आखिर उसे यूपी व राजस्थान जैसे बड़े प्रदेशों में इस तरह से पिछड़ने की नौबत क्यों आई? टिकट वितरण के दौरान उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया व पार्टी के अपने कार्यकर्ताओं को नजरअंदाज कर दलबदल कर आए नेताओं को मौका देना भी इसकी बड़ी वजह मानी जा सकती है। इसमें दो राय नहीं है कि राहुल गांधी की अगुवाई में कांग्रेस ने बेहतर प्रदर्शन किया है। लेकिन सियासी दृष्टिकोण से देखें तो यह बात भी सामने आती है कि कांग्रेस व दूसरे दल जो 'इंडिया' में शामिल हुए उन्होंने सत्ता में आने के अपने संकल्प के अनुरूप एकजुटता नहीं दिखाई। भाजपा नेतृत्व के लिए यह सचमुच चिंता का विषय होगा ही कि विधानसभा चुनावों में बेहतर प्रदर्शन देने वाली पार्टी को राजस्थान जैसे प्रदेश में आखिर लोकसभा चुनाव में क्या हो गया? जबकि मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में पार्टी ने शानदार प्रदर्शन किया। कानून व्यवस्था में सुधार के यूपी मॉडल का प्रचार करने वाले उत्तरप्रदेश में मतदाता क्यों उससे इस तरह से छिटक गया?

जब चिंतन बैठकों का दौर शुरू होगा तो एनडीए और इंडिया गठबंधन के अलावा इससे इतर दूसरे दलों में भी हार-जीत के कारणों का विश्लेषण हो तो जनता की उम्मीदों को जरूर ध्यान में रखना चाहिए। आगामी दिनों में अब सरकार गठन की प्रक्रिया भी पूरी हो जाएगी। संतोष इस बात का भी कि लोकसभा इस बार मजबूत विपक्ष के साथ होगी। ऐसे में जितनी पक्ष से उम्मीद है उतनी ही प्रतिपक्ष से भी कि वह अगले पांच साल में जनता की आवाज बनकर काम करेगा।

लोकसभा चुनाव परिणाम: अखिलेश-राहुल की जोड़ी ने उत्तरप्रदेश में किया कमाल

भाजपा को भारी पड़ गया अति आत्मविश्वास!

नई दिल्ली

भाजपाई रणनीतिकारों की कवायद पर नजर डालें तो समझना मुश्किल नहीं कि उन्हें कहीं न कहीं इसका थोड़ा-बहुत डर तो था कि बहुमत जुटाने के लिए संकट का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में संभावित नुकसान की भरपाई की कवायद पहले ही शुरू हो गई थी। यह भी समझना होगा कि पिछले साल विपक्षी दलों का गठबंधन 'इंडिया' बनने के पहले से ही भाजपाई रणनीतिकार सक्रिय हो गए थे। महाराष्ट्र में जो घटनाक्रम हुआ, उसका उद्देश्य सिर्फ वहां की सत्ता तक सीमित नहीं था। यह अहसास भी पार्टी नेतृत्व को जरूर रहा होगा कि शिवसेना, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा), कांग्रेस और कांग्रेस का गठबंधन महाराष्ट्र में मुश्किलें पेश कर सकता है। इसीलिए शिवसेना और राकांपा में क्रमशः एकनाथ शिंदे और अजित पवार के जरिए जो विभाजन का खेल हुआ उसमें भाजपा की शह का आरोप भी लगा। शिवसेना और राकांपा में विभाजन के बिना यह झटका ज्यादा जोरदार हो सकता था। बिहार के जिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर भाजपा तमाम तरह के हमले करती रही, उन्हें भी एक बार अपने खेमे में इसी रणनीति के तहत लाया गया। कारण साफ था कि 'इंडिया' गठबंधन रफ्तार पकड़ने लगा था। इसके सूत्रधार नीतीश के ही पाला बदल जाने से 'इंडिया' को जोरदार झटका लगा। अपना चुनावी गणित बेहतर करने के लिए ही भाजपा उत्तर प्रदेश में जयंत चौधरी के उस राष्ट्रीय लोकदल को राजग के पाले में लाई, जो पिछले एक दशक से समाजवादी पार्टी से गठबंधन में राजनीति कर रहा था।

भाजपाई रणनीतिकारों को यह भी अहसास था कि उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, झारखंड और गुजरात जैसे अपने प्रभाव क्षेत्रों में पार्टी अपना लगभग सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर चुकी है। ऐसे में वहां सीटें बढ़ने के बजाय घटने की ही आशंका रहने वाली है। अपने प्रभाव क्षेत्रों में झटके का अर्थ भी यही मानना चाहिए कि कोई भी पार्टी बहुमत का आंकड़ा छूने से चूक सकती है। वैसे भी गठबंधन तो सत्ता का खेल है। इसलिए किसी पर भी आंख मूंद कर विश्वास नहीं किया जा सकता। संभावित नुकसान की भरपाई के लिए भाजपा ने दक्षिण भारत में इसीलिए अपनी चुनावी व्यूह रचना नए सिरे से की। दक्षिण में वह अपने एकमात्र दुर्ग कर्नाटक की सत्ता भी पिछले साल कांग्रेस के हाथों गवां चुकी थी। कर्नाटक में भाजपा ने पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा के उसी जद सेक्यूलर से गठबंधन भी किया, जिसे विधानसभा चुनाव में परिवारवादी और भ्रष्ट बताया था, तो आंध्र प्रदेश में उन्हीं चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी से हाथ मिला लिया, जो 2018 में तमाम तरह के आरोप लगाते हुए एनडीए का साथ छोड़ गए थे। फिल्म अभिनेता पवन कल्याण की जन सेना पार्टी भी आंध्र प्रदेश में इस गठबंधन का हिस्सा बनी।

राजकुमार सिंह
लेखक
वरिष्ठ पत्रकार हैं
@patrika.com

विश्वसनीय स्थानीय नेतृत्व तथा क्षेत्रीय जन मानस को समझे-स्वीकारे बिना चुनावी रण नहीं जीता जा सकता।

तेलंगाना की सत्ता पिछले साल कांग्रेस ने केसीआर से छीन ली थी। वहां अपना प्रदर्शन और बेहतर बनाने के लिए भाजपा ने लोकसभा चुनाव को अपने और कांग्रेस के बीच दो ध्रुवीय बनाने का दांव चला तो तमिलनाडु और केरल में भी अपने पैर जमाने की हरसंभव कोशिश की। चुनाव परिणाम देखें तो एक हद तक भाजपा को इस कवायद का लाभ भी मिला है। अगर भाजपा ने दक्षिण के साथ ही ओडिशा में भी आक्रामक रणनीति नहीं अपनायी होती तो शायद अंतिम नतीजों में सत्ता का संतुलन बदल भी सकता था।

अगर भाजपा चार सौ पार के अपने दावों से पीछे छूट गई तो शायद उसका एक बड़ा कारण उसका अति आत्मविश्वास भी है। कुछ राज्यों में बड़े नेताओं को दरकिनार करना भी महंगा जरूर पड़ा होगा। उत्तर प्रदेश में भाजपा को सबसे बड़ा झटका लगना यही संकेत दे रहा है कि वहां की वास्तविक परिस्थितियों का सही आकलन करने से आलाकमान चूक गया। भाजपा का आकलन पश्चिम बंगाल की बाबत भी गलत साबित हुआ। विश्वसनीय स्थानीय नेतृत्व तथा क्षेत्रीय जन मानस को समझे-स्वीकारे बिना चुनावी रण नहीं जीता जा सकता–लोकसभा चुनाव परिणामों का यह संदेश भाजपा समेत सभी दलों के लिए एक जरूरी सबक है।

'इंडिया' एकजुटता से लड़ता तो हालात अलग होते

जालंधर

कांग्रेस नीत गठबंधन यानी इंडिया लोकसभा चुनाव में बहुमत पाने में तो विफल रहा, लेकिन उसने भाजपा की मुश्किल बढ़ा दी। लोकसभा चुनाव परिणामों में इंडिया गठबंधन ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए अपने और एनडीए की सीटों के फासले को इतना कम कर दिया है कि भाजपा अपने दम पर सामान्य बहुमत से दूर दिख रही है। दस बरस की एनडीए सरकार व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की एंटी इंकम्बेंसी का लाभ लेने में कांग्रेस की रणनीति काफी सफल रही जिसका श्रेय राहुल गांधी को ही दिया जाना चाहिए। इसी के बदौलत कांग्रेस ने पिछली बार की तुलना में शानदार जीत हासिल की। यह कांग्रेस की बेहतरीन वापसी है। वहीं दूसरी ओर ममता बनर्जी ने विधानसभा चुनाव की तरह लोकसभा चुनाव में भी भाजपा के मंसूबों को नाकाम कर दिया। इंडिया गठबंधन की सफलता में अखिलेश-राहुल की जोड़ी ने भी कमाल कर योगी, मोदी और शाह के तिलिस्म को ध्वस्त किया। इसी तरह बिहार में तेजस्वी–राहुल की जोड़ी कामयाब हो जाती तो सियासत की नई इबारत लिखी जाती।

इस बार लोकसभा चुनाव में कांग्रेस नीत गठबंधन का स्वरूप बदला हुआ था और इस नए इंडिया गठबंधन में तृणमूल कांग्रेस व आम आदमी पार्टी जैसे दल भी शामिल थे जो सर्वथा कांग्रेस विरोधी रहे। इस गठबंधन को मजबूती देने के लिए कांग्रेस ने इतना जरूर किया कि उसने 543 लोकसभा सीटों में से 328 सीटों पर ही अपने प्रत्याशी उतारे लेकिन जिस मोर्चे पर उसे मजबूती से लड़ना था, वहां उसकी मजबूती नहीं दिखी। मध्यप्रदेश, गुजरात, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों की लगभग 200 से अधिक लोकसभा सीटें ऐसी हैं जहां कांग्रेस व भाजपा का सीधा मुकाबला था। इन सीटों पर 2014 व 2019 में भाजपा की सफलता 90 प्रतिशत से अधिक रही हैं। यानी भाजपा को मिली कुल सीटों में से आधे से अधिक सीटें इसी सीधे मुकाबले वाली सीटों से हासिल हुई। 2024 के आम चुनाव में कांग्रेस ने इन सीटों पर मेहनत करने की बजाय उन राज्यों में ज्यादा सक्रियता दिखाई जहां क्षेत्रीय दल मजबूत थे और कांग्रेस वहां सबसे छोटा पार्टनर थी। कांग्रेस इन राज्यों को क्षेत्रीय दलों के भरोसे छोड़कर अपनी पूरी ताकत भाजपा से सीधे टक्कर वाली सीटों पर लगाती तो कांग्रेस अधिक फायदे में रह सकती थी। क्षेत्रीय दलों के प्रभाव वाले राज्यों की तुलना में कांग्रेस प्रभाव वाले राज्यों में उसका जनाधार (वोट) काफी अधिक है।

गिरिजाशंकर
वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक
@patrika.com

इंडिया गठबंधन में तृणमूल कांग्रेस व आम आदमी पार्टी जैसे दल भी शामिल थे जो सर्वथा कांग्रेस विरोधी रहे हैं।

कांग्रेस ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में उसी गारंटी का वादा किया जो नरेन्द्र मोदी पहले से करते आ रहे थे। कांग्रेस घोषणा पत्र का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जब अपने तरीके से विश्लेषण कर कांग्रेस को कठघरे में करने की कोशिश की तो कांग्रेसाध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखकर समय मांगा ताकि उन्हें अपनी पार्टी के घोषणा पत्र का अर्थ समझा सकें। अब उन्हें कौन बताए कि घोषणा पत्र का अर्थ मोदी को नहीं देश को जनता को समझाना था।

मई 2024 में लोकसभा के चुनाव होने थे। जुलाई 2023 में विपक्षी गठबंधन बना और जब उसके आकार लेने का समय आया तब जनवरी 2024 में राहुल गांधी फिर अपनी न्याय यात्रा में निकल पड़े जो मार्च तक चलती रही। वे अपनी यात्रा निकाल कर विपक्षी गठबंधन की अगुवाई करते तो संभव है तस्वीर कुछ और बन सकती थी। यह सही है कि कांग्रेस कम सीटें जीतने के बाद भी अखिल भारतीय पार्टी है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लगातार चुनौती देने वाले सबसे बड़े नेता राहुल गांधी ही हैं। ऐसे में यदि वे प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रूप में चुनावी मैदान में होते तो चुनावी परिदृश्य कुछ दूसरा होता। यह चुनाव ऐसा था जब कांग्रेस का विरोध करने वाले राजनीतिक दल भी कांग्रेस से गठबंधन करने के लिए सहर्ष तैयार थे। ऐसे में सबसे बड़े दल के नेता के नाते राहुल गांधी की प्रधानमंत्री पद की दावेदारी को स्वीकारने से किसी को गुरेज नहीं होता। इसके बावजूद यह माना जा सकता है कि इंडिया गठबंधन ने भाजपा को बड़ा झटका दिया। इसका भारतीय राजनीति पर गहरा असर होगा।

चार राज्यों में विधानसभा चुनाव: आंध्रप्रदेश में तेलुगुदेशम ने जगन मोहन रेड्डी के सपने को किया चकनाचूर

भाजपा ने दिखाई अपनी ताकत, कांग्रेस हाशिए पर

ढाई महीने की गहमागहमी के बाद आखिर ईवीएम का पिटारा खुल ही गया। लोकसभा चुनाव के नतीजों ने सबको चौंकाया है। एनडीए गठबंधन को भी और इंडिया गठबंधन को भी। चौंके वे लोग भी हैं जिन्हें एग्जिट पोल पर पूरा भरोसा था। विभिन्न एजेंसियों के एग्जिट पोल में जिस तरह आंकड़े जारी किए गए थे, उनसे एनडीए गठबंधन को शानदार जीत दिखाई गई थी, लेकिन नतीजे कुछ अलग ही आए। इसलिए एग्जिट पोल की विश्वसनीयता पर एक बार फिर से सवाल लगे हैं। अब नतीजे आ गए हैं। तस्वीर साफ हो गई है। भाजपानीत गठबंधन को पूर्ण बहुमत मिल गया है। सब कुछ सामान्य रहा तो एकाध दिन में नई सरकार भी सामने आ जाएगी। इस बार लोकसभा चुनाव के साथ चार राज्यों में भी विधानसभा चुनाव हुए थे। इन चार राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजे भी सामने आ चुके हैं। लेकिन लगता है कि लोकसभा चुनाव की चकाचौंध में उन पर किसी का खास ध्यान नहीं गया। इनमें आंध्रप्रदेश और ओडिशा जैसे दो बड़े राज्य हैं, तो अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम जैसे दो छोटे राज्य भी हैं।

पहले बात ओडिशा की, जिसने सबको काफी चौंकाया। पिछले 24 साल से राज्य की सत्ता संभाल रहे बीजू जनता दल के नवीन पटनायक की हार बेशक दिल्ली की सत्ता के गलियारों में नहीं गूंजी हो, लेकिन वहां के नतीजों ने इस राज्य में राजनीति की नई इबारत लिखी है। पिछले विधानसभा चुनाव में महज 23 सीटें जीतने वाली भाजपा ने यहां सत्ता की चौखट तक पहुंचकर सबको चौंका दिया। अपने दम पर बहुमत पाने वाली भाजपा ने यहां नवीन बाबू के जादुई करिश्मे को फीका कर दिया।

अनंत मिश्रा
वरिष्ठ पत्रकार
@patrika.com

चार राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा सबसे अधिक फायदे में रही। उसने अरुणाचल प्रदेश में सरकार तो बनाई ही, ओडिशा में भी पहली बार सत्ता पाई।

अब इसे एंटी इन्कम्बेंसी का नाम दिया जाए या नवीन पटनायक की बढ़ती उम्र का तकाजा कहा जाए, लेकिन इतना तय है कि आक्रामक तरीके से लड़ी भाजपा ने जीत दर्ज की। भाजपा ने ओडिशा में पहली बार कमल खिलाया। साथ ही देश में सबसे अधिक समय तक मुख्यमंत्री बनने के नवीन बाबू के सपने को भी धराशायी कर दिया। गौरतलब है कि नवीन पटनायक कभी एनडीए का ही हिस्सा हुआ करते थे। वर्ष 2009 में पटनायक और एनडीए की राहें अलग-अलग हो गई थी। इसके बाद वे ओडिशा में अपने दम पर सरकार चला रहे थे। इसके बावजूद एनडीए से उनके संबंध हमेशा ही सौहार्दपूर्ण और सहज रहे। इस बार चुनाव से पहले एक बार फिर चर्चा चली कि नवीन पटनायक एनडीए के पाले में आ सकते हैं, लेकिन सीट बंटवारे पर बात न बनने की वजह से दोनों की दोस्ती परवान नहीं चढ़ पाई।

दूसरे बड़े राज्य आंध्रप्रदेश में भी भाजपा के सहयोग से तेलुगुदेशम ने जगन मोहन रेड्डी के सपने को चकनाचूर कर दिया। राज्य के मुख्यमंत्री रह चुके चन्द्रबाबू नायडू ने पवन कल्याण की पार्टी के साथ मिलकर आंध्रप्रदेश में सत्ता बदलने में कामयाबी हासिल की। आंध्रप्रदेश की राजनीति में चन्द्रबाबू नायडू ने 175 सीटों में से तीन चौथाई से अधिक बहुमत पाकर बड़ा करिश्मा किया है। राज्य के नतीजों में एक चौंकाने वाली बात और निकलकर सामने आई है। वह यह कि दशकों तक राज्य में सत्ता की सिरमौर रही कांग्रेस यहां कहीं नजर नहीं आई। पवन कल्याण की पार्टी का 20 से अधिक सीटें जीतना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

आंध्र प्रदेश में अलग-अलग समय पर 13 वर्ष तक मुख्यमंत्री रहने के दौरान कई कीर्तिमान रच चुके नायडू को आइटी क्षेत्र में अपने राज्य को अग्रणी स्थान पर ले जाने का श्रेय दिया जाता हैं। नायडू ने आंध्र प्रदेश को विशेष राज्य के दर्जे को लेकर मार्च, 2018 में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) से नाता तोड़ लिया था, लेकिन वर्ष 2019 के विधानसभा व लोकसभा चुनाव में मिली करारी हार से उन्हें धक्का लगा। इस वर्ष चुनाव से पहले नायडू ने राजग में वापसी की और आंध्र प्रदेश में भाजपा, जनसेना के साथ मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ा।

पूर्वोत्तर राज्य अरुणाप्रदेश में भाजपा एक बार फिर अपने दम पर सरकार बनाने में कामयाब रही है। साठ सदस्यीय विधानसभा में पार्टी ने 46 सीटें जीतकर तीन चौथाई बहुमत हासिल किया। अरुणाचल भले छोटा राज्य हो लेकिन कितने राज्यों में किसकी सरकार की गिनती के समय इसका महत्त्व बढ़ जाता है। खास बात यह कि एक दल की बहुमत वाली सरकार होने से सरकार की स्थिरता को कोई खतरा नहीं होने वाला। पूर्वोत्तर के एक और हरे भरे और शांतिप्रिय राज्य सिक्किम में क्रांतिकारी मोर्चा ने राज्य में 32 में से 31 सीटों पर अपना परचम फहराया। चुनाव नतीजों में एक बड़ा उलटफेर और हुआ। देश में सबसे लम्बे समय तक मुख्यमंत्री रहने वाले पवन कुमार चामलिंग की पार्टी न सिर्फ एक सीट पर ही सिमट गई बल्कि स्वयं चामलिंग दोनों सीटों पर हार गए। राज्य में भाजपा अपना खाता भी नहीं खोल पाई।

चार राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा सबसे अधिक फायदे में रही। उसने अरुणाचल प्रदेश में अपनी सरकार तो बनाई ही, ओडिशा में पहली बार सत्ता का स्वाद चखा। आंध्रप्रदेश में उसने अपने सहयोगी दलों के साथ सत्ता हथियाई। इन चारों राज्यों में कांग्रेस कहीं भी उल्लेखनीय प्रदर्शन नहीं कर पाई।

कमल खिलावन | POLI नोक-झोंक | पंजा सिंह

आ अब लौट चलें

*(**नतीजे** आ गए हैं। एग्जिट पोल वाले खामोश। सभी बड़बोले खामोश। बोल रहा है तो बस वोट। बोली तो बस ईवीएम, बिना आरोपों के। बोला, तंत्र और बोला लोकतंत्र।)*

पंजा सिंह: *बागों में बहार है। जिया बेकरार है। चेहरे के रंग क्यों है फीके फीके, कहो अबकी बार किसकी सरकार है।*

कमल खिलावन: *हमारी ही है, नतीजे सामने हैं।*

पंजा सिंह: *हा हा... कितने पार.. 400, 300 या 200*

कमल खिलावन: *जो जीता वही सिकंदर।*

पंजा सिंह: *हां, कहावत तो सही है। बाकी तो क्या ही कहें। खुश हो न तुम।*

कमल खिलावन: *सच कहूं। सच्चा कार्यकर्ता कोई खुश हो सकता है। यूपी डूबा, बंगाल डूबा, राजस्थान में ओवर कॉन्फिडेंस ले डूबा। दिल्ली, एमपी, छत्तीसगढ़ ने लाज बचाई है।*

पंजा सिंह: *जिम्मेदार कौन ?*

कमल खिलावन: *राष्ट्रीय अध्यक्ष।*

पंजा सिंह: *हा हा, यही उम्मीद थी।*

कमल खिलावन: *तुम्हारे यहां जिम्मेदार कौन ?*

पंजा सिंह: *हार का ?*

कमल खिलावन: *नहीं, पुनर्जीवन का।*

पंजा सिंह: *तुम्हारा अतिउतावलापन। हम तो सच में तुम्हारे 400 पार के ट्रैप में थे। तुम्हारे बयान, तुम्हारे तेवर जनता को चुभ रहे थे, हमें दिख रहे थे, बस उसी से इतना आगे लाए।*

कमल खिलावन: *क्या चर्चा है तुम्हारे खेमे में?*

पंजा सिंह: *हम इतने कम थे कि सदन में पूरा पंजा भी नहीं दिखा पाते थे.. बस मुट्ठी भर से ही।*

कमल खिलावन: *अब ?*

पंजा सिंह: *पंजे की मुट्ठी अब मजबूत हो गई। कॉन्फिडेंस आ गया। अब नहीं सहेंगे। मजूबत हैं। हमारे गठबंधन के साथी साथ हैं, अब तुम्हारे कड़े फैसले कड़वे कर देंगे।*

कमल खिलावन: *गठबंधन, टूट गया तो...*

पंजा सिंह: *सेम टू यू... हम तो विपक्ष में हैं। तुम 70 क्या 272 नहीं ला पाए। गठबंधन टूटने की चिंता तुम करो।*

कमल खिलावन: *न.. न ऐसा नहीं होगा..*

पंजा सिंह: *पढ़े नहीं थे क्या बिहार में पोस्टर, नीतीश सबके हैं। वो रूठ गए तो? टीडीपी छूट गई तो?*

कमल खिलावन: *हे राम। ये तो सोचा ही नहीं।*

पंजा सिंह: *तुम तो बस राम की ही सोचते रहे। शंकराचार्य जी ने टोका भी कई बार।*

कमल खिलावन: *अब क्या करें?*

पंजा सिंह: *ऊपर वाले चाणक्य नीति का रट्टा लगा रहे होंगे। तुम हम पहले 5 राज्यों के विधानसभा चुनावों में और फिर अब चार महीने से लोकसभा चुनावों में भटक रहे हैं, चलो लौटो अपने अपने काम धंधे पर। हम कार्यकर्ता हैं, काम करके ही घर चलेगा।*

कमल खिलावन: *हां, हमें तो मेहनत करके ही खानी है।*

पंजा सिंह: *तो फिर अब मुलाकात नहीं होगी ?*

कमल खिलावन: *होगी ना, फिर 4 राज्यों में विधानसभा चुनाव हैं इसी साल, फिर मिलेंगे।*

पंजा सिंह: *और वो एक देश, एक चुनाव वाला फंडा ?*

कमल खिलावन: *चुनाव के नतीजे फिर से दिखाऊं क्या। चलो तुम तुम्हारी डगर.. हम चले हमारे नगर। अलविदा। (पीछे से अभी अलविदा न कहना गाना गूंज रहा है।)*

- सुप्रिया शर्मा

आपकी बात

सब मिलकर लगाएं पेड़

पेड़ों का महत्त्व हम सभी जानते हैं। इसलिए इनको लगाने के काम की पहल हर इंसान को खुद से करनी होगी। बच्चों को भी प्रकृति से जोड़ने का ज्यादा से ज्यादा प्रयास होना चाहिए जिससे वे भी पेड़ लगाएं।

-निर्मला देवी वशिष्ठ, राजगढ, अलवर

आज का सवाल

एग्जिट पोल की विश्वसनीयता पर सवाल क्यों उठते हैं?

ईमेल करें
edit@epatrika.com

patrika.com पर पढ़ें

पाठकों की प्रतिक्रियाएं

इसे स्कैन करें

पत्रिकायन का सवाल था, 'ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने के लिए जनता को कैसे प्रेरित किया जा सकता है?' ऑनलाइन भी देखें।
rb.gy/ufb6gc

बाजार धराशायी : एग्जिट पोल से 2,777 अंक चढ़ा था सेंसेक्स, रिजल्ट आने पर 4,389 अंक लुढ़का

गलत एग्जिट पोल... निवेशकों के ₹31 लाख करोड़ डूबे

मुंबई @ पत्रिका. एग्जिट पोल्स के बाद जितनी तेजी से सोमवार को शेयर बाजार ने उड़ान भरी, मंगलवार को चुनाव के नतीजे जारी होने के बाद बाजार उससे दोगुनी तेजी से नीचे गिरे। गलत एग्जिट पोल्स के कारण मंगलवार को निवेशकों के करीब 31 लाख करोड़ रुपए साफ हो गए। कंपनियों की बाजार पूंजी 426 लाख करोड़ रुपए से घटकर 400 लाख करोड़ के भी नीचे आ गई। इंट्राडे में एक समय तो कंपनियों की बाजार पूंजी 43 लाख करोड़ रुपए घट गई थी। इससे निवेशकों ने पिछले 6 महीने में जितना कमाया, उससे अधिक एक दिन में ही गंवा दिया। एग्जिट पोल्स सवालों के घेरे में हैं। कई राजनीतिक पार्टियां आरोप लगा रही हैं कि एग्जिट पोल्स के जरिए निवेशकों को गुमराह किया गया और कुछ लोगों और ब्रोकर्स ने इसका गलत फायदा उठाया।

सरकारी बैंकों के शेयर सबसे अधिक लुढ़के...

साल	एक साल में चढ़े	मंगलवार को टूटे
यूनियन बैंक	91.77%	-17.65%
बीओबी	33.72%	-15.74%
सेंट्रल बैंक	119.57%	-15.70%
पीएनबी	121.44%	-15.15%
केनरा बैंक	75.83%	-13.45%

20% की तेजी आई सरकारी बैंकों के इंडेक्स में इस साल, जबकि एक साल में पीएसयू इंडेक्स 66 फीसदी चढ़ा

एक दिन में ही पाकिस्तान की जीडीपी से अधिक संपत्ति डूबी

426 लाख करोड़ थी लिस्टेड कंपनियों की बाजार पूंजी सोमवार को जो मंगलवार को 400 लाख करोड़ से भी कम रह गई। बाजार पूंजी एक दिन में करीब ₹31 लाख करोड़ घटी, ***यह घाटा पाकिस्तान की पूरी जीडीपी 28.5 लाख करोड़ रुपए से भी अधिक***

रेकॉर्ड ऊंचाई से 6500 अंक तक लुढ़का सेंसेक्स, हालांकि कारोबार के अंत में 4389 अंक गिरकर हुआ बंद

सभी इंडेक्स में बड़ी गिरावट...

इंडेक्स	गिरावट
सेंसेक्स	-5.74%
निफ्टी	-5.93%
नि. नेक्स्ट 50	-9.34%
बीएसई मिडकैप	-7.88%
बीएसई स्मॉलकैप	-8.23%
निफ्टी माइक्रोकैप	-7.26%

21% तक गिरे अदाणी ग्रुप की कंपनियों के शेयर, सबसे कम 0.6% गिरावट निफ्टी आइटी इंडेक्स में आई, ***विशेषज्ञ अब आइटी स्टॉक्स में निवेश की दे रहे सलाह***

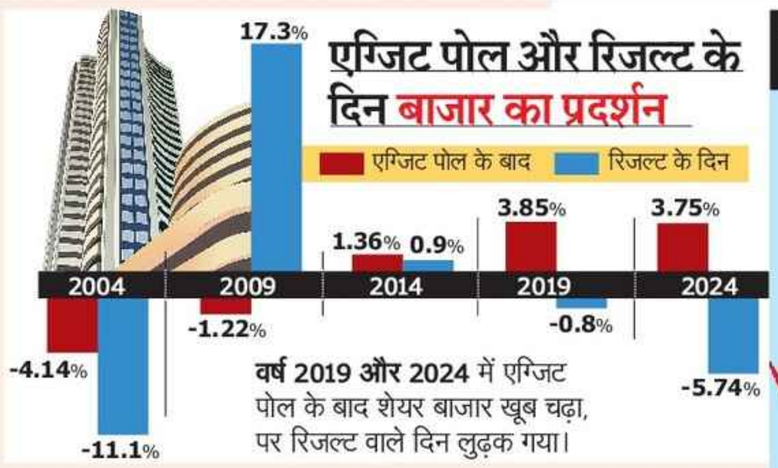

एग्जिट पोल और रिजल्ट के दिन बाजार का प्रदर्शन

एग्जिट पोल के बाद | रिजल्ट के दिन

वर्ष 2019 और 2024 में एग्जिट पोल के बाद शेयर बाजार खूब चढ़ा, पर रिजल्ट वाले दिन लुढ़क गया।

एग्जिट पोल से चढ़े, रिजल्ट आने पर लुढ़के

इंडेक्स	रिजल्ट के बाद	एग्जिट पोल के बाद
पीएसयू बैंक	-15.14%	8.40%
निफ्टी बैंक	-7.95%	4.07%
ऑयल-गैस	-11.80%	6.81%
बीएसई पीएसयू	-15.68%	7.67%
बीएसई पावर	-14.25%	7.60%
निफ्टी मेटल	-10.64%	3.34%
निफ्टी रियल्टी	-9.62%	5.95%

838 कंपनियों में मंगलवार को लगा लोअर सर्किट, ***यानी इन शेयरों के कोई खरीदार नहीं थे***

3,873 स्टॉक में से 3,402 शेयरों में गिरावट दर्ज की गई, ***70 शेयर 20% से अधिक टूटे***

57 लाख करोड़ रुपए से अधिक है म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री की कुल प्रबंधनीय संपत्ति, ***एक साल में ही 40% का इजाफा***

अदाणी ग्रुप के निवेशक 'कंगाल'

एग्जिट पोल से सोमवार को अदाणी की कंपनियों में बड़ी तेजी आई थी, रिलायंस के शेयर में 4 साल की सबसे तेज उछाल आई थी। मंगलवार को इनके शेयर धराशायी हो गए।

अंबानी-अदाणी की कंपनियों के निवेशकों को हुआ बड़ा घाटा

कंपनी	सोमवार को	मंगलवार को
रिलायंस इंडस्ट्रीज	5.84%	-7.48%
अदाणी एंटरप्राइजेज	6.8%	-19.3%
अदाणी ग्रीन	13.5%	-19.2%
अदाणी पोर्ट्स	10.2%	-21.2%
अदाणी पावर	15.6%	-17.3%
अदाणी गैस	7.8%	-18.8%
अदाणी एनर्जी	6.8%	-20%

(₹3 लाख करोड़ रुपए** मंगलवार को अदाणी समूह की कंपनियों में निवेश करने वालों के हो गए साफ, **रिलायंस की बाजार पूंजी भी 1.20 लाख करोड़ रुपए घटी)

पिछले एक साल से लोगों को मल्टीबैगर रिटर्न दे रहे पीएसयू शेयर हुए क्रैश...

पीएसयू	सोमवार को तेजी	मंगलवार को फिसले
गेल	12.87%	-17.32%
पीएफसी	12.62%	-23.0%
आरईसी	12.44%	-25.15%
बीएचईएल	7.67%	-20.94%
एनटीपीसी	9.21%	-15.42%
हुडको	7.54%	-19.98%

(14% से 25% तक लुढ़के सभी सरकारी कंपनियों के शेयर मंगलवार को)

चौंतरफा बिकवाली के बावजूद हिंदुस्तान यूनिलीवर, नेस्ले इंडिया, टीसीएस, एशियन पेंट और सनफार्मा के शेयर हरे निशान में रहे

मुंबई. दलाल स्ट्रीट पर मंगलवार को बाजार में भारी गिरावट आने से हताश निवेशक।

इन वजहों से गिरा बाजार

1 ***गलत एग्जिट पोल:*** बाजार में गिरावट की सबसे बड़ी वजह एग्जिट पोल के अनुमानों का हकीकत में तब्दील नहीं होना रहा। ***एग्जिट पोल में एनडीए को 350, 400 तक सीट मिलने का अनुमान लगाया गया था, जबकि एनडीए 300 का आंकड़ा भी नहीं छू पाया।***

2 ***मिलीजुली सरकार:*** आम चुनाव में भाजपा को ***स्पष्ट जनादेश नहीं मिला, जिससे केंद्र में गठबंधन वाली सरकार बनेगी। इससे पूरे शेयर बाजार का सेंटीमेंट बिगड़ गया।***

3 ***बिकवाली: :*** सोमवार को विदेशी निवेशकों ने 6,000 करोड़ रुपए और घरेलू संस्तागत निवेशकों ने 2000 करोड़ रुपए के शेयर खरीदे थे, पर ***मंगलवार को एफआइआइ ने 12,500 और डीआइआइ ने 3320 करोड़ रुपए के शेयर बेचे।***

शेयर बाजार : सभी एग्जिट पोल पूरी तरह फेल...

भारतीय शेयर बाजार में कोरोना के बाद 4 साल की सबसे बड़ी गिरावट

मुंबई @ पत्रिका. लोकसभा चुनाव के नतीजों से सभी एग्जिट पोल पूरी तरह फेल हो गए। सभी एग्जिट पोल ने भाजपा की अगुवाई वाले एनडीए को 350 से ज्यादा सीटें मिलने का अनुमान जताया था। नतीजे इससे अलग हैं। एग्जिट पोल को लेकर सोमवार को रॉकेट की रफ्तार से चढ़े शेयर बाजार में मंगलवार को नतीजों के रुझान को लेकर भारी गिरावट दर्ज की गई। सेंसेक्स इंट्रा-डे ट्रेड के दौरान 6000 अंकों से अधिक की गिरावट के साथ 70,234 के निचले स्तर तक चला गया। यह 5.74% यानी 4389 अंक गिरकर 72,079 पर बंद हुआ। मार्च 2020 के बाद सेंसेक्स की यह सबसे बड़ी इंट्रा-डे गिरावट है। निफ्टी भी 5.93% गिरावट के साथ 21,884 पर बंद हुआ। सबसे अधिक गिरावट पीएसयू स्टॉक्स में आई। सरकारी कंपनियों के शेयर 14% से लेकर 25% तक लुढ़क गए। अदाणी समूह की सभी कंपनियों के शेयर औंधे मुंह गिर गए।

आरोप: शेयर बाजार को एग्जिट पोल से कृत्रिम बूस्टर डोज दी गई

नई दिल्ली @ पत्रिका. कांग्रेस ने मंगलवार को लोकसभा चुनाव के रुझानों के आने के बाद शेयर बाजार में आई भारी गिरावट को लेकर कहा कि बाजार को एग्जिट पोल के माध्यम से कृत्रिम बूस्टर डोज दी गई थी। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा, गलत एग्जिट पोल के कारण सोमवार को बाजार में निवेशकों ने खूब निवेश किया, लेकिन रिजल्ट आने के बाद मंगलवार को बाजार धराशायी हो गया, जिससे निवेशकों को लाखों करोड़ रुपए डूब गए। वहीं, आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने शेयर बाजार की भारी गिरावट के लिए एग्जिट पोल्स को जिम्मेदार बताया। उन्होंने एग्जिट पोल्स पर देश की जनता और संस्थाओं को भ्रमित करने का आरोप लगाते हुए कहा कि सर्वे एजेंसियों को जनता से माफी मांगनी चाहिए। जबकि यूट्यूबर ध्रुव राठी ने कहा, एग्जिट पोल फ्रॉड की जांच होनी चाहिए, क्या शेयर बाजार में हेराफेरी करने के लिए ऐसा किया गया था? या ऐसा करने के लिए किसी ने धमकाया था?

मनमोहन-मोदी काल में इतनी बढ़ी कमाई

कार्यकाल	बाजार में तेजी	कंपनियों की आय बढ़ी
यूपीए-1	160%	64%
यूपीए-2	68%	61%
मोदी-1.0	58%	19%
मोदी-2.0	97%	102%

मोदी सरकार में बढ़ा इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश

वर्ष	एयूएम
2014	1,84,602
2019	7,24,034
2024	24,74,323

(राशि करोड़ रुपए में, 15 करोड़ से अधिक डीमैट खाते हैं अभी देश में, जो 2019 में 3 करोड़ से भी कम थे)

मोदी 2.0 में इन सेक्टर्स में सबसे अधिक तेजी

- **315%** बीएसई पावर
- **291%** बीएसई रियल्टी
- **278%** कैपिटल गुड्स
- **228%** बीएसई इंफ्रा
- **200%** बीएसई पीएसयू

अब क्या करें निवेशक

निकट भविष्य में भारतीय अर्थव्यवस्था के फंडामेंटल्स में बदलाव की संभावना नहीं है। इसलिए निवेशकों के लिए एसआइपी शुरू करने, या चल रहे एसआइपी में मासिक किस्त बढ़ाने पर विचार करने का अच्छा समय है। सराकर की नीतियां इसी तरह रहेंगी तो भारत की वृद्धि जारी रहेगी। राजनीतिक झटकों का बाजार की दिशा पर लॉन्ग टर्म असर नहीं होता है। इसलिए निवेशक धैर्य रखें और बाजार में आई बड़ी गिरावट का फायदा खरीदारी करके उठाएं। **- रामदेव अग्रवाल,** फाउंडर, मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज

एग्जिट पोल के दिन तेजी की बड़ी वजह विदेशी निवेशकों की शॉर्ट कवरिंग थी। निवेशक अभी अदाणी की कंपनियों और पीएसयू स्टॉक्स को लेकर सतर्क रहें। गिरावट में इन मजबूत कंपनियों के शेयर खरीदें जिनका फंडामेंटल मजबूत है और वैल्यूएशन आकर्षक है। अभी एचडीएफसी, एसबीआई लाइफ, अल्ट्राटेक , वोडाफोन जैसे स्टॉक अच्छे वैल्यूएशन पर मिलेंगे। **- संजीव भसीन,** निदेशक, आइआइएफएल सिक्योरिटीज

क्या गठबंधन सरकारें शेयर बाजार के लिए बुरी होती हैं?

विश्लेषकों का कहना है कि गठबंधन सरकार जरूरी नहीं कि शेयर बाजार के लिए खराब हो, लेकिन सरकार को अपने कार्यकाल के लिए एक स्पष्ट कार्ययोजना बनानी चाहिए। यूबीएस के विश्लेषकों का कहना है कि भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन में भी सुधारों की रफ्तार लगभग समान रहने की संभावना है, लेकिन कुछ कड़े फैसले जैसे विनिवेश, जमीन अधिग्रहण कानून देरी हो सकती है।

गठबंधन सरकारों के दौरान प्रदर्शन

अवधि	पीएम	रिटर्न
दिसंबर 1989-नवंबर 1990	वीपी सिंह	96%
नवंबर 1990-जून 1991	चंद्रशेखर	-2.2%
जून 1991-मई 1996	पीवी नरसिम्हा राव	181%
मई 1996-जून 1996	अटल बिहारी बाजपेयी	-2.6%
जून 1996-अप्रेल 1997	एचडी देवगौड़ा	2.1%
अप्रेल 1997-मार्च 1998	इंद्र कुमार गुजराल	0.6%
मार्च 1998-मई 2004	अटल बिहारी बाजपेयी	30%
मई 2004-मई 2009	मनमोहन सिंह	180%
मई 2009-मई 2014	मनमोहन सिंह	68%

विशेषज्ञ बोले- नई सरकार में जारी रखनी चाहिए आर्थिक सुधार और पीएलआइ योजनाएं, चुनाव के नतीजों का उद्योग की रफ्तार पर नहीं होगा असर

एनडीए सरकार गठन के बाद बाजार में थमेगी उठापटक, आएगी तेजी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मुंबई. लोकसभा चुनाव में भाजपा अपने दम पर बहुमत जुटाने में नाकाम रही। इस नतीजे के चलते अंकों के लिहाज से शेयर बाजार में इतिहास की सबसे बड़ी गिरावट देखने को मिली। केंद्र में फिर से मोदी सरकार बनने के आसार हैं, लेकिन यह सरकार सहयोगी दलों के सहारे एनडीए की होगी। बाजार के जानकारों का कहना है आने वाले दिनों में मार्केट में उतार चढ़ाव देखने को मिल सकता है। इंडिया विक्स में रेकॉर्ड उछाल इस बात की तस्दीक भी कर रहा है। बाजार पर दबाव बढ़ गया है, लेकिन सरकार गठन के बाद इस उठापटक के थमने की उम्मीद है और बाजार में तेजी लौट सकती है।

- नादिर गोदरेज ने कहा, एग्जिट पोल गलत रहे। बाजार ने दोनों दिन जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया दी। इन नतीजों से उद्योग प्रभावित नहीं होगा।
- वैल्यूस्टॉक्स के शैलेश सर्राफ ने कहा, बाजार मुनाफे पर चलता है। 10 साल पहले भी देश में गठबंधन सरकारें थीं और बाजार ने शानदार रिटर्न दिया था।

जारी रहेंगे आर्थिक सुधार

भारतीय कंपनियों के सीईओ का अनुमान है कि नई सरकार आर्थिक सुधारों को जारी रखेगी और नीतिगत निरंतरता बनाए रखेगी, भले ही एनडीए को आम चुनावों में अनुमान से कम सीटें मिली हों। उन्होंने कहा कि नई सरकार को भी पीएलआइ योजनाएं जारी रखनी चाहिए। गोदरेज इंडस्ट्रीज के चेयरमैन नादिर गोदरेज ने कहा, एग्जिट पोल काफी गलत नजर आए। बाजार ने दोनों दिन जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया दी। इन नतीजों से उद्योग प्रभावित नहीं होगा। एनारॉक के चेयरमैन अनुज पुरी ने कहा, रियल एस्टेट उद्योग हमेशा स्थिर सरकार की उम्मीद कर रहा है जो यह सुनिश्चित करे कि चल रही योजनाओं और बुनियादी ढांचे के विकास के निवेश में कोई रुकावट नहीं आए।

बीमा उद्योग पर कोई असर नहीं होगा इंश्योरेंस सेक्टर से जुड़े लोगों का कहना है कि चाहे कोई भी गठबंधन सत्ता में क्यों न आए, इससे बीमा कारोबार की वृद्धि प्रभावित नहीं होगी। एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस की प्रबंध निदेशक विभा पाडलकर ने कहा, बीमा नियामक के मार्गदर्शन में हम 2047 तक 'सभी के लिए बीमा' का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। इस लक्ष्य के लिए काफी कुछ करना होगा और इस दिशा में काफी कामशुरू हो चुका है।

आम बजट पर होगा बाजार का फोकस...

बोकरेज फर्म मोतीलाल ओसवाल ने अपनी रिपोर्ट में कहा, बाजार का मुख्य ट्रेंड इस ओर इशारा कर रहा कि अगले कुछ दिनों में उठापटक थमने के तेजी लौट सकती है। उठापटक थमने के बाद बाजार देश के मजबूत फंडामेंटल्स पर फोकस करेगा। नई सरकार के गठन के अगले कुछ हफ्तों में नई सरकार पहली और पूर्ण बजट वित्त वर्ष 2024-25 के लिए पेश करेगी, जिसमें कैपिटल एक्सपेंडिचर, मैन्युफैक्चरिंग, गांव में खपत बढ़ाने के उपाय, कृषि कल्याण और क्रेडिट लेंडिंग बढ़ाने पर फोकस होगा।

भाजपा को पूर्ण बहुमत नहीं मिलने का असर...

बॉन्ड पस्त, आरबीआइ ने रुपए को निचले स्तर पर जाने से रोका

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मुंबई. सत्तारूढ़ भाजपा आम चुनाव में अपने बूते बहुमत हासिल करने में कामयाब नहीं हो पाई, इस वजह से मंगलवार को भारतीय रुपए और सरकारी बॉन्ड में कमजोरी आई। डॉलर के मुकाबले रुपया 83.53 पर बंद हुआ। सोमवार को भाव 83.14 पर था। मंगलवार को रुपए में 6 फरवरी 2023 के बाद की सबसे बड़ी गिरावट दर्ज की गई। आरबीआइ ने डॉलर बिक्री के जरिए मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप किया, जिससे रुपए को निचले स्तर पर जाने से रोका जा सका।

बॉन्ड यील्ड पर दबाव

करूर वैश्य बैंक में ट्रेजरी प्रमुख वी आर सी रेड्डी ने कहा, बाजार में उतार-चढ़ाव जुलाई तक चलेगा। आरबीआइ विदेशी मुद्रा बाजार में दखल देने को तैयार रहेगा, क्योंकि अस्थिर सरकार के कारण आगे भी गिरावट की आशंका है और केंद्रीय बैंक किसी भी तेज गिरावट को होने नहीं देगा। 10 वर्षीय सरकारी बॉन्ड का यील्ड सोमवार के 7.94% के मुकाबले मंगलवार को 7.04% पर आ गया, जो 6 अक्टूबर 2023 के बाद से बेंचमार्क यील्ड में एक दिन की सबसे बड़ी गिरावट है।

परिवार

WORLD ENVIRONMENT DAY

विश्व पर्यावरण दिवस विशेष

राजेंद्र सिंह
पर्यावरणविद्
(वाटरमैन ऑफ इंडिया)

पर्यावरणीय भारतीय आस्था में प्रकृति के रक्षण-संरक्षण करने की परंपरा थी। ***पर्यावरण संरक्षण के लिए भारतीय आस्था पेड़-पौधे, पानी, मिट्टी, हवा, नदी सबका पूजन करती थी और सबको प्रेम व सम्मान दिलाती थी।*** *यह जानती थी कि, इन्हीं पंचमहाभूतों के योग से हम बने हैं। इसलिए पंचमहाभूतों का सर्जन करने वाले जो तत्त्व हैं, उन सबके योग से हमारे चारों तरफ के आवरण, पर्यावरण का निर्माण हुआ है।* ***हमारे चारों तरफ का आवरण स्वस्थ होगा, तो हम स्वस्थ होंगे। इस बात पर गौर करने की जरूरत है। कदम बढ़ाएं और...***

आओ फिर आएं कुदरत के करीब

भारतीय आस्था में परिवार और पर्यावरण, इन दोनों का गहरा संबंध था। जब तक यह संबंध रहा तब तक हम दुनिया के गुरु थे। हम दुनिया के गुरु हमारी पर्यावरणीय आस्था के कारण ही थे। हम पंचमहाभूतों को जानते थे और उन्हीं को अपना भगवान मानकर, उनकी पूजा करते थे। भगवान यानी ***भ- भूमि, ग-गगन, व-वायु, अ -अग्नि और न-नीर है।*** इसी भगवान को हमने जब तक जाना, सृजनकर्ता माना, तब तक गहरी आस्था थी। इसी ने हमें पर्यावरण संरक्षक-संवर्धक बनाया था।

जब बदलने लगा शिक्षा का स्वरूप

आज परिवारों में प्राकृतिक प्रेमाचार ही पर्यावरण संरक्षक बनाएगा। यह व्यवहार बाल्यकाल से ही प्राकृतिक संस्कारों में विद्यमान हैं। सभी बाल संस्कार प्राकृतिक प्रेम, सम्मान से लेकर विश्वास, निष्ठा, भक्ति भाव के बीज बोते हैं। पुराने जमाने में पर्यावरण शब्द का भावार्थ हमारे व्यवहार में था। हम जिसे सृष्टि कहते हैं, उस सृष्टि का सृजन हमारी सृजनशीलता से सराबोर था लेकिन प्रकृति का प्रेम आधुनिक शिक्षा ने खत्म कर दिया। जब से विद्या का स्थान आधुनिक शिक्षा ने लिया तब से ही ये बर्बादी का दौर शुरू हुआ। विधुत, सौर ऊर्जा, दिन-रात्रि, सृष्टि, खगोल, भूगोल, काल, भूगर्भ, जलवायु, अग्नि, जीव आदि विद्या को समाप्त कर दिया। जब से यह विद्या समाप्त हुई और हमारी आधुनिक शिक्षा में कॉमर्स, एग्रीकल्चर, एनिमल, बर्ड्स कीपिंग, एनिमल ट्रेनिंग, मशीन्स, व्हीकल डिजाइन, टेक्सटाइल आदि नई शिक्षा आई, जिसने मूल विद्या को समाप्त कर दिया। पहले हम किशोर से युवा होने तक परिवार में ही पंचमहाभूतों के योग से अपने शरीर का निर्माण कर विद्या को जान लेते थे। सूर्य, चंद्र, मेघ, विद्या को युवा होते-होते जान पाते थे। प्रौढ़ होते-होते दिन-रात, सृष्टि, खगोल, भूगोल, गर्भ, प्रकाश, नदी प्रबंधन, जीव-जंतु विद्या जानकर, परिवार में सभी प्राकृतिक उपक्रम करते रहते थे।

आधुनिकता की दौड़ में भूले प्रकृति प्रेम

जब भारतीय आस्था ही परिवार की पर्यावरणीय संरक्षक थी, तब विद्या हमारे परिवारों को प्राकृतिक योग से चलाती थी। वर्ष 1850 में मैकाले की शिक्षा पद्धति ने हमारी पर्यावरणीय आस्था को प्रकृति से तोड़ दिया। शिक्षा ने प्राकृतिक प्रेम, सम्मान, श्रद्धा, आस्था, ईष्टभाव, भक्तिभाव को ही पारिवारिक जीवन से मिटा दिया है। पारिवारिकता को ही तोड़ दिया है। आज जो परिवार जितना ज्यादा आधुनिक एवं तथाकथित शिक्षित है, उतना ही प्रकृति से अलग है। जिनमें 'विद्या' है, वे प्रकृति प्रेमी हैं।

फिर अपनानी होगी धराड़ी परंपरा

हमारे परिवार की पारिवारिकता जिन प्राकृतिक गुणों, मूलों, द्रव्यों से निर्मित हुई है, उसके प्रति हमारे अंदर आपसी प्रेम बढ़ाना होगा। वैदिक काल तक भारत के परिवारों में बड़ी गहरी धराड़ी परंपरा थी, (सभी परिवार अपने वंश का एक पेड़ और अपने वंश का एक जीव को जीवन का आधार व धरा मानकर, उसका रक्षण-संरक्षण करते थे) तब तक जैव विविधता बनी रही। जलवायु परिवर्तन की आपदा नहीं थी। अभी हमारे परिवारों में इन प्राकृतिक पंचमहाभूतों के प्रति प्रेम का नजरिया टूट गया है। इस आपदा से मुक्त रहना चाहते हैं, तो हमें फिर से भारतीय पारिवारिक परंपरा का निर्वहन करना होगा।

तभी सार्थक होगा पर्यावरण दिवस मनाना

भारतीय विद्या हमारे जीवन व परिवार में मजबूती से गहरे प्राकृतिक प्रेम का विश्वास पैदा करती थी। इसलिए हमारे परिवार प्राकृतिक प्रेमी पर्यावरण संरक्षक कहलाते थे। हमारे पंचमहाभूत की पूजा होती थी, जैसे नीर- नदी को नारायण मानकर सम्मान देते थे, यह हमारी प्राकृतिक व पर्यावरणीय सम्मान व आस्थाजनक व्यवहार था। इसी व्यवहार को अब फिर से जीवन में लाकर पर्यावरण रक्षक बनाना है। यही पर्यावरण दिवस मनाने की प्रक्रिया को प्रतिपादित करेगा।

पर्यावरण संरक्षण के चार मूलमंत्र

1 जीवन में हो प्राकृतिक सदाचार

पहले बच्चे सुबह पृथ्वी पर पैर रखने से पहले
"समुद्र वसने देवी पर्वत स्तन मंडिते।
विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यं पाद स्पर्शं क्षमश्वमेव।"
श्लोक का वाचन करके ही उठते थे। जब बच्चे पृथ्वी पर अपना पैर रखने के लिए पृथ्वी से क्षमा मांग कर प्रणाम करेंगे, तो यही विद्या उन्हें विनम्र बनाएगी।
"तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये।
आयासायापरं कर्म विद्यान्या शिल्पनैपुणम॥"
विद्या ही पर्यावरण सुधार कार्यों में हमें हमारी जिम्मेदारी का अहसास कराएगी। पर्यावरण दिवस को पर्यावरण फैशन नहीं, बल्कि जीवन में प्राकृतिक सदाचार लाकर पंचमहाभूत संरक्षण का कार्य करना होगा। हमें पेड़ लगाने, मिट्टी का कटाव रोकने, जल संरक्षण के लिए बारिश की प्रत्येक बूंद को सहेजकर पूरे परिवार में सभी को समझाने का काम करना होगा।

2 भारतीय परंपरा करें पुनर्जीवित

पारिवारिकता को पुनर्जीवित करना अब हमारी जरूरत है। यह तभी संभव होगा, जब बच्चे को कम्प्यूटर, लेपटॉप, मोबाइल गेम्स छोड़कर मिट्टी के खेल, मिट्टी से महल, पौधे लगाने, पानी देने के खेल, अपनी रसोई में सात्विक भोजन ग्रहण करने की भारतीय परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए प्रेरित करेंगे। तभी प्रकृति का रक्षण-संरक्षण किया जा सकेगा।

3 जन्मदिवस पर लगाएं एक पौधा

जन्मदिवस के जितने भी अवसर हैं उन सब पर प्रतिवर्ष पौधे लगाना और परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु के बाद परिवारजनों को उनका नाम पेड़ों के साथ जोड़कर, पेड़ लगाना, बच्चों को बचपन से ही पेड़ों के साथ खेलना सिखाएं। ये हमारी भारतीय परंपरा है। हम भारतीय परिवारों की परंपराओं को खोजें और एक बार उससे सीखकर बच्चों को सिखाएं।

4 बाबू नहीं, इंसान बनना है हमें

आज जिन परिवारों में तरुण, किशोर, युवा हैं उनमें लेपटॉप, मोबाइल का बहुत आकर्षण मैकॉले की शिक्षा से आया है। जो शिक्षा हमें इंसान नहीं, बाबू बनाती है। इसलिए अब सभी बाबू बनना चाहते हैं, प्रकृति के साथ जीवन जीने की विद्या हम पूर्ण रूप से भूल चुके हैं। जबकि प्रकृति का पोषण करने का काम भारत के परिवार से ही आरंभ होता है। इसलिए जब हम प्रकृति का रक्षण-संरक्षण अपना अंग मानकर करने लगेंगे, तभी पर्यावरण दिवस मनाने का उद्देश्य पूरा किया जा सकता है।

ईको फ्रेंडली डेकोर

ग्रीन बिल्डिंग और इंटीरियर रख सकता है घर-ऑफिस को कूल

नीलम मित्तल
ग्रीन बिल्डिंग एक्सपर्ट एवं इंटीरियर डिजाइनर

शहरीकरण की तीव्र गति और कंक्रीट के जंगलों का तेजी से फैलना पर्यावरण के सामने सबसे बड़ी चुनौती हैं। इसका परिणाम हैं कि पूरा देश लगातार बढ़ते तापमान के दुष्प्रभावों का सामना कर रहा हैं। इस ग्रीष्म ऋतु में उत्तर भारत के कई इलाकों का तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच गया हैं। इस तापमान में वृद्धि के कारण का जवाब मध्यमवर्गीय शहरवासियों के बदलते जीवन परिवेश में छिपा हैं।

अब हर कस्बे और शहर के प्रत्येक मध्यमवर्गीय परिवार तक एसी पहुंच चुका हैं। एसी की आउटर बॉडी से उगती गर्म हवा ने शहरों का तापमान बढ़ा दिया हैं। मल्टीस्टोरी अपार्टमेंट में कम जगह में ज्यादा फ्लैट ने एसी की आवश्यकता को और बढ़ा दिया हैं। ऐसे में पृथ्वी की सतह के बढ़ते तापमान और ग्लेशियर्स को पिघलने से बचाने में ग्रीन बिल्डिंग ही कारगर उपाय हैं। जानते हैं घर-ऑफिस को कैसे पर्यावरण के अनुकूल बनाया जाए-

जब खरीदना हो घर

मल्टीस्टोरी अपार्टमेंट में फ्लैट ले रहे हैं या स्वतंत्र घर खरीद रहे हैं तो इस बात का ध्यान रखें कि घर ग्रीन बिल्डिंग मानकों पर खरा उतरता है या नहीं। घर में प्राकृतिक रोशनी, वेंटिलेशन और वेजिटेशन का ध्यान रखा गया है या नहीं। दिन में सभी कक्षों में पर्याप्त सूर्य की रोशनी आनी चाहिए ताकि बिजली जलाने की आवश्यकता न पड़े। हर कमरे में क्रॉस वेंटिलेशन होना चाहिए। इमारत में वाटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था हो। इस तरह ग्रीन बिल्डिंग कॉन्सेप्ट को ध्यान में रखते हुए आप बिना एसी के 10 से 15 डिग्री तक तापमान कम रख सकते हैं।

इंटीरियर में करें ये बदलाव

- **कालीन** घर की साज-सज्जा को बढ़ाती है, लेकिन गर्मियों में इसे हटा देना चाहिए।
- **घर** को ठंडा रखने के लिए खिड़की, दरवाजों पर हल्के रंग, प्रिंट और हल्के फैब्रिक के पर्दे लगाने चाहिए।
- **गर्मी** के कारण घर का तापमान न बढ़े, इसके लिए खिड़कियों पर और घर के बाहर शेड लगाकर गर्मी को कम कर सकते हैं।
- **घर** को ठंडा रखने और खूबसूरत दिखाने के लिए आप हैंगिंग प्लांट का उपयोग कर सकते हैं।

एक एसी के बदले एक पेड़ लगाएं

यदि आप अपने घर या ऑफिस में एक एसी लगाते हैं तो उसके बदले में एक पेड़ जरूर लगाएं। एक एसी- एक पेड़ के लिए हर एक नागरिक को प्रतिबद्ध होना ही होगा, तभी हम तेजी से गर्म हो रही धरा को बचा सकते हैं। यदि पर्यावरण है तो मानव सभ्यता का विकास भी होगा, यदि पर्यावरण का संरक्षण नहीं कर पाए तो आधुनिक विकास बेमानी साबित होगा।

ट्रेंड सेटर...

जीरो वेस्ट लाइफस्टाइल के लिए नयना कर रहीं जागरूक

सस्टेनेबिलिटी एजुकेटर और कंटेंट क्रिएटर नयना प्रेमनाथ को सर्टिफाइड एनवायर्नमेंटल मैनेजर का टाइटल मिल चुका है।

सस्टेनेबिलिटी इंफ्लुएंसर के रूप में नयना प्रेमनाथ को कई सम्मान मिल चुके हैं। वह वर्ष 2019 से अपने सोशल मीडिया अकाउंट से लोगों को यह सिखा रही हैं कि कैसे वे लो वेस्ट लिविंग को अपने जीवन में शामिल कर सकते हैं। दरअसल, बेंगलूरु में रहने वाली नयना ने ब्यूटी और लाइफस्टाइल यूट्यूबर के रूप में सोशल मीडिया की दुनिया में कदम रखा। फिर पर्यावरण प्रबंधक का टाइटल लेने के बाद वह कचरे और अपशिष्ट प्रबंधन के लिए काम करने लगीं, हालांकि इस दौरान उन्होंने कई चुनौतियों का सामना किया।

कपड़ों के कचरे को इकट्ठा करने में कंपनियों की सक्रिय रूप से सहायता करने के बाद नयना ने फटे हुए कपड़ों को भी बाहर फेंकने के बजाय उपयोगी सामग्री बनाकर लोगों को जीरो वेस्ट के लिए प्रेरित किया, ताकि कपड़ों के प्रदूषण को कम किया जा सके। समुद्र किनारे कचरे के ढेर को कम करने एवं लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक करने के लिए नयना ने समुद्री तटों की सफाई में भी योगदान दिया। पुराने कपड़ों को उपयोगी बनाने के लिए उन्होंने अपना स्टार्टअप शुरू किया। इसके माध्यम से वह पुराने कपड़ों से हेयरबैंड एवं अन्य सामग्री तैयार कर रही हैं। उनकी इस पहल को लोगों ने सराहा और उन्हें ऑर्डर भी मिल रहा है।

परिवार पकौड़ा @ हॉट टॉपिक

पौधरोपण करवाएं

पिछले सप्ताह का सवाल था कि ***आपके नजरिए से बच्चों को पर्यावरण संरक्षण से कैसे जोड़ा जा सकता है।*** *अधिकतर पाठकों का कहना है कि बच्चों को जलवायु परिवर्तन के बारे में बताएं, पेड़-पौधे लगाने के लिए प्रेरित करें।*

स्कूल शिक्षा में हो शामिल

बच्चों को स्कूल शिक्षा के माध्यम से वन संरक्षण, पौधरोपण आदि की जानकारी देनी चाहिए जिससे पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा की जा सके। उन्हें वनों की कटाई के दुष्प्रभाव बताने चाहिए।
राजन गेदर, *सूरतगढ़*

जलवायु परिवर्तन पर बात करें

बच्चों को प्राकृतिक सौंदर्य को समझने के लिए प्रेरित करें। उन्हें जलवायु परिवर्तन के बारे में समझाएं। पर्यावरण की देखभाल के तरीकों के बारे में बात करें, जैसे प्लास्टिक का प्रयोग कम करना, पेड़ लगाना।
रेखा परिहार, *जोधपुर*

बच्चों की आदतों में करें बदलाव

पैदल चलें, साइकिल का उपयोग करें या बस से स्कूल जाएं। नहाते समय एवं ब्रश करते समय पानी बंद रखें। स्कूल में बगीचा लगाएं और उसके लिए कम्पोस्ट बनाएं, बच्चों से पौधरोपण करवाएं।
धीरज चौधरी, *कोटा*

परिवार पकौड़ा का इस हफ्ते का सवाल है। ***आपके नजरिए से पिता बच्चों के साथ कैसे क्वालिटी टाइम बिता सकते हैं?*** *अपनी राय हमें* **9057531688** *नंबर पर अपने फोटोग्राफ के साथ साझा करें।*

शॉर्ट रीड **2700** *लीटर पानी लगता है एक सूती शर्ट बनाने में (वर्ल्ड रिसोर्स इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के अनुसार)*

मन के पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए आवश्यक है कि जिस अन्न को हम ग्रहण करें वह अन्न भी सात्विक स्तर का हो। आज के इस आधुनिक युग में उत्पादन से अधिक उपभोग होने लगा है।

पर्यावरण और मन

गुलाब कोठारी
प्रधान संपादक
पत्रिका समूह
@patrika.com

जैसे-जैसे हमारा अन्न दूषित होता जाएगा, हमारा मन उतना ही मलिन होता जाएगा। शरीर रोगों का संग्रहालय बनता जाएगा।

वर्तमान युग में व्यक्ति मन की समस्याओं से संत्रस्त है। सुख एवं शांतिपूर्ण जीवन एक सपना बनकर रह गया है। इसका प्रमुख कारण मन का असंतुलन ही है। वास्तव में मन कोई स्थाई तत्त्व नहीं है। वह तो चेतना से सक्रिय बनता है। मन का अर्थ है–संकल्प-विकल्प, स्मृति, चिन्तन और कल्पना। मन भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों में बंटा हुआ है, अतीत की स्मृति करने वाला, भविष्य की कल्पना करने वाला और वर्तमान का चिन्तन करने वाला मन ही है। स्मृति, कल्पना और चिन्तन तीनों ही चंचल हैं। और मन इन तीनों से युक्त रहता है। इसीलिए मन ही चंचल बना रहता है। अर्जुन इसी मन की चंचलता को बताते हुए कृष्ण से कह रहे हैं कि मन बड़ा ही चंचल, प्रमथनशील, दृढ़ (जिद्दी) और बलवान है। उसका निग्रह करना मैं वायु की तरह अत्यन्त कठिन मानता हूं–

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।
(गीता 6.34)

मन की गति बहुत तेज है। जो व्यक्ति इस बात को समझ लेता है कि मन के साथ कब किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, कब मन को दौड़ने के लिए स्थान देना चाहिए, कब मन को बांध कर रखना चाहिए, तभी वह वर्तमान में जी सकता है। मन के साथ चलने वाला कभी सफल नहीं हो सकता। जो मन के साथ नहीं चलता किन्तु मन की गति पर आवश्यकता के अनुरूप नियन्त्रण करता है, वही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है। यहां जिस मन की बात की जा रही है, वह हमारा इन्द्रिय मन है। इन्द्रिय विषयों से जुड़ी रहती हैं। मन ही प्रत्येक इन्द्रिय के साथ तत्-तत् विषय की ओर दौड़ता रहता है। इस इन्द्रिय मन पर निग्रह करना आवश्यक है।

मन अन्न से बनता है, अतः अन्न ही मन को साधने का प्रधान साधन कहा गया है। शरीर की धातुओं में रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र इन सप्त धातुओं के बाद अन्न ओज में तथा ओज मन में परिणत हो जाता है। हमारा मन अन्न से ही प्रभावित रहता है। गीता में कृष्ण ने सात्विक, राजसिक तथा तामसिक भेद से तीन प्रकार के अन्नों की विवेचना की है। इनमें से सात्विक अन्न को ग्रहण करने वाला ही मन का निग्रह करने में पूर्ण सफल हो सकता है। राजसिक और तामसिक अन्न व्यक्ति को विपरीत दिशा में ले जाने वाले होते हैं। मन के पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए आवश्यक है कि जिस अन्न को हम ग्रहण करें वह अन्न भी सात्विक स्तर का हो। आज के इस आधुनिक युग में उत्पादन से अधिक उपभोग होने लगा है। तब रासायनिक उर्वरकों तथा अन्य साधनों से अन्न के उत्पादन को बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है। जिससे अन्न का दूषण हो रहा है। कृत्रिम बीज, खाद, कीटनाशक के अलावा बिना मौसम के भी चीजों को पैदा करना शुरू कर दिया। निषेधात्मक भोजन का उपयोग बढ़ा। औद्योगीकरण ने तो खाने का स्वरूप ही बदल दिया। सब सामग्री डिब्बे में बंद मिलने लगी। बासी मानें या न मानें, बासी तो है ही।

खाने की वस्तुओं में सिंथेटिक रंग, स्वाद, खुशबू और प्रिजर्वेटिव (जो वस्तु को खराब होने से रोकते हैं) सभी कुछ तो कृत्रिम है, नकली है। प्राकृतिक कुछ भी नहीं। आज के सभी शीतल पेय इसी श्रेणी में आते हैं। फिर, शरीर की रोधक क्षमता कैसे बनी रहेगी? दूध के बने अनेक उत्पाद महीनों तक खाए जाते हैं। यही हाल मैदे की सामग्री का है। हम तो विज्ञापनों के जोर पर हर उस चीज की तरफ दौड़ते हैं, जो शरीर के लिए दूषण का मार्ग है। तली हुई चीजें भी हमारे स्वाद का प्रमुख अंग बन गई हैं। जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन। दोष किसका?

हमारा शरीर केवल प्राकृतिक वस्तुओं को ही पचा सकता है। सिंथेटिक सामग्री का तो विसर्जन करना ही पड़ेगा। जब तक शरीर स्वस्थ है, विसर्जन होता रहता है। जहां कहीं थोड़ी कमजोरी आने लगी कि ये सब चीजें शरीर में ही अटक जाती हैं और समय के साथ विकाराल रूप धारण कर लेती हैं। इन सबके चलते बाहरी पर्यावरण शुद्धि भी हमें नहीं बचा सकती।

जैसे-जैसे हमारा अन्न दूषित होता जाएगा, हमारा मन उतना ही मलिन होता जाएगा। शरीर रोगों का संग्रहालय बनता जाएगा। प्रतिरोधक क्षमता घटती जाएगी। हमारा व्यक्तित्व दुर्बल होता जाएगा। राग-द्वेष, लोभ-मोह, घृणा और क्रोध जैसे मानसिक विकार हमें अपने मूल स्वरूप से दूर करते रहेंगे। सुख-शांति की खोज में हम जीवन भर अशान्त रहेंगे। भीतरी पर्यावरण के दूषण से पार पाना ही हमें वास्तव में सुखी रख सकेगा।

gulabkothari@epatrika.com

अवॉर्ड विजेता...

मानव संबंधों पर लिखा

अमरीकी लेखिका यूडोरा एलिस वेल्टी लघुकथाएं और उपन्यास लिखने में तो पारंगत थीं ही, वे एक अच्छी फोटोग्राफर भी थीं। मूल रूप से दक्षिण अमरीका के विषय में लिखती थीं। 1973 में उनके उपन्यास द ऑप्टिमिस्ट'स डॉटर को पुलित्जर पुरस्कार से नवाजा गया।

2000 में उन्हें अंतरराष्ट्रीय लेखन का अमरीकी अवॉर्ड मिला और इसी वर्ष नेशनल वीमेन'स हॉल ऑफ फेम सूची में उन्हें शामिल किया गया। वे पहली जीवित लेखिका थीं जिनका लेखन प्रतिष्ठित लाइब्रेरी ऑफ अमरीका सीरीज में प्रकाशित हुआ।

1973 में मिसिसिपी राज्य ने उनके नाम पर 2 मई को यूडोरा वेल्टी डे घोषित किया। उनकी विख्यात कृतियों में लघुकथा संग्रह- ए कर्टन आफ ग्रीन, द वाइड नेट एंड अदर स्टोरीज, द गोल्डन एपल्स, 13 स्टोरीज, द कलेक्टेड स्टोरीज ऑफ यूडोरा वेल्टी, मून लेक एंड अदर स्टोरीज, मोरगाना - टू स्टोरीज फ्रॉम द गोल्डन एपल्स आदि हैं। जबकि उपन्यासों में द रॉबर ब्राइड ग्रूम, डेल्टा वेडिंग, द पांडर हार्ट, द शू बर्ड, लूजिंग बैटल्स, द ऑप्टिमिस्ट्स डॉटर एवं निबंध श्रेणी में द आइ ऑफ द स्टोरी, वन राइटर्स बिगनिंग, ऑन राइटिंग आदि खूब चर्चित हुईं ।

उन्होंने एक सक्रिय फोटोग्राफर की भूमिका भी निभाई । वे एक रेडियो स्टेशन और अखबार के लिए भी काम करती थीं। वेल्टी के लेखन की मूल विषय वस्तु मानव संबंधों की गूढता थी।

वेल्टी का नजरिया सदैव आशावादी रहा। उनकी रचनाओं में गहराई और सच्चाई के साथ-साथ हास्य और मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता भी है। 1992 में उन्हें लघुकथाओं के लिए रिया अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

कहानी...

उन्हें लगा था कि कोई जड़ से थोड़ी न कटवा रहा हूं। पर मि. रस्तोगी की हालत को देख कर उन्हें बहुत पछतावा हुआ और उन्होंने मन ही मन नए अशोक के पौधे लाकर गार्डन की दूसरी तरफ रोपने का संकल्प किया। शायद यही उनका पश्चाताप था।

पांच पांडव

गीता चौबे गूंज

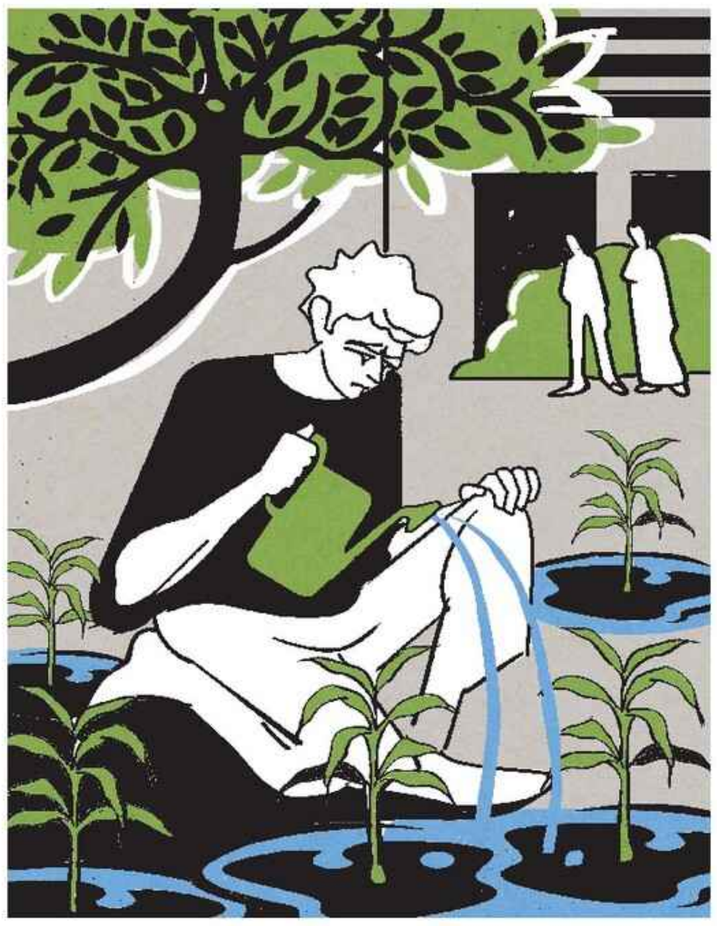

'किसने किया यह हाल मेरे इन पांच पांडवों का?' बुरी तरह से चीख पड़े मि. रस्तोगी! जब सुबह सैर पर निकलते समय, उनकी नजर सोसायटी के गार्डन में लगे अशोक के उन पांचों वृक्षों पर पड़ी, जो बुरी तरह से कतरे हुए थे। वे जब भी घर से निकलते, एक नजर उन वृक्षों पर अवश्य डालते, जिन्हें वे प्यार से 'पांच पांडव' कहा करते थे। उन पांचों को अपने हाथों से ही लगाया था उन्होंने। बड़े प्यार से सींचते, सहलाते उनके कोमल पत्तों को। बिल्कुल अपने सगे बच्चे की तरह। रोज पुचकारने भी जाते थे। जब तुम सभी बड़े हो जाओगे और मैं भी बूढ़ा हो जाऊंगा, तब शांत-सी दोपहरी में, तुम्हारी छाया में, एक खटिया डालकर लेट जाऊंगा और फिर हम सभी खूब बातें करेंगे।' सभी पौधे भी ऐसे झूमते मानो अपनी सहमति दे रहे हों। वात्सल्य का एक अनजाना रिश्ता बंध गया था रस्तोगी साहब एवं उन वृक्षों के साथ।

हालांकि सोसायटी के गार्डन की देखभाल के लिए माली की बहाली की गई थी, परंतु मि. रस्तोगी को इन अशोक वृक्षों से विशेष स्नेह था और इनकी देखभाल की जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं ले रखी थी। उनके प्राण बसते थे इनमें और यह बात सोसायटी के सभी लोग जानते थे। अक्सर उन्हें छेड़ा भी करते, 'कहिए रस्तोगी साहब! कैसे हैं आपके बच्चे?'

रस्तोगी साहब भी बड़े उत्साहित होकर, उनके विकसित होने की, नई-नई टहनियों एवं उन पर नए-नए पत्ते निकलने की कहानी को बड़े रोचक अंदाज में सुनाना शुरू कर देते थे।

मुझे आज भी वह दिन अच्छी तरह से याद है जब मि. रस्तोगी ने उन अशोक वृक्षों को सोसायटी में लाने की कहानी सुनाई थी। मुझे सोसायटी में आए हुए अभी कुछ ही दिन हुए थे। एक दिन शाम को मैं गार्डन में टहल रही थी तो देखा कि रस्तोगी साहब हाथ में खुरपी लिए गार्डन में मिट्टी खोद रहे थे। पूरा शरीर, मिट्टी से सन गया था। मैं उत्सुकतावश उनके पास गई और कहा, 'अरे भाई साहब! जब माली काका हैं ही तो आप क्यों परेशान हो रहे हैं? जो पौधा लगाना हो उनको दे दीजिए, वे लगा देंगे।'

'आप नहीं समझेंगी भाभी जी! ये पौधे नहीं, मेरी जान हैं। वैसे भी माली के पास ढेरों काम हैं, ऐसे में ये उपेक्षित न हो जाएं।' पौधे लगाने के बाद वे मिट्टी सने हाथों को धोकर गार्डन में पड़ी बैंच पर बैठ गए। मुझे भी बैठने को इशारा किया और इन पौधों को सोसायटी में लाने की कहानी सुनाने लगे। मेरी उत्सुकता भी काफी बढ़ गई थी। मैं मनोयोग से उनकी कहानी सुनने लगी।

'किसी काम से कचहरी गया था मैं। काम खत्म कर वापस लौट रहा था। पास में ही पौधों की नर्सरी थी। अपने प्रकृति-प्रेम के कारण मैं खिंचा हुआ सा नर्सरी के अंदर दाखिल हुआ।

इधर-उधर देख रहा था कि फूलों की कोई नई किस्म दिखे तो ले जाऊं। मेरी छत पर लगभग सभी किस्मों के फूल गमलों में लगे हुए हैं। कोई नया पौधा नहीं दिखाई दिया तो मैं वापस लौटने लगा। तभी मेरी नजर एक किनारे रखे हुए पौधों पर पड़ी। एक जैसे और एक ही लंबाई के अशोक वृक्ष के पांच पौधे थे। लगा जैसे आशा भरी निगाह से मुझे देख रहे हों। पास गया तो लगा, उनके कोमल पत्ते जैसे मुझसे कह रहे हों,'हमें भी साथ ले चलो न।'

पता नहीं कैसे मेरे अंदर एकदम से वात्सल्य भाव उमड़ पड़ा। परंतु मैं तो फ्लैट में रहता हूं। गमले में इन पौधों का समुचित विकास नहीं हो पाएगा। यह सोच कर मैं भारी मन से लौट आया। पर घर आकर भी मेरा मन उदास रहा। बार-बार उन पांचों स्वस्थ पौधों की छवि, आंखों के सामने आती रही। एक आइडिया दिमाग में आया कि क्यों न उन्हें लाकर सोसायटी के गार्डन में लगा दूं। पांचों वृक्ष मेरी आंखों के सामने तो रहेंगे। इस खयाल के आते ही सुबह के इंतजार में मैंने पूरी रात बेचैनी में काटी।

अगले दिन मैं सोसायटी के ऑफिस में गया। सोसायटी सेक्रेटरी उस वक्त ऑफिस में बैठे हुए थे। उन्होंने खुशी-खुशी गार्डन में अशोक के पौधों को लगाने की अनुमति दे दी। उस वक्त मुझे इतनी खुशी हुई जिसे शब्दों में व्यक्त कर पाना कठिन है। मैं दुबारा उस नर्सरी में गया। रास्ते भर यही प्रार्थना करता रहा कि वे पौधे बिके न हों। मैं सीधा उस जगह पर पहुंचा, जहां पिछले दिन पांचों पौधे रखे हुए थे। पर उन पौधों को वहां न देखकर, मेरा दिल बैठ गया। मैं बदहवास सा नर्सरी के मालिक के पास काउंटर की ओर दौड़ पड़ा। नर्सरी के मालिक को देखते ही मेरे मुंह से निकला, 'क्या वे पांचों पांडव बिक गए?'

नर्सरी का मालिक हक्का-बक्का हो मुझे इस तरह देखने लगा जैसे किसी अजायबघर के पुतले को देख लिया हो। मैंने तुरंत अपने को संभालते हुए कहा- 'मेरा मतलब है कल मैंने वहां उस किनारे पर एक जैसे पांच अशोक के पौधे देखे थे, पर अब वे वहां नहीं हैं, क्या उन्हें कोई खरीद कर ले गया?'

बात समझते ही नर्सरी के मालिक ने हंसते हुए कहा, हा..हा..हा..अच्छा वो? नहीं साहब! बिके नहीं हैं। उधर किनारे पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा था, इसलिए मैंने इधर सामने लगा दिए हैं। परंतु आपने पांडव क्यों कहा?'

'भाई! मैंने कल पहली बार उन्हें एक साथ देखा तो मेरे मन में तुरंत पांच पांडवों की छवि आ गई। मैं इन्हें लेने आया हूं और मैं इनका नामकरण भी पांडव भाइयों के नाम का ही करूंगा। आप इन्हें उठवा कर मेरी गाड़ी में रखवा दें। इनकी कीमत मैं अभी आपको दे देता हूं।

अब ये मेरे पांच पांडव हैं। इनकी बनावट के हिसाब से मैंने इनका नामकरण किया है। देखिए कितने सुंदर लग रहे हैं मेरे पांचों पांडव युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। सभी मेरे पुत्र समान हैं। इस कहानी को सुनाते समय मि. रस्तोगी के हृदय में उमड़ रही वात्सल्य की धार से मैं स्वयं भी अंदर तक भीग गई थी।

तब से मैं भी रोज शाम को टहलते समय उन अशोक के पौधों को अवश्य एक नजर देखती थी। मि. रस्तोगी सचमुच बड़े प्यार से उनकी देखभाल कर रहे थे। देखते ही देखते सभी पौधे तरुणावस्था में पहुंच गए। यह सब मि. रस्तोगी के अथक परिश्रम और स्नेह का ही परिणाम था। पूरी सोसायटी की शान बन चुके थे वे पांचों-पांडव। उसी सोसायटी में एक मि. व्यास थे जिन्हें इन वृक्षों का बढ़ना अच्छा नहीं लगता था। इसका कारण भी था। उनका घर पहली मंजिल पर था। पेड़ों के ऊंचे और घने होने से उनके घर में रोशनी नहीं पहुंच पाती थी। कई बार दबी जुबान से उनको कटवाने का प्रस्ताव सोसायटी की कमेटी में लाया भी था उन्होंने, पर मि. रस्तोगी के जुनूनी प्रेम को देखकर कोई हिम्मत नहीं कर पाया।

अभी पिछले हफ्ते मि. रस्तोगी ऑफिस के काम से चार दिन के लिए दौरे पर गए थे। मि. व्यास को यह अच्छा अवसर लगा और उन्होंने पेड़ों की व्यवस्थित छंटाई के नाम पर बाहर के किसी माली को बुलाकर उन अशोक वृक्षों की छंटाई करवा दी। छंटाई के नाम पर लगभग पूरी तरह से ठूंठ बना दिया। तेज गर्मी की वजह से लोगों का निकलना कम हो पा रहा था, जिसके कारण इस जघन्य कार्य को होते हुए कोई नहीं देख पाया।

आज अचानक मि. रस्तोगी की चीख ने सबको हैरत में डाल दिया। हो-हल्ला सुनकर, मैं भी बाहर निकल आई और मि. रस्तोगी के पांचों पांडवों की यह हालत देख कर मुझे भी रोना आ गया। मि. रस्तोगी का क्या हाल हुआ होगा, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं था। मि. व्यास भी सिर झुकाए खड़े थे। उन्हें इतना अनुमान नहीं था कि स्थिति इस तरह की हो जाएगी। उन्हें लगा था कि पत्ते तो फिर आ ही जाएंगे। कोई जड़ से थोड़ी न कटवा रहा हूं। पर मि. रस्तोगी की हालत को देख कर उन्हें बहुत पछतावा हुआ और उन्होंने मन ही मन नए अशोक के पौधे लाकर गार्डन की दूसरी तरफ रोपने का संकल्प किया। शायद यही उनका पश्चाताप था।

दिल से...

छांव

मीठे रसीले आमों का स्वाद लेते रवि को वो समय याद आने लगा जब बाबूजी ने आम की गुठली को आंगन में बोया था। धीरे- धीरे वह बीज पौधा और फिर एक विशाल छायादार और फलदार वृक्ष बन गया।

रवि ने अपनी आंखों के सामने ही बीज को पेड़ बनते देखा था। बाबूजी ने कितने प्यार से इसकी देखभाल की थी। उनको गुजरे सात साल हो गए लेकिन यह पेड़ हमेशा उनकी मौजूदगी का अहसास कराता है। लगता है मानो परिवार उनकी ही छांव में है।

'पापा, आज पर्यावरण दिवस है न?'

बेटे की आवाज ने रवि को खयालों से बाहर निकाला।

उसने आम का बीज लेकर बेटे के साथ फिर वही कहानी दोहराई। आम के पेड़ के बगल में ही बीज मिट्टी में दबा दिया।

ज्योति गिरि

अपने अनुभव साझा करें

हमारे साथ बांटिए रोचक अनुभव और प्रेरक प्रसंग। चयनित अनुभव को प्रकाशित किया जाएगा। आपकी रोचक याद या आपसे जुड़ा प्रेरक प्रसंग हमें 250 शब्दों में लिखकर वॉट्सऐप या ईमेल करें।

9057531688 parivar@epatrika.com

लघुकथा...

पर्यावरण विशेषज्ञ

पर्यावरण दिवस पर एक पर्यावरण विशेषज्ञ को मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में बैठाया गया। जब बोलने की बारी आई तो उन्होंने पौधरोपण पर बहुत ही उपयोगी और ज्ञानवर्धक भाषण दिया। उपस्थित लोगों ने उनकी खूब तारीफ की।

तालियों की गूंज कम होते-होते वे अपने स्थान पर बैठ गए।

उसी समय उनका मोबाइल घनघनाया।

'हैलो कौन?' विशेषज्ञ जी ने पूछा।

'साहब मैं बोल रहा हूं कलवा.. आपका चौकीदार।' सामने से जवाब आया।

'बोल कलवा क्या बात है?' साहब ने पूछा।

'बंगले के सामने वाले पेड़ को टिंबर वर्क्स वाले काटने आए हैं,वे कह रहे हैं आपसे बात हो गई है? ..और आपको पांच हजार एडवांस भी दे दिए हैं।' कलवा ने कहा।

'अरे हां...तू धीरे बोल...बीस हजार में वो शीशम का पेड़ बेच दिया है। ख्वामखाह इन दिनों उसकी छाया में राहगीरों का जमावड़ा रहता है। इसके कट जाने से तुझे उन्हें भगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी..तेरा काम भी हल्का हुआ।'

विशेषज्ञ जी ने मुस्कुराते हुए फोन काट दिया।

गोविन्द भारद्वाज

माइंड गेम...

अर्थ तलाशिए

नीचे दिए शब्दों के अर्थ तलाशिए। उत्तर अंत में हैं।

1.टकसाल	7.तकावी	13.अज्ञेय	19.सर्वज्ञ
2.शत्रुघ्न	8.अजातशत्रु	14.थाती	20.विश्वसनीय
3.शाश्वत	9.अन्योदर	15.हस्तलिखित	21.वैयाकरण
4.षटराग	10.युयुत्सा	16.द्रुतगामी	22.त्रिदोष
5.सार्वदेशिक	11.अमर्त्य	17.छापामार	23.आत्मकथा
6.क्षम्य	12.अजेय	18.अतिक्रमण	24.लिप्सा

1.सिक्के ढालने का कारखाना 2.शत्रु का नाश करने वाला 3.सदैव रहने वाला 4.संगीत के छह राग 5.सब देशों से संबंध 6.क्षमा पाने योग्य 7.ऋण से आर्थिक सहायता 8. जिसका कोई शत्रु नहीं जन्मा हो 9.अन्य माता से जन्मा भाई 10.युद्ध की इच्छा रखने वाला 11.जो कभी नहीं मरता 12.जिसे जीता न जा सके 13.जो जाना न जा सके 14.किसी के पास रखी दूसरे की वस्तु 15.हाथ का लिखा 16.शीघ्र चलने वाला 17.छिपकर आक्रमण करने वाला 18.हद के बाहर जाना 19.सब कुछ जानने वाला 20.विश्वास के योग्य 21.व्याकरण जानने वाला 22.वात,पित्त व कफ 23.लेखक की जीवनी 24.लाभ की इच्छा

काव्यांजलि...

कुण्डलियां

विश्वम्भर मोदी

शुद्ध वायु जल मिले हैं
प्रकृति से उपहार।
सब जीवों के लिए है
यही जीवन की धार।
यही जीवन धार इन्हें
मत करो प्रदूषित।
कर्मन सिद्धि संवार
मानिए इनको पूजित।

पशु पक्षी और वनस्पति
भोज ना हो अवरुद्ध
इनको भी मिलता रहे
नीर वायु सब शुद्ध।।

लगे विषैली गैस पर
उत्सर्जन प्रतिबंध।
होय प्रदूषित वायु, जल
आती है दुर्गंध।
आती है दुर्गंध
सांस ले पाना दूभर।
कठिन हुआ है जीना
जीवों का अब भू पर।
करे विकास के नाम
धरा की चादर मैली।
आंखों में हो जलन
लगे जब गैस विषैली।।

आज दिवस पर्यावरण
करो प्रकृति उद्धार।
विविध जीव और वनस्पति
करते यही पुकार।
करते यही पुकार
रुके जल वायु प्रदूषण।
जो नर रखे ध्यान
कहलाएगा कुल भूषण।

पर्यावरण संतुलन
जीवनरक्षा काज।
दिखे खाली भू जहां
वृक्ष लगा दो आज।।

बोधकथा

अपना भविष्य

ललितपुर में आनंदगिरि महात्मा आए, वे अत्यंत दयालु, आध्यात्मिक, विद्वान एवं ज्ञान से परिपूर्ण थे। गांव में उन्होंने अपनी शक्ति से अनेक परिवर्तन किए। गांव के लोगों की अनेक समस्याओं का समाधान किया। गांव के चोरों को उनकी जनकल्याण की भावना रास नहीं आई। उन्हें लगने लगा आनंदगिरि ललितपुर में थोड़े समय और रुक गए तो उनका क्या होगा?

इस समस्या के समाधान के लिए चोरों ने आनंदगिरि के खिलाफ एक षडयंत्र रचा जिसमें यह तय किया गया कि वे आनंदगिरि महात्मा के पास जाएंगे तथा उनसे प्रश्न करेंगे। यदि आनंदगिरि ने प्रश्न का उत्तर सही दिया तो वे इस गांव में रह सकते हैं अन्यथा नहीं। और प्रश्न होगा हम में से किसी के हाथ में एक चिड़िया का चूजा है वह जिंदा है या नहीं, बताइए ? यदि आनंदगिरि बोले वह चूजा जिंदा है तो उसे दबाकर मार देना और यदि कहे मरा है तो उसे मत दबाना।

चोर आनंदगिरि के पास पहुंचे तथा अपना प्रश्न किया। आनंदगिरि प्रश्न को सुनकर थोड़ी देर मौन रहे तत्पश्चात बोले, उस चूजे का भविष्य तो तुम्हारे हाथ में है। ठीक जिस प्रकार तुम्हारा स्वयं का भविष्य तुम्हारे हाथ में है। तुम चाहो तो उसे दबा कर मार दो और तुम चाहो तो उसे बचा लो। इस जवाब ने चोरों का जीवन बदल कर रख दिया। अब उन चोरों ने चोरी करना बंद कर समाज सेवा करना शुरू कर दिया। अतः हमारा भविष्य भी हमारे हाथ में ही होता है। अपने भविष्य का फैसला व्यक्ति स्वयं कर सकता है।

- अंजु अग्निहोत्री

शॉर्ट रीड **20** पेड़ों और 7000 गैलन पानी को बचाया जा सकता है अगर एक टन कागज को रिसाइकल किया जाए तो।

आइसीसी टी-20 विश्व कप : ग्रुप-सी के मुकाबले में युगांडा को 125 रन से दी करारी शिकस्त, दोनों टीमों के बीच पहली बार टी-20 मुकाबला खेला गया था

फारूकी के पंच से अफगानिस्तान ने दूसरी सबसे बड़ी जीत दर्ज की

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

प्रोविडेंस. मीडियम पेसर फजलहक फारूकी की घातक गेंदबाजी से अफगानिस्तान ने मंगलवार को टी-20 विश्व कप में युगांडा को 125 रन से शिकस्त दी। अफगानिस्तान ने पांच विकेट पर 183 रन बनाए। इसके बाद अफगान गेंदबाजों ने युगांडा को 16 ओवर में 58 रन पर ढेर कर दिया। यह विश्व कप में किसी टीम का चौथा न्यूनतम स्कोर है। वहीं, अफगानिस्तान की टीम ने विश्व कप में रनों के लिहाज से दूसरी सबसे बड़ी जीत दर्ज की है। इससे पहले, अफगान टीम ने 2021 टी-20 विश्व कप में स्कॉटलैंड को 130 रन से शिकस्त दी थी।

युगांडा के खिलाफ विकेट हासिल करने के बाद साथी संग खुशी मनाते हुए फारूकी।

08 वीं जीत विश्व कप इतिहास में कुल अफगानिस्तान ने हासिल की, 23 मुकाबलों में से

टी-20 विश्व कप के इतिहास में अब तक का न्यूनतम स्कोर

रन	टीम	विपक्षी टीम	साल
39	नीदरलैंड्स	श्रीलंका	2014
44	नीदरलैंड्स	श्रीलंका	2021
55	वेस्टइंडीज	इंग्लैंड	2021
58	युगांडा	अफगानिस्तान	2024

प्लेयर ऑफ द मैच

फारूकी ने पहली बार पांच विकेट चटकाए

लक्ष्य का बचाव करने उतरी अफगानिस्तान के लिए लेफ्ट आर्म मीडियम पेसर फजलहक फारूकी ने करियर की सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी की। प्लेयर ऑफ द मैच बने फारूकी ने चार ओवर में सिर्फ नौ रन देकर पांच विकेट चटकाए। इसके साथ ही उन्होंने टी-20 में पहली बार एक मैच में पांच विकेट हासिल किए। वहीं, नवीन उल हक और स्पिनर राशिद खान ने दो-दो विकेट झटके। अफगानिस्तान का अगला मुकाबला अब आठ जून को न्यूजीलैंड से होगा। वहीं, युगांडा की टीम 06 जून को पापुआ न्यू गिनी से भिड़ेगी, जो पहला मैच हारी थी।

दो बल्लेबाज ही दोहरे अंक के पार युगांडा की बल्लेबाजी काफी निराशाजनक रही और सिर्फ दो बल्लेबाज ही दोहरे अंक तक पहुंच सके। रियाजत अली शाह ने 34 गेंदों में 11 और रोबिंसन ओव्यो ने 25 गेंदों में 14 रन बनाए। दिलचस्प यह है कि दोनों टीमों के बीच यह अभी तक का पहला टी-20 मुकाबला था।

विश्व कप टी-20 : स्कॉटिश टीम ने टॉस जीता था

स्कॉटलैंड और इंग्लैंड के मैच में बारिश ने डाली बाधा

टॉस के दौरान स्कॉटलैंड के कप्तान रिची और इंग्लैंड के जोस बटलर।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

ब्रिजटाउन. मौजूदा चैंपियन इंग्लैंड के खिलाफ मंगलवार रात खेले गए आइसीसी टी-20 विश्व कप के मुकाबले में स्कॉटलैंड ने टॉस जीता और पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। ग्रुप-बी के मुकाबले में टॉस जीतने के बाद स्कॉटलैंड के कप्तान रिची बेरिंगटन ने कहा कि हम यहां बेहद उम्मीदों के साथ आए हैं और हमारी नजरें अच्छे प्रदर्शन से उलटफेर करने पर हैं।

6.2 ओवर में स्कॉटलैंड ने ठोक दिए 51 रन : स्कॉटलैंड की टीम का स्कोर जब 6.2 ओवर में बिना विकेट गंवाए 51 रन था, तब बारिश आने के कारण मैच रोकना पड़ा। समाचार लिखे जाने तक मैच शुरू नहीं हो सका था। इससे पहले, स्कॉटलैंड के ओपनर माइकल जोंस और जॉर्ज मुंसे ने टीम को आतिशी शुरुआत दिलाई। माइकल जोंस 20 गेंदों में तीन चौकें और एक छक्के के साथ 30 रन जबकि जॉर्ज मुंसे 19 गेंदों में तीन चौकों के साथ 18 रन बनाकर क्रीज पर डटे हुए थे।

नॉर्वे चेस टूर्नामेंट : भारतीय खिलाड़ी की चौथी जीत

दबदबा : प्रग्गनानंदा ने विश्व चैंपियन चीन के डिंग लिरेन को भी दी शिकस्त

सातवें दौर की बाजी के दौरान भारत के प्रग्गनानंदा और डिंग लिरेन।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

स्टेवेंगर (नॉर्वे). भारत के युवा खिलाड़ी आर प्रग्गनानंदा ने नॉर्वे चेस टूर्नामेंट में सोमवार रात एक और बड़ा उलटफेर किया। 19 वर्षीय भारतीय खिलाड़ी ने नंबर एक मैग्नस कार्लसन और नंबर दो फाबियानो कारुआना को हारने के बाद अब विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को शिकस्त दी है।

सातवें राउंड की बाजी में प्रग्गनानंदा और चीन के डिंग लिरेन के बीच क्लासिकल बाजी बराबर रहने के बाद सडन डैथ (आर्मगेडन गेम) में हुआ, जिसमें भारतीय खिलाड़ी ने जीत दर्ज की। प्रग्गनानंदा ने कुल सात में से चार बाजियां जीती हैं और तीन हारी हैं।

तालिका में तीसरे स्थान पर कायम

सात दौर के बाद प्रग्गनानंदा 11 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर हैं। वह आठवें दौर में एकबार फिर नॉर्वे के खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन से भिड़ेंगे, जो 13 अंकों के साथ तालिका में शीर्ष पर हैं। वहीं, 12 अंकों संग नाकामुरा दूसरे नंबर पर हैं।

महिलाओं में वैशाली की लगातार दूसरी हार: महिला वर्ग में आर वैशाली को लगातार दूसरी बाजी में हार मिली। उन्हें सातवें दौर में हमवतन कोनेरू हंपी ने हराया। हालांकि वैशाली अभी भी 11 अंकों संग तालिका में शीर्ष पर हैं।

वर्ल्ड चैंपियनशिप : कंगारू टीम में ब्रेट ली समेत कई पूर्व दिग्गज खेलेंगे

मेलबर्न@ पत्रिका. इंग्लैंड में तीन जुलाई से शुरू होने वाली वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स क्रिकेट के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम घोषित कर दी गई। इसमें पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट ली, आरोन फिंच और शॉन मार्श के अलावा कई दिग्गज कंगारू खिलाड़ी खेलते हुए नजर आएंगे। टूर्नामेंट के मैच इंग्लैंड के एजबेस्टन ग्राउंड पर खेले जाएंगे और फाइनल 13 जुलाई को होगा।

ब्रेट ली

छह टीमें: भारत, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, पाकिस्तान, वेस्टइंडीज व द. अफ्रीका की टीमें भाग लेंगी।

आज का मुकाबला : भारतीय टीम टी-20 विश्व कप में आज करेगी आगाज

आयरलैंड के खिलाफ भारतीय टीम का 7-0 से अजेय रेकॉर्ड

प्रसारण : रात 8.00 बजे से

आमने-सामने

07 मैच भारतीय टीम ने कुल ***आयरलैंड से खेले और सभी जीते***

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

न्यूयॉर्क. भारतीय टीम बुधवार को आइसीसी टी-20 विश्व कप में अपने अभियान का आगाज आयरलैंड के खिलाफ करेगी। ग्रुप-ए का यह मुकाबला नासाउ काउंटी क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा।

यदि रेकॉर्ड पर नजर डाली जाए तो भारतीय टीम का पलड़ा काफी भारी है। अब तक टीम इंडिया ने आयरलैंड के खिलाफ कुल सात मुकाबले खेले हैं और सभी में जीत हासिल की है। वहीं, आयरलैंड की कोशिश अच्छा प्रदर्शन करके टीम इंडिया के खिलाफ पलटवार करने व पहली जीत हासिल करने पर होगी।

ड्रॉप इन पिच पर संभलकर रहना होगा

विश्व कप के लिए बनाए गए नए नासाउ क्रिकेट स्टेडियम में ड्रॉप इन पिच बिछाई गई हैं। इस मैदान पर सोमवार को श्रीलंका और दक्षिण अफ्रीका के बीच मुकाबला खेला गया था, जिसमें दोनों टीमों के बल्लेबाजों के रन बनाने में परेशानी हुई थी। श्रीलंकाई टीम सिर्फ 77 रन पर सिमट गई थी, जबकि द. अफ्रीका ने भी 16.2 ओवर में लक्ष्य हासिल करते हुए चार विकेट गंवा दिए थे।

रन बनाना आसान नहीं: इन पिचों पर रन बनाना आसान नहीं है क्योंकि असमान उछाल होने के कारण बल्लेबाजों के लिए शॉट खेलना मुश्किल हो जाता है। खासतौर तेज गेंदबाजों का खौफ रहा है। ऐसे में भारतीय बल्लेबाजों को यहां संभलकर खेलना होगा।

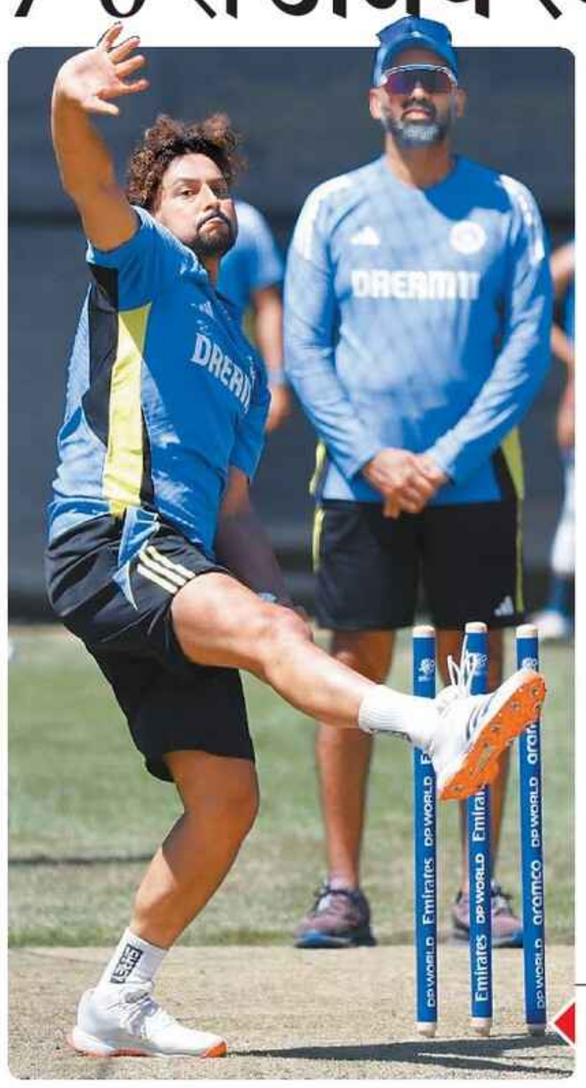

शीर्षक्रम बल्लेबाजों पर रहेगा दारोमदार

1 ***रोहित-जायसवाल करेंगे ओपनिंग:*** कप्तान रोहित शर्मा की खराब फॉर्म के कारण कई दिग्गजों का मानना है कि यशस्वी जायसवाल के साथ विराट कोहली को पारी की शुरुआत करनी चाहिए। लेकिन सूत्रों के मुताबिक पारी की शुरुआत रोहित शर्मा और जायसवाल ही करेंगे जबकि विराट तीसरे नंबर पर उतरेंगे।

2 ***नंबर चार पर सशंय कायम:*** वार्मअप मैच में ऋषभ पंत ने तीसरे नंबर पर अर्धशतक लगाया था, लेकिन विराट के कारण उनके नंबर को लेकर संशय कायम है। चौथे और पांचवें नंबर पर पंत और सूर्यकुमार यादव में कौन खेलेगा, यह देखना होगा।

3 ***शिवम और हार्दिक पर दांव:*** भारतीय टीम प्रबंधन मीडियम पेसर ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या के अलावा शिवम दुबे को भी अंतिम एकादश में जगह दे सकता है।

4 ***दो स्पिनर उतरेंगे:*** टीम दो स्पिनर रवींद्र जडेजा और कुलदीप यादव संग जबकि दो मुख्य पेसर जसप्रीत बुमराह और अर्शदीप सिंह के साथ उतर सकती है।

भारतीय टीम के स्पिनर कुलदीप यादव नासाउ क्रिकेट स्टेडियम में अभ्यास सत्र के दौरान।

कोच पद के लिए आवेदन नहीं करूंगा : द्रविड़

न्यूयॉर्क @ पत्रिका. राहुल द्रविड़ टी-20 विश्व कप के बाद भारतीय टीम के मुख्य कोच नहीं रहेंगे। द्रविड़ ने मंगलवार को साफ कर दिया कि वह टीम इंडिया के अगले मुख्य कोच पद के लिए आवेदन नहीं करेंगे। द्रविड़ ने कहा, दुर्भाग्य से जिस तरह का व्यस्त कार्यक्रम भारतीय टीम का है और मैं जिंदगी के जिस मोड़ पर खड़ा हूं, ऐसे में मुझे नहीं लगता कि मैं कोच पद के लिए आवेदन करूंगा। इससे साफ हो गया कि अगले महीने जुलाई में भारतीय टीम को नया कोच मिलेगा।

CROSSWORD 7005...

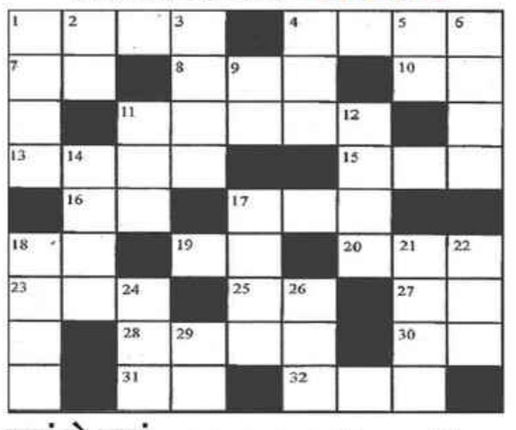

बाएं से दाएं... 1. अनुसार, अनुरूप (4), 4. गलती से, भूलवश (4), 7. भूल, अपराध, त्रुटि (2), 8. गंध, खुशबू (3), 10. मृत्यु का देवता (2), 11. डरावना, खौफनाक (5), 13. मार्गदर्शक, राह दिखाने वाला (4), 15. बर्दाश्त, आंगन (3), 16. धन, संपत्ति (2), 17. ठप्पा, छाप, मुद्रा (3), 18. पंख, डैना (2), 19. संदेह (2), 20. इमली (3), 23. आशंका, खटका, डर (3), 25. प्राण, सांस, जान (2), 27. आने वाला व बीता हुआ दिन (2), 28. लज्जित होना (4), 30. पेड़ का शाखा रहित भाग (2), 31. झुका हुआ, विनीत (2), 32. दुर्लभ, दुष्प्राप्य (3)

ऊपर से नीचे... 1. जासूस, गुप्तचर, खबर देने वाला (4), 2. गर्म, उष्ण (2), 3. अधिक छोटा, अल्पतर (4), 4. करने योग्य होना (3), 5. आयु, उम्र (2), 6. लवणीय (4), 9. प्रत्येक, शिव (2), 11. समाचार (3), 12. वर्जिश, व्यायाम (4), 14. महाशय, महोदय (4), 17. अभियोग, वाद, दावा (4), 18. पाक्षिक, पंद्रह दिन का समय (4), 21. पाठशाला (4), 22. घुलना-मिलना (3), 24. खाद्य सामग्री (3), 26. राजी करना (3), 29. लीन, तन्मय (2)

हल 7004

उ	प	भो	क्ता	■	ल	ग	भ	ग
क	लं	गी	■	आ	ल	ग	■	फ
सा	ग	■	अ	ल	का	■	बा	ल
ना	■	अ	व	स	र	■	ग	त
■	त	ब	का	■	■	ह	वा	■
वी	र	■	श	म	न	■	न	भ
■	फ	क	■	है	या	त	■	ग
स	दा	श	य	ता	■	ब	ल	वा
भा	री	■	म	री	ज	■	त	न

SUDOKU 6740...

		7			3		6	
	4		5	7				
		3	4				5	
	6							
		9		2				
					6	2	1	9
						9	8	5
6								
		2	3		9			1

हल 6739

4	8	2	1	6	5	7	9	3
9	6	1	7	3	8	4	5	2
3	5	7	2	9	4	6	8	1
1	9	5	8	2	6	3	4	7
8	7	3	4	5	1	2	6	9
6	2	4	9	7	3	5	1	8
7	3	6	5	8	9	1	2	4
2	4	8	6	1	7	9	3	5
5	1	9	3	4	2	8	7	6

कैसे खेलें: वर्ग को 1 से 9 तक अंकों से ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ ही 3 गुणा 3 के बॉक्स में 1 से 9 तक अंक आएं। कोई अंक दुबारा नहीं आए।

आज का पोल

क्या आयरलैंड की टीम विश्व कप में भारत को शिकस्त दे सकती है?

YES NO

हमारे ट्विटर/फेसबुक पेज पर जाएं और विस्तार से अपनी राय रखें। @PatrikaNews

मंगलवार का जवाब

हां **89%** नहीं **11%**

पिछला सवाल: क्या इंग्लैंड, की टीम टी-20 विश्व कप में स्कॉटलैंड के खिलाफ अपनी फुल स्ट्रैंथ मैदान में उतारेगा?

इंडोनेशिया बैडमिंटन : युवा भारतीय खिलाड़ी ने जापान के सुनेयामा को हराया

लक्ष्य सेन की आसान जीत, जॉर्ज को शिकस्त

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जकार्ता. भारत के युवा शटलर लक्ष्य सेन ने मंगलवार को यहां खेले जा रहे इंडोनेशियाई ओपन के दूसरे दौर में आसानी से जगह बना ली है।

लक्ष्य सेन ने पुरुष एकल के राउंड-32 में जापानी खिलाड़ी कांता सुनेयामा को सिर्फ 40 मिनट में 21-12, 21-17 से शिकस्त दी। लक्ष्य अब सातवीं वरीय इंडोनेशिया के एंथोनी सिनिसुका गिंटिंग और जापान के केंटा निशिमोतो के बीच होने वाले मैच के विजेता से भिड़ेंगे।

लक्ष्य सेन, भारत।

किरेन को कड़े संघर्ष में मात : पुरुष एकल के पहले दौर में किरेन जॉर्ज को चीन के खिलाड़ी होंग येंग वेंग के खिलाफ 21-11, 12-21, 20-22 से हार मिली।

युगल में मिली जीत : भारतीय मिक्स्ड युगल जोड़ी सिक्की रेड्डी और बी सुमीथ रेड्डी ने पहले दौर में अमरीका के विंसन चियू और जैनी को कड़े मुकाबले में 12-21, 21-16, 21-17 से मात दी।

टेनिस : 44 वर्षीय खिलाड़ी ने एआइटीए को लिखा पत्र

पेरिस ओलंपिक में बालाजी के साथ जोड़ी बनाकर उतरेंगे रोहन बोपन्ना

नई दिल्ली (नॉर्वे) @ पत्रिका. भारत के अनुभवी टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना इस साल 26 जुलाई से शुरू होने वाले पेरिस ओलंपिक खेलों में एन श्रीराम बालाजी के साथ जोड़ी बनाकर उतरेंगे।

44 वर्षीय बोपन्ना ऑल इंडिया टेनिस एसोसिएशन (एआइटीए) को पत्र लिखकर इस बारे में सूचित कर दिया है। माना जा रहा है कि आइटीए बोपन्ना की बात नहीं टालेगी और बालाजी के नाम को मंजूरी दे देगी।

खेल से प्रभावित : बोपन्ना फ्रेंच ओपन में बालाजी के खेल से प्रभावित दिखे। बोपन्ना और एब्डेन की जोड़ी ने तीसरे दौर में बालाजी और मार्टिनेज को शिकस्त दी थी।

फ्रेंच ओपन टेनिस // दोनों खिलाड़ियों ने आसान जीत के साथ महिला एकल के अंतिम चार में किया प्रवेश, पुरुष एकल में दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी नोवाक जोकोविच अंतिम आठ में

रौंलां गैरो के सेमीफाइनल में चैंपियन स्विटेक कभी नहीं हारीं, अब गॉफ चुनौती देने को तैयार

इगा स्विटेक

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

पेरिस. मौजूदा चैंपियन और टॉप सीड इगा स्विटेक ने खेले जा रहे फ्रेंच ओपन के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। अब फाइनल में जगह बनाने के लिए स्विटेक का सामना अमरीका की 20 वर्षीय कोको गॉफ से होगी। खास यह है कि रौंलां गैरो पर स्विटेक का अंतिम चार में अजेय रेकॉर्ड है। स्विटेक ने महिला एकल के अंतमि आठ में दमदार प्रदर्शन करते हुए चेक गणराज्य की पांचवीं वरीय खिलाड़ी मार्केटा वोंड्रोसोवा को बेहद आसानी से 6-0, 6-2 से शिकस्त दे दी।

अमरीकी खिलाड़ी का दमदार रहा प्रदर्शन: इससे पहले, गॉफ ने अंतिम आठ में ट्यूनीशिया की आठवीं वरीय खिलाड़ी ओंस जेब्यिर को 6-4, 6-4 से हराया। टूर्नामेंट में तीसरी वरीय गॉफ ने लगातार तीसरी बार किसी ग्रैंड स्लेम के अंतिम चार में जगह पक्की की है। वह इस साल ऑस्ट्रेलियन ओपन और पिछले साल यूएस ओपन के सेमीफाइनल में पहुंची थीं।

कोको गॉफ

कोको के खिलाफ 7वीं जीत पर नजर

- **स्विटेक** ने कोको गॉफ के खिलाफ कुल छह मैच खेले हैं और सभी में जीत हासिल की है। इस दौरान उन्होंने हार्ड कोर्ट पर चार और क्ले कोर्ट पर दो मैच जीते।
- स्विटेक फ्रेंच ओपन के सेमीफाइनल में कभी हारी नहीं हैं। 3 बार यहां चैंपियन बनने वाली स्विटेक की नजरें खिताबी हैट्रिक पर है।

रेकॉर्ड: जोकोविच सर्वाधिक 370 ग्रैंड स्लेम मैच जीतने वाले खिलाड़ी बने

चौथे राउंड का मैच जीतने के बाद खुशी मनाते जोकोविच।

अब रुड से भिड़ंत : जोकोविच का सामना अंतिम आठ मुकाबले में अब नॉर्वे के सातवीं वरीय खिलाड़ी कैस्पर रुड से होगा।

टॉप सीड नोवाक जोकोविच ने फ्रेंच ओपन के क्वार्टरफाइनल में प्रवेश करने के साथ ही नया रेकॉर्ड अपने नाम कर लिया। जोकोविच सर्वाधिक 370 ग्रैंड स्लेम मैच जीतने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने स्विट्जलैंड के पूर्व खिलाड़ी रोजर फेडरर का रेकॉर्ड तोड़ा। इससे पहले, जोकोविच ने चौथे राउंड में अर्जेंटीना के खिलाड़ी फ्रांसिस्को सेरुंडोलो को 6-1, 5-7, 3-6, 7-5, 6-3 से हराया।

इनके नाम सर्वाधिक जीत

खिलाड़ी	देश	जीत	जीत%
जोकोविच	सर्बिया	370	89.76
रोजर फेडरर	स्विट्जरलैंड	369	89.24
राफेल नडाल	स्पेन	314	88.31

परिणाम : 11 राजस्थानी विद्यार्थियों को रैंक-1

नीट इतिहास में पहली बार 67 विद्यार्थियों ने हासिल किया परफेक्ट स्कोर

कोटा @ पत्रिका. नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने मेडिकल प्रवेश परीक्षा नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट यूजी-2024) का परीक्षा परिणाम मंगलवार को घोषित कर दिया। नीट के इतिहास में पहली बार देशभर से 67 स्टूडेंट्स ने 720 में से 720 अंक हासिल कर परफेक्ट स्कोर प्राप्त किया हैं। सभी स्टूडेंट्स को ऑल इंडिया-1 रैंक जारी की गई हैं। सूची में 67 में से 11 विद्यार्थी राजस्थान से हैं। सौ फीसदी अंक लाने वालों में 16 प्रतिशत विद्यार्थी राजस्थान के हैं। इसमें कोटा कोचिंग का बड़ा योगदान रहा।

नीट 5 मई को हुई थी। इसमें 23 लाख से ज्यादा अभ्यर्थी शामिल हुए थे। इसमें 10 लाख छात्र और 13 लाख छात्राएं थी। एजुकेशन एक्सपर्ट देव शर्मा ने बताया कि राज्यवार नीट यूजी प्रवेश परीक्षा के सफलता पैटर्न में कोई परिवर्तन नहीं आया हैं। वर्ष 2024 में भी पिछले साल का इतिहास दोहराया गया हैं। वर्ष 2024 में भी राजस्थान राज्य तीसरे स्थान पर हैं। प्रथम स्थान पर उत्तर प्रदेश, द्वितीय स्थान पर महाराष्ट्र हैं। उत्तर प्रदेश से 1.65 लाख विद्यार्थियों ने, महाराष्ट्र से 1.42 लाख, राजस्थान से 1.21 लाख विद्यार्थियों ने क्वालीफाई किया हैं।

राजस्थान से 4 छात्राओं ने प्राप्त किया परफेक्ट स्कोर

राजस्थान से 4 छात्राओं ने परफेक्ट स्कोर 720 में से 720 अंक प्राप्त किए। राजस्थान से प्राचिता, ईशा कोठारी, ईरम काजी, जाह्नवी ने परफेक्ट स्कोर हासिल किया। राजस्थान से 7 छात्र सौरव, आदर्श सिंह, शशांक, श्याम, ध्रुव गर्ग, देवेश जोशी तथा समित कुमार ने परफेक्ट स्कोर प्राप्त किया।

इससे पहले केवल 7 अभ्यर्थी पहुंचे परफेक्ट स्कोर पर

नीट यूजी के इतिहास में यह एक रिकॉर्ड बना है, जिसमें इतनी बड़ी संख्या में कैंडिडेट परफेक्ट स्कोर बना पाए हैं। पिछले 4 साल में से 3 बार (2020, 2021 और 2023) में परफेक्ट स्कोर बना है। साल 2022 में परफेक्ट स्कोर नहीं बना था। बीते चार सालों में महज 7 कैंडिडेट अब तक परफेक्ट स्कोर बना पाए हैं।

जलवायु परिवर्तन : अब भी नहीं संभले तो तापमान 5 डिग्री बढ़ने की आशंका

यूएन की चेतावनी, 2.7 डिग्री तक बढ़ सकता है दुनिया का तापमान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बॉन. संयुक्त राष्ट्र की जलवायु पैनल ने चेतावनी दी हैं कि दुनिया का तापमान 2.7 डिग्री सेल्सियस वृद्धि की ओर बढ़ रहा हैं और इस बढ़ोतरी को पेरिस जलवायु समझौते के अनुसार वांछित 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने का रास्ता बहुत कठिन हैं। पैनल ने कहा हैं कि संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय सहयोग के बिना हम 5 डिग्री तक वैश्विक तापमान बढ़ोतरी की ओर बढ़ रहे होंगे, जिससे अधिकांश मानवता के समाप्त होने की आशंका की खतरा पैदा हो जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र की जलवायु पैनल के प्रमुख साइमन स्टील ने मंगलवार को जर्मनी के बॉन में आयोजित जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में अपने उद्घाटन भाषण में चेतावनी देते हुए कहा कि, अगर मौजूदा हालातों में बदलाव नहीं हुआ तो हम लगभग 2.7 डिग्री तापमान बढ़ोतरी की ओर बढ़ रहे हैं और यह स्थिति आधी दुनिया के लिए बेहद विनाशकारी हैं। स्टील ने कहा कि फिलहाल, इस सदी में दुनिया का तापमान 1.5 डिग्री से कम बढ़ने से रोकने की चुनौती बेहद कठिन ओर इसके लिए राह लंबी हैं, लेकिन हमें इस बात से उत्साहित होना चाहिए कि हम आधा रास्ता पार कर चुके हैं। पर हम अभी शांत होकर कतई बैठ नहीं सकते।

भारत : 60 करोड़ लोगों पर खतरा

यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सेटर के ग्लोबल सिस्टम्स इंस्टीट्यूट और नानजिंग यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने भी इसके पूर्व पिछले सप्ताह ही यह दावा किया गया था कि इस सदी के अंत तक पृथ्वी के तापमान में 2.7 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। शोधकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि, ऐसा होने पर भारत में लगभग 60 करोड़ लोग असहनीय गर्मी की चपेट में होंगे। यह अध्ययन ऐसे समय में आया है जबकि भारत में हीटस्ट्रोक से लोगों के मरने की खबरें लगातार सुर्खियां बन रही हैं और एक अनुमान के अनुसार भारत में 1 मार्च से 6 जून के बीच करीब 120 से ज्यादा लोगों की मौत हीट स्ट्रोक से हुई है और करीब 30000 लोग हीट स्ट्रोक का शिकार हुए हैं।

विकासशील देशों के लिए धन जुटाने का लक्ष्य होगा तय

3 से 13 जून तक बॉन में होने वाली जलवायु बैठक को वार्षिक जलवायु शिखर सम्मेलन की तैयारी बैठक के रूप में जाना जाता है। इस बैठक का लक्ष्य विकासशील देशों में तत्काल जलवायु एक्शन के लिए जरूरी धन जुटाने का लक्ष्य तय करना है। फिलहाल यह लक्ष्य प्रति वर्ष 100 बिलियन डॉलर जुटाना है।

जून से अगस्त के बीच ला नीना की वापसी के 50% आसार

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने कहा है कि जून से अगस्त 2024 के दौरान तटस्थ स्थितियों या फिर ला नीना के 50 फीसदी लौटने के आसार हैं। जुलाई से सितंबर के दौरान ला नीना की स्थिति का अनुमान 60 फीसदी और अगस्त-नवंबर के दौरान 70 फीसदी तक है। इस दौरान अलनीनो के फिर से विकसित होने के आसार न के बराबर हैं। गौरतलब है कि 2023 में अलनीनो के चलते दुनिया भर चरम मौसम स्थितियां देखने को मिलीं।

गोवा : जलमग्न सड़कों से गुजरते वाहन

पणजी. गोवा की राजधानी पणजी में मंगलवार को भारी बारिश के बाद यहां सड़कों पर पानी भर गया। जलमग्न सड़क पर वाहन चलते हुए। मौसम विभाग ने यहां तूफान के साथ बारिश का अलर्ट जारी किया था।

अग्निवीर : सेना में शामिल होने की खुशी

पटना. मंगलवार को पटना के दानापुर स्थित बिहार रेजीमेंट छावनी के गौर ड्रिल ग्राउंड में पासिंग आउट परेड आयोजित की गई। इसके बाद सेना में शामिल होने की खुशी मनाता अग्निवीरों का तीसरा बैच।

दावा : गामिनी के पास मृत मिला शावक

हाईटेक निगरानी में शावक की मौत, कैसे हुई पता नहीं

भोपाल @ पत्रिका. मध्यप्रदेश के कूनो नेशनल पार्क में चीता शावक की मौत ने फिर भारत में चीता प्रबंधन की हाईटेक निगरानी पर सवाल खड़े किए हैं। प्रबंधन ने मौत की पुष्टि मंगलवार की हैं। जिस शावक की मौत हुई उसे 10 मार्च को मादा चीता गामिनी ने जन्म दिया था। मौत की प्राथमिक वजह गर्मी बताई जा रही है, लेकिन प्रबंधन इसकी पुष्टि नहीं कर रहा है और न ही मौत की वजह बता पाया हैं। डीएफओ आर थिरुकुराल का कहना हैं कि बुधवार को पोस्टमार्टम के बाद वजह चलेगी। अब कूनो में 13 शावक और 13 वयस्क चीते हैं।

पहले टूटी थी शावक के पैर की हड्डी

इसके पहले दिसंबर 2023 में कूनो के अंदर अचानक एक अन्य शावक के पैर की हड्डी टूटने का प्रकरण आया था। तब भी प्रबंधन ने गोलमोल जवाब दिया था। जिसके बाद पैर टूटने की साफ वजह सामने नहीं आई थी।

मालदीव कर रहा भारतीय हेलिकॉप्टरों का उपयोग

माले @ पत्रिका. भारत के मालदीव से अपने सैनिकों को वापस बुलाने के कुछ सप्ताह बाद भी भारत की ओर से मालदीव को उपहार में दिए गए दो हेलिकॉप्टरों का नियमित रूप से संचालन किया जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार हेलिकॉप्टर उड़ाए जाने पर मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल (एमएनडीएफ) का एक सैनिक उन पर मौजूद रहता हैं। चीन समर्थक राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने मालदीव में तैनात सभी भारतीय सैन्यकर्मियों को वापस भेज दिया था।

महाराष्ट्र : खेत में बिखरे विमान के हिस्से, पायलट सुरक्षित

वायुसेना का लड़ाकू विमान दुर्घटनाग्रस्त

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मुंबई. महाराष्ट्र के नासिक जिले में मंगलवार को वायुसेना का सुखोई लड़ाकू विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, लेकिन पायलट व सह पायलट सुरक्षित बाहर निकल गए। यह विमान शिरसागांव के पास एक खेत में तब दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जब उसे विंग कमांडर बोकिल उड़ा रहे थे। उनका साथ सेंकेंड इन कमांड विश्वास दे रहे थे। गिरने के बाद विमान में आग लग गई और उसके हिस्से 500 मीटर के दायरे में बिखर गए।

तकनीकी खराबी से हुई यह दुर्घटना: यह विमान निरीक्षण, मरम्मत व जांच कार्य के लिए एचएएल के पास था। उनके अनुसार परीक्षण के बाद उसे वायुसेना को सौंपा जाता है। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि दुर्घटना की सटीक वजह का अभी पता नहीं चला हैं लेकिन प्राथमिक सूचना तकनीकी कारणों की ओर संकेत करते हैं।

वापसी : 25 जून को उतरेगा रेगिस्तान क्षेत्र में

चांद से पत्थर व मिट्टी के नमूने लेकर चीन का अंतरिक्षयान रवाना

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीजिंग. चंद्रमा के सुदूर हिस्से से पत्थर व मिट्टी के नमूने लेकर चीन का अंतरिक्षयान चांग ई-6 चंद्र सतह से वापस पृथ्वी पर आने के लिए रवाना हो गया हैं। चीन राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रशासन ने कहा कि चांग ई-6 अंतरिक्षयान के 'एसेंडर' ने बीजिंग के समयानुसार मंगलवार सुबह उड़ान भरी और उसने चंद्रमा के पास पहले से निर्धारित कक्षा में प्रवेश किया। इस अंतरिक्षयान को मई के आखिरी में प्रक्षेपित किया गया था। इसका 'लैंडर' रविवार को चंद्रमा की एक सुदूर सतह पर उतरा।

कंटेनर में एकत्रित किए नमूने

अंतरिक्ष एजेंसी के हवाले से बताया गया, अंतरिक्षयान ने योजना के तहत यान के 'एसेंडर' के अंदर रखे एक कंटेनर में नमूने एकत्रित किए। इस कंटेनर को एक 'री-एंट्री कैप्सूल' में रखा जाएगा, जो 25 जून के आसपास चीन के आंतरिक मंगोलिया क्षेत्र के रेगिस्तान में पृथ्वी पर उतरेगा।

ट्रेंडिंग वीडियो

1. मोदी नहीं, अब नीतीश कुमार की बारी, इनसाइड स्टोरी

2. बाड़मेर में हार के बाद ये क्या बोल गए भाटी

youtube.com/@RajasthanPatrikaTV

राज्य के वायरल वीडियो, शॉर्ट्स क्यूआर कोड स्कैन कर देखें।

न्यूज शॉर्ट्स

बीकानेर

कक्षा पांच एवं आठ का रोका गया परिणाम जारी

बीकानेर @ पत्रिका. कक्षा पांचवीं एवं आठवीं का रोका गया परीक्षा परिणाम मंगलवार को जारी कर दिया गया। गत दिनों 13 हजार 88 विद्यार्थियों का परिणाम रोका गया था। इसमें पांचवीं के 9538 तथा कक्षा आठ के 3550 विद्यार्थी शामिल थे। सत्रांक न भेजने के कारण ऐसा हुआ था। इस वजह से 13 हजार 88 विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम रोका गया था।

जोधपुर

एसयूवी की टक्कर से बाइक सवार किशोर की मौत

जोधपुर @ पत्रिका. सूरसागर थानान्तर्गत चोपड़ से बालसमंदर रोड के बीच तेज रफ्तार एसयूवी कार की टक्कर से बाइक सवार एक किशोर की मौत हो गई। हादसे के बाद चालक बोलेरो भगा ले गया। पुलिस के अनुसार कालीबेरी में अम्बेडकर नगर निवासी नरेश (17) सुबह दस बजे परिचित की बाइक लेकर चोपड़ गया था, जहां से वो बाइक पर घर लौट रहा था। इस दौरान पीछे से तेज रफ्तार में बोलेरो ने बाइक को टक्कर मार दी। वहां से निकल रहे लोगों ने मथुरादास माथुर अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

इंडिया @ शॉर्ट रीड

दिल्ली ताज एक्सप्रेस में आग, यात्री सुरक्षित

नई दिल्ली @ पत्रिका. दिल्ली से झांसी जा रही ताज एक्सप्रेस के तीन डिब्बों में आग लग गई। हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ है। यात्री समय रहते प्रभावित डिब्बों से बाहर निकलने में सफल रहे। आग लगने के कारणों का तत्काल पता नहीं चला है। दमकल सेवा ने करीब दो घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। आग से ट्रेन के दो डिब्बे पूरी तरह जल गए हैं, जबकि तीसरे डिब्बे को आंशिक नुकसान हुआ है।

दिल्ली सिसोदिया की जमानत याचिका खारिज

नई दिल्ली @ पत्रिका. सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को आबकारी नीति घोटाले में गिरफ्तार आम आदमी पार्टी (आप) नेता मनीष सिसोदिया की जमानत याचिकाओं पर विचार करने से इनकार कर दिया। शीर्ष अदालत ने हालांकि कहा कि ईडी व सीबीआइ द्वारा दर्ज मामलों में क्रमश: अपनी अंतिम अभियोजन शिकायत और आरोप पत्र दाखिल किए जाने के बाद सिसोदिया जमानत के लिए अपनी याचिकाएं फिर से दायर कर सकते हैं।

अरुणाचल चींटी की नई प्रजाति मिली

नई दिल्ली @ पत्रिका. अरुणाचल प्रदेश की सियांग घाटी में चींटी की एक ऐसी प्रजाति की खोज की गई है जिसका रंग नीला है। एक अध्ययन के दौरान घाटी के एक पेड़ पर चींटी की यह प्रजाति दिखी। यिनकू के सुदूर इलाके में पेड़ पर 10 फुट ऊपर एक छेद की खोज के समय शोधकर्ताओं को अंधेरे में कुछ चमकता हुआ दिखाई दिया। शोधकर्ताओं के अनुसार ये चमकदार चींटियां थीं। इस नई प्रजाति का नाम पैरापैराट्रेचिना नीला है।

दिल्ली चार्जशीट पर अगले माह सुनवाई

नई दिल्ली @ पत्रिका. दिल्ली की एक अदालत आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन केस में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ दाखिल पूरक आरोपपत्र पर संज्ञान लेने के मुद्दे पर नौ जुलाई को आदेश पारित कर सकती है। विशेष जज कावेरी बावेजा को मंगलवार को आदेश पारित करना था, लेकिन उन्होंने इसे नौ जुलाई तक के लिए टाल दिया।

वर्ल्ड @ शॉर्ट रीड

रूस पीटर्सबर्ग में सम्मलेन, 136 देश होंगे शामिल

मास्को @ पत्रिका. रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में 5 से 8 जून तक सेंट पीटर्सबर्ग इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम सम्मेलन होने जा रहा है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इसे संबोधित करेंगे, जिसमें वे रूस और नाटो के बीच संभावित सीधी टक्कर को लेकर रूस की तैयारी और दुनिया को रूस का संदेश दे सकते हैं। सम्मलेन में लगभग 136 देशों के प्रतिनिधि शामिल होंगे, जो इस आयोजन को वैश्विक मंच बनाते हैं।

अमरीका लापता भारतीय छात्रा मिली

ह्यूस्टन @ पत्रिका. अमरीका के कैलिफोर्निया प्रांत में पिछले सप्ताह लापता हुई 23 साल की भारतीय छात्रा का पता लगा लिया गया है और वह सुरक्षित है। पुलिस ने बताया कि कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, सैन बर्नार्डिनो की छात्रा नितीशा कंडुला 28 मई को लॉस एंजिल्स में लापता हो गई थी। हालांकि, पुलिस ने यह नहीं बताया कि वह कैसे और कहां मिली। इस साल अमरीका में आठ भारतीय छात्रों की मौत हो चुकी है।

पाकिस्तान शरीफ 5 दिन की चीन यात्रा पर

इस्लामाबाद @ पत्रिका. पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ मंगलवार को चीन की पांच दिवसीय सरकारी यात्रा पर रवाना हुए। इस यात्रा का मकसद चीन के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाना और अरबों डॉलर के चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) के तहत सहयोग बढ़ाना है।

पर्यावरण दिवस विशेष : कोटा ने पेश की पर्यावरण संरक्षण की बड़ी मिसाल

कड़ी मेहनत से चट्टानों पर खिले फूल, जिद से बना ऑक्सीजोन

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

कोटा. विकास की धारा में बहने के परिणाम सबने देखें हैं। सीमेंट व कंक्रीट के जंगलों का लगातार विस्तार हो रहा है। इससे धरती का तापमान बढ़ रहा है। इस बार की गर्मी में लोगों ने इस बढ़े हुए तापमान को झेला और महसूस भी किया। ऐसे में कहीं सुकून मिल सकता है तो सिर्फ हरियाली की गोद ही है। हरियाली की ओर लौटना है तो जागरूकता से ही लौटा जा सकता है। इस मामले में शिक्षा नगरी कोटा काफी जागरूक है। इसी का नतीजा है कि यहां चट्टानों को चीर कर हरियाली विकसित की गई। कभी चट्टानों से आग बरसती थी, आज फूल खिल रहे हैं। हम बात कर रहे हैं आरएसी ग्राउंड की। आरएसी ग्राउंड को आरएसी जवानों ने कड़ी मेहनत से सींचा और हरे-भरे क्षेत्र में बदल दिया। इसी तरह राजस्थान पत्रिका कोटा की जिद ने आइएल कॉलोनी को ऑक्सीजोन बनाने के लिए सरकार को विवश कर दिया। झालावाड़ रोड व रावतभाटा रोड दो अलग-अलग क्षेत्रों में विकसित ऑक्सीजोन शहरवासियों को सुकून दे रहे हैं।

यहां 30 हैक्टेयर में गार्डन ऑफ जॉय: शहर में झालावाड़ रोड पर गार्डन ऑफ जॉय यानी आक्सीजोन है। राजस्थान पत्रिका की जिद ने सरकार को झुकाया और आज प्रदेश के श्रेष्ठ पार्कों में से एक पार्क बन गया। पहले यहां आइएल कॉलोनी थी। आइएल फैक्ट्री बंद होने के बाद कॉलोनी को खाली करवा लिया था। पत्रिका ने अभियान चलाकर सरकार को यहां ऑक्सीजोन बनाने पर विवश किया। अब यह ऑक्सीजोन शहरवासियों के साथ पर्यटन प्रेमियों को आकर्षित कर सुकून दे रहा है। पार्क के 85 फीसदी भाग में हरियाली है। पेड़ व पौधों की कुल संख्या डेढ़ लाख के करीब है।

आरएसी मैदान स्थित ऑक्सीजोन।

पेड़-पौधों से आच्छादित 500 बीघा क्षेत्र

रावतभाटा रोड पर करीब 500 बीघा क्षेत्र में आरएसी ग्राउंड है, जहां तत्कालीन अधिकारियों के दृढ़ निश्चय और जवानों की मेहनत ने दो लाख के करीब पौधे लगाकर ऑक्सीजोन बना डाला। अब ये पौधे पेड़ बनकर छांव दे रहे हैं। परिसर में 40 के करीब वाटिकाएं हैं, जिसमें आयुर्वेदिक, औषधीय, फल व छायादार पेड़ हैं। देखरेख करने वाले ग्राउंड के प्रभारी केसरमल व राजेन्द सिंह बताते हैं कि यहां पहले चट्टानें थीं, पौधारोपण करना मुश्किल था, लेकिन तत्कालीन डिप्टी कमांडेंट पवन जैन के मन में पर्यावरण के प्रति ऐसा प्रेम था कि उन्होंने इसे हरा-भरा करने का अभियान छेड़ दिया। जैन बताते हैं आज यहां कई दुर्लभ प्रजातियों की वनस्पति है, लुप्तप्राय पक्षियों का संरक्षण हो रहा है। वह मानते हैं कि मूल रूप से जवानों की मेहनत से मैदान में फूल खिल रहे हैं और वृंदावन, गोकुल, राम समेत अन्य वाटिकाएं हैं।

राजस्थान पत्रिका की अहम भूमिका

जैन बताते हैं कि इसमें जवानों की मेहनत के साथ राजस्थान पत्रिका का बड़ा योगदान रहा। जवानों की मेहनत को लाखों लोगों तक पहुंचाने में पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पत्रिका के माध्यम से हरयाळो राजस्थान अभियान के तहत किए गए पौधारोपण ने आरएसी टीम का उत्साह बढ़ाया। इससे काफी संस्थाएं आरएसी बटालियन से जुड़ीं और पौधारोपण में भागीदारी निभाई। हरियाली के साथ जॉगिंग ट्रेक, स्टोन ब्रिज, डक पाउंड, बोटिंग की नहर समेत अन्य पार्क के आकर्षण हैं। देशी पर्यटकों के साथ विदेशी पर्यटकों को भी यह आकर्षित कर रहा है।

ऐसे दिख रहे परिणाम

आरएसी ग्राउंड में बने ऑक्सीजोन का असर प्रदूषण को कम कर रहा है। पिछले दिनों जब अन्य क्षेत्रों में एक्यूआइ मापा गया तो शहर के अन्य क्षेत्रों में 351 से लेकर 473 के करीब पाया गया तो इधर 50 के करीब ही पाया गया। डिप्टी कमांडेट जोगेन्द्र सिंह भाटी बताते हैं कि हमारी पहली प्राथमिकता है कि शत-प्रतिशत पौधे पड़े बनें। भविष्य में भी पौधारोपण करेंगे।

बाइडन के बेटे पर मुकदमा शुरू, हो सकती है 25 साल की सजा

वॉशिंगटन @ पत्रिका. अमरीकी राष्ट्रपति जो बाइडन के बेटे हंटर बाइडन पर 2018 में रिवाल्वर की खरीद और उसके रखने से जुड़े तीन गंभीर आरोपों के मामले में डेलावेयर की अदालत में मंगलवार से आपराधिक मुकदमा शुरू हो गया है। दोषी पाए जाने पर उन्हें अधिकतम 25 साल जेल की सजा हो सकती है। इसके पूर्व जूरी के चयन के लिए प्रथम महिला और अपनी मां जिल बाइडन के साथ हंटर बाइडन डेलावेयर की संघीय अदालत पहुंचे। यह ट्रायल दो सप्ताह तक चलने की उम्मीद है। उन पर 2018 में कोल्ट कोबरा रिवाल्वर खरीदते समय भरे गए फार्म में गलत जानकारी देने के आरोप लगाए गए हैं। इस दौरान उन्होंने बताया था कि वह ड्रग नहीं लेते हैं। साथ ही उन्होंने अवैध रूप से 11 दिनों तक बंदूक अपने पास रखी थी। उन्होंने खुद को निर्दोष बताया है और तर्क दिया है कि न्याय विभाग द्वारा उन्हें गलत तरीके से निशाना बनाया जा रहा है।

लेबर पार्टी पर इजरायल को हथियार बिक्री रोकने का दबाव

तेल अवीव @ पत्रिका. इजरायल के गाजा पर हमले का विरोध जोर पकड़ता जा रहा है। ब्रिटेन की 100 से अधिक हस्तियों/कलाकारों ने लेबर नेता कीर स्टारमर से गाजा में इजरायल द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के खिलाफ खड़े होने का आग्रह किया है। इसके लिए इन हस्तियों ने स्टारमर को एक पत्र लिखा है।

आर्टिस्ट्स फॉर पैलेस्टिन यूके द्वारा भेजे गए एक पत्र में, स्टारमर से आग्रह किया गया कि यदि वह आम चुनाव जीतते हैं तो इजरायल को हथियारों की बिक्री को निलंबित करके मानव अधिकारों और अंतरराष्ट्रीय कानून के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करें। पत्र में लिखा गया है कि एक पूर्व मानवाधिकार वकील के रूप में आपके पास गाजा में युद्ध अपराधों में ब्रिटेन की मिलीभगत को समाप्त करके सार्थक बदलाव लाने और ब्रिटेन को फिलिस्तीनी लोगों के नरसंहार में भागीदार बनने से रोकने का अवसर है।

मनोहर थाना फकीर बस्ती का मामला : किराया मांगने को लेकर हुई थी कहासुनी

किराए को लेकर विवाद, चाकू से किए वार, दो की मौत

मनोहरथाना (कोटा) @ पत्रिका. झालावाड़ जिले के मनोहरथाना बस स्टैंड से अकलेरा रोड पर फकीर बस्ती में मंगलवार को मकान मलिक व किराएदार के बीच मकान खाली करने के बाद किराया मांगने को लेकर कहासुनी इतनी बढ़ गई कि दोनों ने एक-दूसरे पर चाकू से हमला कर दिया। हमले में दोनों की मौत हो गई। थाना प्रभारी अमरनाथ जोगी ने बताया कि किराया मांगने पर फकीर मोहल्ला निवासी मकान मालिक हबीब फकीर (50) व किराएदार जाहिद (35) की मौत हो गई। मृतक के परिजन ने बताया कि हबीब के मकान में जाहिद किराए से रहता था। एक सप्ताह पूर्व किराया को लेकर झगड़ा होने पर 5 दिन पूर्व जाहिद ने मकान खाली कर दिया था, लेकिन किराया नहीं दिया था। मंगलवार सुबह किराया मांगने की बात को लेकर बहस हुई और दोनों ने एक दूसरे पर चाकू से हमला कर दिया। दोनों को मनोहरथाना स्वास्थ्य केंद्र लाया गया जहां हबीब को मृत घोषित किया गया। घायल जाहिद को अस्पताल ले जाते समय रास्ते में मौत हो गई।

"स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राईवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशक गजराज भण्डारी द्वारा 2/3 आई एन एस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं राजस्थान पत्रिका प्रा. लि. भूखण्ड संख्या 68-69, फेज VII, सैक्टर-35, गुरुग्राम (हरियाणा) एवं मैसर्स विभा पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड, डी-160 बी, सैक्टर 7, गौतमबुद्ध नगर (यू.पी.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. डेलहिन/2005/15156, सम्पादक: भुवनेश जैन।
सम्पादकीय प्रभारी: सुरेश व्यास-पी.आर.बी. एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी"